व्यवस्था परिवर्तन से आत्मनिर्भर होता हिमाचल

गिरिराज

हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

साप्ताहिक

ISSN 2454-9738

डाक पंजीकरण संख्या
एच.पी./42/एस.एम.एल. 2024-2026
साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में

कृषि/ बागबानी/विकास - 5, आस्था/संस्कृति/ विविध 6/7, साहित्य -8, महिला/बाल जगत /स्वास्थ्य -9, पहाड़ी पृष्ठ-10

वर्ष 47 अंक 38 शिमला, 18 -24 जून, 2025 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 5.00 रुपये वार्षिक 250 रुपये आजीवन 2500 रुपये

कल्पा में राजीव गांधी खेल परिसर पर व्यय होंगे 30 करोड़ : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों किन्नौर विधानसभा क्षेत्र में 48.48 करोड़ की विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं के उद्घाटन एवं शिलान्यास किए। इनमें आठ करोड़ से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) रिकांगपिओ में ऑडिटोरियम का शिलान्यास, कल्पा में 29.88 करोड़ से बनने वाले राजीव गांधी खेल परिसर का शिलान्यास तथा 10.60 करोड़ से निर्मित यूथ हॉस्टल, कल्पा का उद्घाटन शामिल हैं। उन्होंने आईस स्केटिंग रिंक कल्पा में आयोजित कार्यक्रम में वन अधिकार अधिनियम, 2006 के तहत कल्पा ब्लॉक के 25 लाभार्थियों को भूमि पट्टे के मालिकाना हक के प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि वन अधिकार अधिनियम, 2006 के अंतर्गत प्रदेश में 460 लोगों को घर बनाने के लिए पट्टे दिए गए हैं। किन्नौर जिला के कल्पा ब्लॉक के 25 लोगों को भूमि पट्टे वितरित किए गए हैं।

▪ कल्पा ब्लॉक के 25 लाभार्थियों को भूमि पट्टे के मालिकाना हक प्रमाण-पत्र वितरित ▪ किन्नौर क्षेत्र में 48.48 करोड़ की परियोजनाओं के उद्घाटन एवं शिलान्यास

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार के अढ़ाई वर्ष के कार्यकाल के दौरान 75 साल में पहली बार शिपकी-ला को पर्यटकों के लिए खोला जा रहा है। अब पर्यटक केवल आधार कार्ड व ठेकन लेकर शिपकी-ला जा सकते हैं। इससे जहां किन्नौर की आर्थिकी को बल मिलेगा तो वहीं पर्यटक भी यहां पहुंच सकेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान प्रदेश सरकार ने अपनी पहली कैबिनेट में ही राज्य के 1 लाख 36 हजार कर्मचारियों के लिए ओपीएस बहाल करने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि ऊना बल्क ड्रग पार्क के लिए केंद्र 50 करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध करवा रहा था लेकिन प्रदेश हितों को ध्यान में रखते हुए हमने इसे वापिस करने का निर्णय लिया और अब राज्य सरकार अपने स्तर पर इस कार्य को करेगी। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदा के कारण प्रदेश को 10 हजार करोड़ का नुकसान हुआ लेकिन (शेष पृष्ठ 11 पर)

किन्नौर जिला के शिपकी-ला में सीमा पर्यटन गतिविधियों का शुभारंभ

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू किन्नौर जिला के शिपकी-ला में सरहद वन उद्यान का उद्घाटन करते हुए

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों किन्नौर जिला के सीमावर्ती क्षेत्र शिपकी-ला में सीमा पर्यटन गतिविधियों का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सीमा पर्यटन गतिविधियों के आरम्भ होने से पर्यटन के साथ-साथ स्थानीय लोगों की आर्थिकी भी सशक्त होगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने रक्षा मंत्रालय से सीमावर्ती क्षेत्र लेपचा, शिपकी-ला, गिऊ और रानी कंडा में पर्यटन गतिविधियों को अनुमति प्रदान करने का आग्रह किया था। स्वीकृति प्राप्त होने के उपरांत सीमा पर्यटन गतिविधियों का शुभारम्भ किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार कैलाश मानसरोवर यात्रा शिपकी-ला के रास्ते से शुरू करने का मामला केन्द्र सरकार के समक्ष उठाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह स्वयं प्रधानमंत्री से भेंट कर यह विषय उनके सामने प्रस्तुत करेंगे। शिपकी-ला से कैलाश मानसरोवर

कैलाश मानसरोवर यात्रा शिपकी-ला से शुरू करने का मामला केंद्र सरकार से उठाएंगे

यात्रा के लिए सबसे सुगम मार्ग उपलब्ध होगा। उन्होंने कहा कि वर्ष 2020 से भारत चीन व्यापार शिपकी-ला के माध्यम से बंद है। इस दर्रे के माध्यम से व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की असीम संभावनाएं हैं। इसे पुनः आरम्भ करने का मामला भी केन्द्र सरकार के समक्ष उठाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने केन्द्र से हिमाचल स्काउट बटालियन की स्थापना का आग्रह किया है, जिसमें राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों के लिए विशेष कोटा होगा। सीमावर्ती क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हवाई अड्डा स्थापित करने का मामला भी केन्द्र के समक्ष उठाया जाएगा। राज्य सरकार केन्द्र सरकार से सैन्य और अर्ध सैनिक बलों की इनर लाइन चेक पोस्ट को समाप्त करने का आग्रह करेगी, जिससे वर्तमान में पर्यटकों के लिए परमिट संबंधी बाधा उत्पन्न होती है। यात्रा को सरल और पर्यटकों के अनुभव को बेहतर बनाने पर (शेष पृष्ठ 11 पर)

शोंगटोंग-कड़छम जल विद्युत परियोजना का कार्य वर्ष 2026 तक पूर्ण करने के निर्देश

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों किन्नौर जिला की शोंगटोंग कड़छम जल विद्युत परियोजना का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने परियोजना के विद्युत गृह स्थल कड़छम तथा बैराज स्थल पोवारी का भी निरीक्षण किया। परियोजना के बैराज स्थल में चल रही विभिन्न निर्माण गतिविधियों की भी जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने शोंगटोंग कड़छम जल विद्युत परियोजना के इंजीनियरों व कामगारों के साथ परियोजना में चल रही निर्माण गतिविधियों को लेकर संवाद भी किया।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने 450 मैगावॉट क्षमता की इस पनबिजली परियोजना को समयबद्ध तरीके से नवम्बर, 2026 तक पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के क्रियाशील हो जाने से प्रदेश को सालाना लगभग एक हजार करोड़ रुपये की राजस्व प्राप्ति होगी। उन्होंने कहा कि यह परियोजना विगत 13 वर्ष से निर्माणाधीन है, लेकिन वर्तमान सरकार ने अपने कार्यकाल के दो वर्ष के दौरान इसके निर्माण कार्य में तेजी लाई है तथा इस परियोजना को तय समय अवधि में पूरा कर प्रदेश को समर्पित किया जाएगा।

हिमाचल प्रदेश को सालाना लगभग एक हजार करोड़ के राजस्व की होगी प्राप्ति

मुख्यमंत्री ने कहा कि पानी हिमाचल प्रदेश का बहता हुआ सोना है तथा हमारी सरकार इसका पूरा सदुयोग करेगी। वर्तमान सरकार, प्रदेश की इस अमूल्य संपदा को प्रदेश हित में समुचित दोहन सुनिश्चित बनाने की दिशा में ठोस कदम उठा रही है ताकि प्रदेश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार धौलासिद्ध, लुहरी व सुन्नी पन बिजली परियोजनाओं को अपने अधीन लेने के लिए कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं पर अब तक कुल कितनी राशि व्यय हो चुकी है जिसका मूल्यांकन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार अपनी शर्तों पर पनबिजली परियोजनाओं के निर्माण कार्यों को आगे बढ़ाएगी ताकि प्रदेश के हितों को सुरक्षित रखा जा सके। (शेष पृष्ठ 11 पर)

प्रदेश के दस जिलों में एफएचटीसी लगाने का 43 प्रतिशत कार्य पूर्ण

हिमाचल में लोगों को स्वच्छ एवं सुलभ पेयजल आपूर्ति की जा रही सुनिश्चित - ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू

स्वच्छ जल जीवन का आधार है। वर्तमान प्रदेश सरकार के कार्यकाल के अढ़ाई वर्षों में लोगों को घर-द्वार के निकट स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश सरकार प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। प्रदेश की पेयजल अधोसंरचना को सुदृढ़ करने के लिए महत्त्वाकांक्षी परियोजनाएं निर्मित की जा रही हैं। यह परियोजनाएं लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने में सहायक साबित हो रही हैं।

सरकार द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की सुविधा के लिए स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है। इस वित्त वर्ष के दौरान प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में लाहौल-स्पीति के लिए 27 करोड़ रुपये की लागत से 20 पेयजल आपूर्ति योजनाओं और किन्नौर जिला में 72 करोड़ रुपये की लागत से छः पेयजल आपूर्ति योजनाओं का काम शुरू किया जाएगा। इन पेयजल योजनाओं में एंटी फ्रीज पाइपों का प्रयोग किया जाएगा। इस वर्ष नादौन, भोरंज, अमलैहड़ और हरोली में चार पेयजल आपूर्ति योजनाओं और बद्दी में एक सीवरेज स्कीम का निर्माण कार्य पूरा किया जाएगा।

घर-द्वार के निकट जलापूर्ति सुनिश्चित करने के लिए न्यू डेवल्पमेंट बैंक (एनडीबी) द्वारा वित्तपोषित हिमाचल प्रदेश ग्रामीण पेयजल उन्नयन परियोजना के तहत प्रदेश सरकार 745 करोड़ रुपये की लागत से 8 जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में 20 हजार 663 घरों तक बेहतर पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। यह परियोजना एनडीबी और राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषित है, जिसमें राज्य सरकार 148 करोड़ रुपये व्यय करेगी। हिमाचल प्रदेश ग्रामीण पेयजल उन्नयन एवं आजीविका परियोजना के तहत लगभग 1 हजार 62 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से 10 जिलों की 2,471 बस्तियों में 79,282 घरेलू नल कनेक्शन (एफएचटीसी) लगाने का 43 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। (शेष पृष्ठ 11 पर)

आलू का समर्थन मूल्य शीघ्र घोषित करेगी सरकार

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने ने कहा है कि प्रदेश सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। ऊना ज़िला में लगभग 20 करोड़ रुपये की लागत आलू प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार शीघ्र ही आलू का समर्थन मूल्य घोषित करेगी, जिससे किसानों की आर्थिकी को बल मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने हिमाचल प्रदेश रिवाइटलाइजिंग रेनफेड एग्रीकल्चर नेटवर्क द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय बहु- हितधारक परामर्श सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने प्राकृतिक खेती के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए आगामी वर्ष अनेक नवीन योजनाएं कार्यान्वित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि असंतुलित भोजन से लोगों में पोषण से संबंधित समस्याओं में बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के उत्तरी-पूर्वी राज्यों के बाद हिमाचल प्रदेश में कैंसर के मामलों में सबसे अधिक बढ़ोतरी देखी जा रही है। खान-पान की आदतों में बदलाव भी इसका मुख्य कारण हो सकता है। इसका पता लगाने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश की 80 प्रतिशत आबादी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। कृषि हिमाचल की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में इसका लगभग 14 प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में मौसम में जिस प्रकार से प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिला है, वह कृषि के लिए चिंताजनक है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य में हरित ऊर्जा को बढ़ावा दे रही है और प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्राकृतिक खेती से उत्पादित फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित किया गया है। सरकार आने वाले समय में प्राकृतिक खेती उत्पादों के समर्थन मूल्य में और बढ़ोतरी करेगी तथा यह प्रक्रिया निरंतर जारी रहेगी। श्री सुक्खू ने कहा कि जलवायु सहनशील कृषि, दालें और (शेष पृष्ठ 11 पर)

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करना राज्य सरकार का ध्येय : मुख्यमंत्री

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन तथा हिमाचल प्रदेश पशु एवं कृषि सखी संघ के एक प्रतिनिधिमंडल ने गत दिनों शिमला में मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू से भेंट कर, अपनी विभिन्न मांगों से अवगत करवाया। मुख्यमंत्री ने उनकी मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया। मुख्यमंत्री ने उनसे संवाद करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के ध्येय से कार्य कर रही है। सरकार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों को मजबूत बनाने के लिए अनेक अभिनव (शेष पृष्ठ 11 पर)

कामगारों के बच्चों को मिला शिक्षा का उजाला

व्यक्तित्व विकास में शिक्षा का महत्त्व सर्वविदित है। प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के दूरदर्शी नेतृत्व में जहां शिक्षा के क्षेत्र में कई नवोन्मेषी पहल कर रही है, वहीं वंचित वर्गों तक शिक्षा की लौ जलाकर उन्हें मुख्यधारा में लाने के दृष्टिगत अनेक कल्याणकारी योजनाएं भी संचालित कर रही है। मेहनत-मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करने वाले कामगारों के बच्चों के जीवन में उच्च शिक्षा का उजाला लाने के लिए एक ऐसी ही योजना प्रदेश सरकार द्वारा हिमाचल प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड के माध्यम से संचालित की जा रही है। मंडी जिला में इस योजना के तहत कामगार बोर्ड में पंजीकृत कामगारों के 1254 बच्चों को लगभग 3.41 करोड़ रुपये की वित्तीय मदद प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त लाभार्थी के बच्चों को हॉस्टल में रहने पर हॉस्टल सुविधा योजना के तहत प्रतिवर्ष 20 हजार रुपये की वित्तीय मदद दी जाती है। शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता योजना का लाभ लेने वाली सरकाघाट क्षेत्र के गांव योह की निलिमा देवी ने बताया कि उनके पति मनोज कुमार लोगों के घरों में श्रमिक का कार्य तथा पंचायत में मनरेगा की दिहाड़ी लगा परिवार का पालन-पोषण करते हैं। सहेली से कामगार कल्याण बोर्ड की इस योजना बारे पता चला। पति का श्रमिक कार्ड बना है। बेटियों की पढ़ाई के लिए आर्थिक सहायता का फॉर्म भरा जिस पर कामगार कल्याण बोर्ड द्वारा दोनों बेटियों रितिका कक्षा छठी और कृतिका दसवीं कक्षा की पढ़ाई के लिए 16,800 रुपये की सहायता राशि प्रदान की गई है। निलिमा ने इसके लिए प्रदेश सरकार व कामगार कल्याण बोर्ड का धन्यवाद किया है। एक अन्य

लाभार्थी जोगिंद्रनगर के दारट गांव के रोहित का कहना है कि वह राजीव गांधी मेमोरियल महाविद्यालय जोगिंद्रनगर में पढ़ाई कर रहे हैं। उनकी माता दिहाड़ीदार हैं। उन्होंने मनरेगा में

मंडी जिला में 1254 बच्चों को शिक्षा के लिए 3.41 करोड़ रुपये की वित्तीय मदद

100 दिन पूरे किए हैं तथा कामगार कल्याण बोर्ड में पंजीकृत हैं। बोर्ड द्वारा पढ़ाई के लिए 72 हजार रुपये की राशि मिली है, जिसके लिए उन्होंने

रवि कुमार

सरकार व मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू का धन्यवाद किया है। कामगार कल्याण बोर्ड द्वारा पंजीकृत श्रमिकों के बच्चों को प्रथम से आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई के लिए 8,400 रुपये, 9वीं से 12वीं तक 12 हजार रुपये, कॉलेज तक की शिक्षा के लिए 36 हजार रुपयें, पॉलिटेक्निक डिप्लोमा करने के लिए 48 हजार रुपये, बी.टेक., एम.टेक., एमबीबीएस आदि के लिए एक लाख 20 हजार रुपये वार्षिक शिक्षण सहायता प्रदान की जाती है। ऐसे कामगार जो भवन निर्माण, सड़क, पुल, बिजली उत्पादन व वितरण, जल निकासी, बांध, सुरंग, संचार लाइन इत्यादि कार्यों से जुड़े हों अथवा जिनका कार्य कारखाना अधिनियम 1948 या खान अधिनियम 1952 के अंतर्गत नहीं आता, वे योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए पात्र हैं। पंजीकरण के लिए कामगार की आयु 18 से 60 वर्ष होनी चाहिए तथा पिछले 12 माह में कम से कम 90 दिन कार्य किया हो। पंजीकरण के लिए कामगार को आधार कार्ड, बैंक पासबुक, राशन कार्ड/परिवार रजिस्टर की प्रति, दो पासपोर्ट साइज फोटो तथा आयु प्रमाण के लिए जन्म प्रमाण पत्र, स्कूल प्रमाण पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, जन्म एवं मृत्यु रजिस्ट्रार द्वारा जारी प्रमाण पत्र अथवा निर्वाचन मतदाता कार्ड में से किसी एक की सत्यापित प्रति प्रस्तुत करनी होगी। कामगार ऑनलाइन माध्यम से भी बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट https://bocw.hp.nic.in पर अपना पंजीकरण या नवीनीकरण कर सकता है।

नई राह दिखा रही सुख शिक्षा योजना

योजना के तहत 18 वर्ष तक की आयु के पात्र बच्चों को 1000 रुपये प्रतिमाह

हिमाचल प्रदेश सरकार की इंदिरा गांधी सुख शिक्षा योजना आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों के लिए शिक्षा की एक नई राह खोल रही है। यह योजना उन बच्चों के लिए आशा की किरण बनकर आई है, जो पारिवारिक या सामाजिक परिस्थितियों के चलते शिक्षा से वंचित रह जाते थे। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू की संवेदनशील नेतृत्व शैली और जनकल्याणकारी दृष्टिकोण के कारण यह योजना राज्य में सामाजिक न्याय और शिक्षा सुलभता की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। यह योजना विशेष रूप से उन बच्चों के लिए है जिनकी माताएं विधवा, तलाकशुदा, परित्यक्ता, निराश्रित हैं या जिनके अभिभावक 70 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता से ग्रसित हैं।

इसका उद्देश्य इन बच्चों को आर्थिक सहारा प्रदान कर शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना है। योजना में 18 वर्ष तक की आयु के पात्र बच्चों को 1000 रुपये प्रतिमाह की दर से सहायता प्रदान की जा रही है, जिससे उनकी प्रारंभिक शिक्षा, स्वास्थ्य व पोषण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित हो सके। वहीं, उच्च शिक्षा में सहायता के तहत सरकारी संस्थानों में डिग्री, डिप्लोमा या व्यावसायिक पाठ्यक्रम करने वाले 18 से 27 वर्ष की आयु के छात्रों के लिए, इस योजना के तहत मुफ्त शिक्षा और छात्रावास की सुविधा उपलब्ध न होने की स्थिति में पीजी आवास के लिए 3,000 रुपये प्रति माह की सहायता प्रदान की जाती है। योजना का लाभ उठाने के लिए परिवार की वार्षिक आय एक लाख रुपये से कम होनी चाहिए और लाभार्थी हिमाचल प्रदेश का स्थायी निवासी होना चाहिए।

योजना के अंतर्गत ऊना जिले में पात्र 1106 विद्यार्थियों को 65.09 लाख रुपये की राशि वितरित

ऊना जिले में इस योजना के तहत अब तक 1106 पात्र विद्यार्थियों को 65.09 लाख रुपये की सहायता राशि वितरित की जा चुकी है। जिले के विभिन्न विकास खंडों में अंब में 228, धुंदला में 154, ऊना में 320, गगरेट

सचिन संगर

में 179 और हरोली में 225 बच्चे योजना में कवर किए गए हैं। इस योजना के सकारात्मक प्रभाव की झलक लाभार्थियों की बातों से साफ़ दिखाई देती है।

ऊना के वार्ड नंबर छः की पूजा पुरी, जिनके पति का देहांत हो चुका है, बताती हैं कि दो बच्चियों की पढ़ाई का खर्च उठाना उनके लिए लगभग असंभव हो गया था। लेकिन इस योजना के तहत छः महीने में 12,000 रुपये की सहायता मिलने से बहुत बड़ा सहारा मिला है। अब बेटियां बेफिक्री से स्कूल जा पा रही हैं। वह मुख्यमंत्री जी की बेहद आभारी हैं। इसी तरह, ऊना की रेणु देवी और कोटला कलां की सरोज बाला समेत अनेक महिलाओं ने योजना को एक संजीवनी बताते हुए मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू को धन्यवाद दिया है।

ऊना के वार्ड नम्बर छः के निवासी तन्मय बताते हैं कि उनके पापा के निधन के बाद तीन भाई-बहनों का सारा बोझ मम्मी के कंधों पर आ गया था। उन पर दसवीं के बाद पढ़ाई छोड़ कर कहीं काम-धंधे में लगने का दबाव बन रहा था, लेकिन यह योजना उनके लिए वरदान बनकर आई। अब वे ग्यारहवीं में दाखिला ले चुके हैं और अपने पढ़ने-लिखने के सपने को साकार करने में जुटे हैं। वे इसके लिए मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू का आभार जताते नहीं थकते तथा भविष्य में ऐसी कल्याणकारी योजनाएं जारी रखने का आग्रह करते हैं।

यकीनन इंदिरा गांधी सुख शिक्षा योजना आर्थिक मदद देने के साथ एक बेहतर भविष्य के सपनों को साकार करने का विश्वास भी जगा रही है।

सिरमौर के 1011 स्कूलों में अंग्रेजी मीडियम शुरू

प्रदेश सरकार द्वारा चालू शैक्षणिक सत्र से पहली कक्षा में शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा रही है, ताकि सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों की अंग्रेजी भाषा में पकड़ मजबूत हो सके। प्रदेश सरकार द्वारा जिला सिरमौर के 1011 राजकीय प्रारम्भिक स्कूलों में कक्षा पहली से पांचवी तक के 28500 विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा रही है। इससे सरकारी स्कूलों में बच्चों के दाखिले में भी इजाफा होगा। सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों को निःशुल्क वर्दी तथा मिड-डे मील सुविधा भी प्रदान की जा रही है। सरकारी स्कूलों में ट्रेंड अध्यापक अपनी सेवाएं दे रहे हैं तथा वर्तमान में जिला में प्रारम्भिक शिक्षा के अंतर्गत 108 केन्द्र मुख्य शिक्षक, 165 मुख्य शिक्षक तथा 1672 जेबीटी अध्यापक पहली से पांचवीं कक्षा तक के 28500 विद्यार्थियों को पढ़ा रहे है। नाहन निवासी बबीता ने बताया कि उनका बच्चा राजकीय प्राथमिक पाठशाला कैन्ट नाहन में पहली कक्षा में पढ़ता है। मैं सरकार का बहुत धन्यवाद करती हूं जो उन्होंने पहली कक्षा से इंग्लिश मीडियम आरंभ की है। सरिता शर्मा निवासी नाहन सिरमौर ने बताया कि मैंने अपने बेटे आरव शर्मा को कैन्ट स्कूल नाहन में डाला है, जहां पर सरकार ने इंग्लिश मीडियम रखा है, जिसके लिए मैं सरकार का धन्यवाद करती हूं। वाल्मीकि बस्ती, कच्चा टैंक, नाहन निवासी ममता ने बताया कि मेरी बेटी रिसिका यहां सरकारी स्कूल में पढ़ती है और सरकार ने जो इंग्लिश मीडियम व अन्य सरकारी सुविधा प्रदान की है, उसके लिए मैं धन्यवादी हूं।

28500 विद्यार्थी उठा रहे इस पहल का लाभ

राजन कांत शर्मा

आत्मनिर्भर हिमाचल की संकल्पना को साकार कर रही बैरी की रक्षा देवी

प्रदेश सरकार की कल्याणकारी योजनाएं एवं कार्यक्रम लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। सरकार की ओर से मिले प्रोत्साहन एवं स्वयं की मेहनत से ग्रामीण स्तर पर महिलाएं अब आत्मनिर्भर हिमाचल की संकल्पना को साकार करने में अपना अहम योगदान दे रही हैं।

इन्हीं में से एक हैं, रक्षा देवी। स्वयं सहायता समूह से जुड़ी रक्षा देवी कभी एक गृहिणी के तौर पर सामान्य रूप से अपना जीवन यापन कर रही थीं। सरकार से मिली मदद एवं मार्गदर्शन ने उनके जीवन की धारा ही बदल दी। आज वे एक सफल उद्यमी के रूप में कार्य कर रही हैं और तीन अन्य महिलाओं को रोजगार भी दिया है।

बल्ह घाटी के मैरमसीत क्षेत्र में बैरी गांव की रक्षा देवी ने बताया कि पहले वह एक गृहिणी थीं। शीतला स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनने के बाद उन्होंने अपने हुनर को पहचाना। सरकार के प्रोत्साहन से इन समूहों से जुड़कर महिलाएं घर-द्वार पर ही उत्पाद तैयार कर अपनी आजीविका कमा सकती हैं। उन्होंने बताया कि मोटे अनाज के उत्पाद जैसे मल्टीग्रेन कचौरी, मल्टीग्रेन सिड्डू, कोदरे की चाय और मिठाइयां इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण उन्हें कृषि विज्ञान केंद्र सुंदरनगर से मिला है। इसी बीच उनके गांव में हिमाचल प्रदेश फसल विविधीकरण प्रोत्साहन परियोजना - जाईका- (जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी) शुरू हुई। रक्षा देवी ने बताया कि वह केवीएम की प्रधान भी हैं। बकौल रक्षा देवी उनका समूह अपने हाथों से मल्टीग्रेन आटा, कोदरे, जौ, चावल तथा ज्वार का आटा, लोकल चावल, लाल चावल, अलसी,

स्वयं सहायता समूह से जुड़कर फूड प्रोसेसिंग में लिखी सफलता की नई इबारत

लोकल सीरा, क्राफ्ट तथा बहुत सा हैंडमेड सामान तैयार करता है।

इसके अलावा हम कचौरी ऑर्डर पर या रोजाना दुकान पर भी बनाते हैं। उनका दावा है कि उनके उत्पाद

रिचा गुलेरिया

प्राकृतिक खेती से तैयार किए गए हैं जो कि रसायन मुक्त हैं और स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हैं। एसडीएम कार्यालय सुंदरनगर के समीप स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार उत्पादों की बिक्री के उद्देश्य से जाईका के तहत रिटेल आउटलेट शीतला स्वयं सहायता समूह की सदस्य रक्षा देवी को दिया गया। इस समूह का गठन खंड परियोजना प्रबंधन इकाई (बीपीएमयू) मंडी के तहत किया गया है। समूह मुख्य रूप से बाजरा उत्पादों जैसे लड्डू और पंजीरी और स्थानीय रूप से बने उत्पादों जैसे अचार, चटनी, स्क्वैश, घी, शहद और मक्का, ज्वार, धान, रागी के आटे और हस्तशिल्प पर काम कर रहा है। स्व-निर्मित उत्पादों की खरीद के लिए प्रदेश भर के लगभग 15 अन्य समूहों के साथ भी जुड़ा है। वर्तमान में रिटेल आउटलेट से प्रतिमाह लगभग एक लाख रुपये की आमदनी हो रही है।

सितंबर, 2024 से समूह ने मोटे अनाज के खाद्य पदार्थ जैसे सिड्डू, चाय और कचौरी बनाना भी शुरू किया है। खाद्य पदार्थों के प्रति ग्राहकों की भारी मांग को देखते हुए शीतला स्वयं सहायता समूह हर सोमवार और गुरुवार को सरसों का साग और मक्की की रोटी तथा राजमाह-चावल तैयार कर रहा है। प्रदेश सरकार का धन्यवाद करते हुए रक्षा देवी ने कहा कि रिटेल आउटलेट से हम अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि रिटेल आउटलेट में तीन महिलाएं काम कर रही हैं जिनके लिए भी रोजगार का रास्ता खुल गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न गांवों से भी महिलाएं घर पर ही उत्पाद बनाने का काम कर रही हैं, जो उनके लिए भी रोजगार का साधन बना है।

टांडा कालेज में बेहतर सुविधाओं का सपना साकार

राज्य में टांडा मेडिकल कालेज स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने में उत्कृष्ट संस्थान के रूप में अपनी अलग पहचान कायम कर रहा है। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के नेतृत्व में सरकार ने टांडा मेडिकल कालेज में अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए कारगर कदम उठाए हैं। संस्थान में हर वर्ष छः लाख के करीब मरीज़ ओपीडी में आ रहे हैं जबकि 60 से 70 हजार इंडोर पेशेंट का इलाज भी किया जाता है।

संस्थान की डिलीवरी दर प्रति वर्ष आठ से 10 हजार है। कॉलेज में 12 ऑप्रेशन थिएटर चल रहे है और छः ऑपरेशन थिएटर चलाने की प्रक्रिया जारी है, प्रदेश में टांडा अस्पताल ने सबसे पहले रीनल ट्रांसप्लांट शुरू किया है। छः महीनों के अंदर ही टांडा अस्पताल ने 11 रीनल ट्रांसप्लांट कर इतिहास रचा है।

हर वर्ष छह लाख रोगियों का ओपीडी में हो रहा उपचार

ट्रॉमा सेंटर का शुभारंभ किया गया। ट्रॉमा सेंटर में 100 पद भरे गए है जिसमे आठ डॉक्टरों के पद भी शामिल है। टांडा अस्पताल में छः पोर्टेबल एक्सरे मशीनें हैं। इसके अतिरिक्त दो 800 एम ए (65 केवी) की मशीनें हैं। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने संस्थान को मजबूत करने के लिए यहां पर क्रिटिकल केयर यूनिट, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस मेंटल हेल्थ केयर जैसे अहम संस्थानों की स्थापना करवाने के लिए स्वीकृति दी है। सरकार के प्रयासों से ही यहां पर मनोवज्ञान में एमडी का कोर्स शुरू किया गया है जिसके लिए आवश्यक स्टाफ की भर्ती की जा चुकी है। संस्थान को मजबूत करने के लिए 500 पदों को भरने की स्वीकृति प्रदान की है, जिसमें डॉक्टर सहित अन्य सभी पद शामिल है।

संस्थान के जी. एस. बाली मदर चाइल्ड केयर हॉस्पिटल को भी रैंप के लिए साढ़े तीन करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

विनय शर्मा

कौशल विकास निगम के तहत तैयार हों बाजारोन्मुखी कार्यक्रम : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू शिमला में कौशल विकास निगम की बैठक की अध्यक्षता करते हुए

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों हिमाचल प्रदेश कौशल विकास निगम (एचपीकेवीएन) की 16वीं निदेशक मंडल बैठक की अध्यक्षता की। बैठक के दौरान उन्होंने युवाओं के लिए रोज़गार और स्वरोज़गार के अवसर सृजित करने के लिए कौशल विकास के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने निगम को बाजारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए एक व्यापक कार्य योजना तैयार करने और उसे प्रभावी ढंग से लागू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि युवाओं की क्षमता और रोजगार योग्यता बढ़ाना सभी योजनाओं का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने सोलन जिले के वाकनाघाट में उत्कृष्टता केंद्र तथा काजा और उदयपुर में मॉडल कैरियर केंद्रों के अलावा नालागढ़ में ग्रामीण आजीविका केंद्र के निर्माण कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निगम को निर्माण कार्यों में गुणवत्ता सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि युवाओं को अधिकतम लाभ सुनिश्चित हो सकें।

कौशल विकास निगम द्वारा 39,794 युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान

बोर्ड ने आरएलसी सराज, मॉडल कैरियर केंद्रों मंडी और बद्दी के लिए अग्निशमन अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए व्यय को भी मंजूरी दी।

श्री सुक्खू ने कहा कि 1 जनवरी, 2023 से अब तक हिमाचल प्रदेश कौशल विकास निगम की विभिन्न योजनाओं एवं परियोजनाओं से 45,455 युवाओं को पंजीकृत किया गया है। इनमें से 39,794 युवाओं को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र दिए जा चुके हैं तथा 8,586 प्रशिक्षुओं को रोज़गार मिल चुका है।

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री अनिरुद्ध सिंह, तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री राजेश धर्माणी, हिमाचल प्रदेश कौशल विकास निगम के राज्य संयोजक अतुल करोहटा, मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना, प्रधान सचिव देवेश कुमार, सचिव आशीष सिंहमार एवं संदीप कदम तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

विशेष ओलंपिक्स में हिमाचल प्रदेश के 15 खिलाड़ियों ने लिया भाग

राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने विशेष ओलंपिक खिलाड़ियों के योगदान को सराहने और उन्हें भरपूर सहयोग देने पर बल दिया है ताकि इनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके। गत दिनों स्पेशल ओलंपिक्स भारत-हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि समाज और सरकार दोनों को विशेष खिलाड़ियों को सहायता प्रदान करने और उनका उत्साहवर्द्धन करने के लिए आगे आना चाहिए। इस समारोह का आयोजन जर्मनी के बर्लिन में आयोजित स्पेशल ओलंपिक्स वर्ल्ड समर गेम्स-2023 और ईटली में आयोजित होने वाले वर्ल्ड विंटर गेम्स-2025 में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों और उनके प्रशिक्षकों के सम्मान में आयोजित किया गया। ईटली के ट्यूरिन में आयोजित प्रतियोगिता में 49 सदस्यों ने भारत का प्रतिनिधित्व किया जिनमें 30 खिलाड़ी और 19 सहायक स्टाफ शामिल था। इनमें से 15 खिलाड़ी हिमाचल प्रदेश से संबंधित थे।राज्यपाल ने कहा कि कोई भी प्रतियोगिता केवल पदक जीतने की प्रसन्नता मनाने तक ही सीमित नहीं बल्कि यह खिलाड़ियों के साहस, दृढ़ निश्चय और प्रतिबद्धता को सम्मान प्रदान करना होता है। इन खिलाड़ियों ने यह साबित किया है कि दृढ़संकल्प, कठिन परिश्रम और आत्मविश्वास से किसी भी चुनौती का सामना सम्भव है। उनकी उपलब्धियों ने न केवल देश व प्रदेश का मान बढ़ाया है बल्कि समाज को एक सकारात्मक और प्रेरणादायक संदेश भी दिया है। उन्होंने

राज्यपाल ने किया प्रदेश के खिलाड़ियों को सम्मानित

इन खिलाड़ियों के प्रशिक्षकों की विशेष तौर पर सराहना की।

श्री शुक्ल ने कहा कि भारत ने इन खेलों में 33 पदक जीते। हिमाचल प्रदेश से 15 खिलाड़ियों और आठ प्रशिक्षकों को तैयार करने तथा इन खिलाड़ियों की उपलब्धियों के लिए एनएचपीसी स्पोर्ट्सेंटर के योगदान को सराहते हुए उन्होंने कहा कि इस प्रकार के संस्थान खेल संस्कृति को व्यापक प्रोत्साहन देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने स्पेशल ओलंपिक्स भारत और एशिया पेसिफिक एडवाइज़री काउंसिल की अध्यक्षा डॉ. मलिका नड्डा के प्रयासों की सराहना की जिन्होंने वर्ष 2002 में बिलासपुर से विशेष ओलंपिक्स की पहल की। उन्होंने स्पेशल ओलंपिक्स हिमाचल प्रदेश की 23 वर्ष की सफल यात्रा पूरी करने और शिमला व नारकण्डा में वर्ष 2008 में पहले नेशनल विंटर गेम्स को सफलतापूर्वक आयोजित करने पर श्रीमती नड्डा को बधाई दी।

इससे पूर्व, राज्यपाल ने विजेत खिलाड़ियों और उनके प्रशिक्षकों को सम्मानित किया।

डॉ. मलिका नड्डा ने कहा कि स्पेशल ओलंपिक्स में इन खिलाड़ियों की सफलता पूरे राष्ट्र के लिए गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि विशेष बच्चों के प्रशिक्षण के लिए एनएचपीसी के सहयोग से हिमाचल प्रदेश में नौ खेल केंद्र विकसित किए गए हैं जबकि देश में ऐसे 72 केंद्र कार्यशील हैं। उन्होंने पदक विजेताओं को प्रदान की जाने वाली धनराशि पांच लाख रुपये से बढ़ाकर 20 लाख रुपये करने के लिए केंद्र सरकार का आभार व्यक्त किया।

स्पेशल ओलंपिक्स भारत-हिमाचल प्रदेश के क्षेत्रीय निदेशक परिक्षित महदूदिया ने खिलाड़ियों की उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

राज्यपाल से एच.पी.यू. के नवनियुक्त कुलपति की भेंट

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के नवनियुक्त कुलपति प्रो. महावीर सिंह ने गत दिनों राजभवन में राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल से शिष्टाचार भेंट की। राज्यपाल ने उनकी नियुक्ति पर शुभकामनाएं दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय उनके नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां हासिल करेगा।

मुख्यमंत्री व उप-मुख्यमंत्री ने विमान दुर्घटना पर किया शोक व्यक्त

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू व उप-मुख्यमंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री ने अहमदाबाद में विमान दुर्घटना में 200 से अधिक लोगों की मृत्यु पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि इस हृदय विदारक घटना से हम सभी आहत हैं। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के लोग दिवंगत आत्माओं की शांति और उनके परिवार के सदस्यों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

मुख्यमंत्री व उप-मुख्यमंत्री ने इस दुर्घटना में घायल लोगों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए कामना की है।

कल्पा में विकासात्मक कार्य पूर्ण करने के निर्देश

राजस्व, बागबानी, जनजातीय विकास एवं जन शिकायत निवारण मंत्री श्री जगत सिंह नेगी ने गत दिनों किन्नौर जिला के रिकांग पीओ स्थित आई.टी.डी.पी भवन के सम्मेलन कक्ष में कल्पा ब्लॉक शिकायत निवारण समिति की बैठक की अध्यक्षता की तथा अधिकारियों को कल्पा विकास खंड के तहत लंबित विकास कार्यों व शिकायतों के निवारण कार्यों को समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने विद्युत परियोजनाओं के अधिकारियों को ख्वांगी ग्राम पंचायत में की जा रही अवैध डंपिंग को रोकने के निर्देश दिए व साथ ही विद्युत परियोजनाओं से स्थानीय लोगों को हो रहे नुकसान की भरपाई करने को कहा। राजस्व मंत्री ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों से पवारी सड़क के सुचारू संचालन व निर्माण कार्यों को लेकर चर्चा की तथा पर्यटन नगरी सांगला में पार्किंग की उचित व्यवस्था

ब्लॉक स्तरीय योजना विकास एवं 20 सूत्रीय कार्यक्रम समीक्षा समिति की बैठक आयोजित

रखने के निर्देश दिए। उन्होंने जल शक्ति विभाग को जिला की कोठी पंचायत में मल निकासी व पेयजल समस्या का शीघ्र निपटान सुनिश्चित करने के आदेश दिए।

बैठक में सापनी क्षेत्र में विद्युत समस्या तथा ट्रांसफार्मर लगाने पर चर्चा हुई और कैबिनेट मंत्री ने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार निर्धन एवं भूमिहीन लोगों को अपनी जमीन दिलवाने के प्रति वचनबद्ध है तथा इस दिशा में निरंतरता के साथ कार्य किया जा रहा है।

इसके उपरांत जनजातीय विकास मंत्री ने ब्लॉक स्तरीय योजना विकास एवं 20 सूत्रीय कार्यक्रम समीक्षा समिति की बैठक की अध्यक्षता की तथा विभिन्न विकासात्मक नीतियों व योजनाओं के तहत लंबित विकास कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए।

हिमुडा निदेशक मंडल की बैठक आयोजित

हिमाचल प्रदेश आवास एवं शहरी विकास प्राधिकरण (हिमुडा) के निदेशक मंडल की 56वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए नगर नियोजन मंत्री श्री राजेश धर्माणी ने हिमुडा द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।

श्री राजेश धर्माणी ने अधिकारियों को शिमला जिले के विकासनगर और माउंटेन सिटी जाठिया देवी में वाणिज्यिक परिसर के निर्माण कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने सरकारी भूमि के उपयोग और मौजूदा भवनों के आधुनिकीकरण के लिए पुनर्विकास नीति लाने पर बल दिया। नगर नियोजन मंत्री ने डिपोजिट कार्यों को तय समय अवधि में पूर्ण करने पर बल दिया। उन्होंने राज्य में बेहतर शहरी और आवासीय विकास के लिए निजी भागीदारी पर भी बल दिया ताकि क्षेत्र में अधिक निवेश के अवसर पैदा किए जा सकें। बोर्ड ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 125.38 करोड़ रुपये के संशोधित बजट अनुमानों को मंजूरी दी। बैठक में धर्मशाला में 35 फ्लैट के निर्माण के साथ-साथ निजी भूमि की खरीद के लिए मानक संचालन प्रक्रिया को भी मंजूरी दी गई।

ढली-रामपुर फोरलेन प्रक्रिया को सैद्धांतिक मंजूरी

लोक निर्माण मंत्री श्री विक्रमादित्य सिंह ने गत दिनों नई दिल्ली में केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी से भेंट की। बैठक के दौरान उन्होंने केंद्रीय मंत्री से भूभुजोत सुरंग सहित घटासनी-शिल्हा- बधानी- भूभुजोत-कुल्लू सड़क के सामरिक महत्त्व के दृष्टिगत इसे राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यह मार्ग रक्षा संबंधी सामग्री की सुचारू आवाजाही के लिए बेहतर मार्ग साबित होगा और इससे यात्रा की दूरी 55 किलोमीटर कम होगी।

लोक निर्माण मंत्री ने ढली से रामपुर तक एनएच-05 के फोरलेन के निर्माण कार्य को प्राथमिकता प्रदान करने का अनुरोध किया। उन्होंने वर्तमान में राजमार्गों पर चल रहे निर्माण कार्यों को शीघ्र पूरा करने का भी आग्रह किया। उन्होंने केंद्रीय मंत्री को अवगत करवाया कि राज्य सरकार द्वारा पांच राष्ट्रीय राजमार्गों को प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना में शामिल करने का आग्रह किया गया है। उन्होंने इस संबंध में मंजूरी प्रदान करने का आग्रह किया।

श्री विक्रमादित्य सिंह ने सीआरएफ के तहत 130 करोड़ रुपये की धनराशि शीघ्र जारी करने और राज्य में सीआरएफ कार्यों की वार्षिक सीमा को बढ़ाकर 250 करोड़ रुपये करने का भी अनुरोध किया।

श्री नितिन गडकरी ने मांगों को ध्यानपूर्वक सुना और हर संभव सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया। उन्होंने ढली-रामपुर फोरलेन प्रक्रिया को भी सैद्धांतिक रूप से मंजूरी प्रदान की।

इस अवसर पर लोक निर्माण विभाग के सचिव अभिषेक जैन, लोक निर्माण विभाग के प्रमुख अभियन्ता सुरेन्द्र पाल जगोता भी उपस्थित थे।

अखिल भारतीय टैक्सी परमिट 15 वर्षों के लिए देने का आग्रह

उप-मुख्यमंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री ने गत दिनों नई दिल्ली में केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी से भेंट कर हिमाचल प्रदेश के लिए उदार रवैया अपनाने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों के दृष्टिगत राज्य का विकास पूरी तरह से सड़कों और पुलों के विस्तार पर निर्भर करता है।

इस पहाड़ी राज्य के लोगों के जीवन को सुगम बनाने और प्रदेश के विकास के लिए सड़क और पुलों की अधोसंरचना का सुदृढ़ीकरण अत्यन्त आवश्यक है।

बैठक के दौरान उप-मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री के समक्ष परिवहन विभाग से संबंधित प्रमुख मामलों को उठाया। उन्होंने कहा कि जनहित को ध्यान में रखते हुए अखिल भारतीय टैक्सी परमिट की अवधि को मौजूदा 12 वर्ष से बढ़ाकर 15 वर्ष करने के संबंध में अ०परेटर्यों की मांग को राज्य सरकार ने केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्रालय के समक्ष प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि वाहनों के संचालन की सीमा को 15 वर्ष किया गया है इसके दृष्टिगत

चंडीगढ़ से बद्दी औद्योगिक क्षेत्र के बीच कनेक्टिविटी मामला भी उठाया

अखिल भारतीय टैक्सी परमिट की अवधि को भी 15 वर्ष तक किया जाना चाहिए।

केंद्रीय मंत्री ने राज्य सरकार के अनुरोध के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया और उन्होंने आश्वासन दिया कि वह इस मामले पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और संबंधित अधिकारियों को मामले पर कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

श्री मुकेश अग्निहोत्री ने केंद्रीय मंत्री से हिमाचल प्रदेश को पूंजी निवेश (पुराने वाहनों को हटाने के लिए प्रोत्साहन) के लिए विशेष सहायता योजना के तहत शेष धनराशि 7.63 करोड़ रुपये शीर्घ जारी करने का अनुरोध किया। केंद्रीय परिवहन मंत्री ने संबंधित अधिकारियों को तुरंत धनराशि जारी करने के निर्देश दिए।

उप-मुख्यमंत्री ने आग्रह किया कि नंगल से जैजों तक सड़क मार्ग को राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित किया जा सकता है। यह सड़क प्रस्तावित बल्क ड्रग पार्क की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक साबित होगी। केंद्रीय मंत्री ने प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना के तहत विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार कर मंत्रालय के समक्ष प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। श्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि 429 करोड़ रुपये की डीपीआर पहले ही तैयार की जा चुकी है और इसे गति शक्ति योजना के तहत भारत सरकार को प्रस्तुत किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त उन्होंने केंद्रीय मंत्री से अनुरोध किया कि अमृतसर से होशियारपुर तक एनएच-503ए के प्रस्तावित फोर लेनिंग कार्य को बनखंडी (हिमाचल प्रदेश की सीमा) से झलेड़ा तक बढ़ाया जा सकता है। इसकी लम्बाई लगभग 15 किलोमीटर है और यह मार्ग श्री आनंदपुर साहिब और माता चिंतपूर्णी को जोड़ेगा, जिससे इन दोनों धार्मिक स्थलों पर आने वाले तीर्थ यात्रियों को भी लाभ होगा। उन्होंने चंडीगढ़ से बद्दी औद्योगिक क्षेत्र के बीच कनेक्टिविटी का मामला भी उठाया। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि यह मामला पहले ही केन्द्र सरकार के विचाराधीन है।

उप-मुख्यमंत्री ने यह भी अनुरोध किया कि सीआरआईएफ के तहत 48.69 करोड़ रुपये की लागत से जैजों मोड़ से टाहलीवाल चौक वाया भाई-का-मोड़ सम्पर्क मार्ग और तीन पुल को स्तरोन्नत करने को शीघ्र स्वीकृति प्रदान की जाए।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

आज़ादी की रक्षा केवल सैनिकों की जिम्मेवारी नहीं है, पूरे देश को मजबूत होना होगा। -लाल बहादुर शास्त्री

बॉर्डर टूरिज्म

हिमाचल प्रदेश, अपनी सुरम्य वादियों, बर्फीले पहाड़ों, कल-कल बहती नदियों और धार्मिक व साहसिक स्थलों के लिए देश-दुनिया के सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। गर्मी के इस मौसम में जब मैदानी इलाकों में लू और तपिश चरम पर है, ऐसे में हिमाचल की ठंडी हवाएं और शांत वातावरण पर्यटकों को सुकून देने वाली पनाहगाह बनी हुई है। इन दिनों भी प्रदेश के सभी पर्यटक स्थल सैलानियों की आमद से गुलजार हैं और यहां की शुद्ध आबोहवा का आनंद लेते देखे जा सकते हैं। राज्य में आने वाले पर्यटकों को किसी भी तरह की दिक्कतें न हो, उन्हें सुरक्षित माहौल उपलब्ध करवाया जा सके, इसके लिए पुख्ता प्रबंध कर सरकार 'अतिथि देवो भवः' की परंपरा को सुदृढ़ कर रही है। परंपरागत पर्यटन स्थलों को विकसित करने के साथ-साथ अब हिमाचल सरकार एक नई अवधारणा को आकार दे रही है जिसे नाम दिया गया है बार्डर टूरिज्म, यानी सीमा पर्यटन। सीमा पर्यटन का यह विचार प्रदेश को पर्यटन की नई ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने प्रदेश के किन्नौर जिले में स्थित शिपकी-ला पहुंच कर इस अभियान की ऐतिहासिक शुरूआत की है। यह स्थान न केवल भौगोलिक रूप से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से भी इसकी अपनी विशेष पहचान है। शिपकी-ला से होकर वह प्राचीन मार्ग गुजरता है जो कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए प्रयुक्त होता था। यही वह जगह है जहां से पवित्र सतलुज नदी भारत में प्रवेश करती है, जो सदियों से भारत और तिब्बत के बीच व्यापारिक व सांस्कृतिक रिश्तों का भी साक्षी रहा है। सीमा पर्यटन की यह पहल केवल पर्यटन तक सीमित नहीं है। यह क्षेत्रीय विकास, स्थानीय लोगों की आर्थिकी सुदृढ़ करने और ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने का सशक्त माध्यम बन सकती है। राज्य सरकार का यह कदम स्वागत योग्य है कि वह केंद्र सरकार से कैलाश मानसरोवर यात्रा को शिपकी-ला मार्ग से शुरू करने की मांग कर रही है। इससे जहां श्रद्धालुओं को अधिक सहज और सुंदर मार्ग मिल सकेगा, वहीं देश की सीमाओं से जुड़े इलाकों में पर्यटन का विस्तार भी होगा। सीमा पर बसे गांवों तक पर्यटकों की पहुंच सुनिश्चित करने से इन इलाकों में अधोसंरचना का विकास होगा, रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे और पलायन की समस्या पर भी रोक लगेगी। इससे सीमांत क्षेत्रों की रणनीतिक और सामाजिक मजबूती भी सुनिश्चित होगी, जो कि राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हिमाचल सरकार का प्रयास पर्यटन को ग्रामीण विकास और राष्ट्रीय हित से जोड़ने का एक अभिनव उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। सीमा पर्यटन की यह पहल आने वाले समय में हिमाचल प्रदेश को पर्यटन मानचित्र पर एक नई पहचान दिला सकती है। अब समय है कि हम भी इस पहल का हिस्सा बनें और हिमाचल की इन अनछूई, परंपराओं और प्रकृति से समृद्ध सीमांत वादियों की ओर कदम बढ़ाएं। शांति, सुंदरता और सांस्कृतिक समृद्धि के इस संगम का अनुभव करें। यह सिर्फ एक यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा को छू जाने वाला अनुभव हो सकता है। और अपनी यात्रा को यादगार बना सकते हैं। इसके अलावा प्रदेश सरकार कांगड़ा जिले को पर्यटन राजधानी के रूप में विकसित करने के लिए भी प्रयासरत है। जिले के वन्य बनखंडी में प्राणी उद्यान की स्थापना का निर्णय विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसी तरह से बिलासपुर जिला स्थित गोबिन्द सागर झील में साहसिक जलक्रीड़ा गतिविधियों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। प्राकृतिक सौंदर्य से लबरेज कुल्लू, मनाली, शिमला सहित अन्य सभी पर्यटक स्थलों को विकसित करने के प्रदेश सरकार के प्रयास विशेष रूप से सराहनीय हैं। इससे हिमाचल निश्चित रूप से विश्व पर्यटन मानचित्र पर एक नई पहचान बनाने में कामयाब होगा।

जन राय

स्मार्ट पुलिसिंग व्यवस्था

भारत में सभी राज्यों की अपनी पुलिस व्यवस्था है, जो वहां के राज्य विधान मंडलों द्वारा पुलिस से संबंधित बनाए गए कानूनों के तहत कार्य करती है। कुछ केंद्रीय कानून भी देश भर की पुलिस के लिए बनाए गए हैं, इन्हें पुलिस अधिनियम 1861 कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश में, 'हिमाचल प्रदेश पुलिस अधिनियम, 2007' के अनुसार, हर पुलिस अधिकारी को अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का पालन अपनी सर्वोत्तम योग्यता से करना चाहिए।

भारत के सभी राज्यों के अपने-अपने पुलिस बल हैं जो कानून व्यवस्था एवं लोक व्यवस्था को बनाए रखने, अपराध नियंत्रण तथा जनता से प्राप्त शिकायतों का निस्तारण करने के अलावा समाज के समस्त वर्गों में सद्भाव कायम रखने, महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों एवं संस्थानों की सुरक्षा करने के साथ-साथ अपने नागरिकों की जान व माल की सुरक्षा करने की जिम्मेदारी संभालते हैं। पुलिस पर राज्य-वार व्यय में हिमाचल प्रदेश सरकार अपने राज्य बजट का 1.9 फीसदी हिस्सा व्यय करती है। हिमाचल में इस समय 135 पुलिस स्टेशन हैं और मई 2025 तक हिमाचल प्रदेश पुलिस की कुल संख्या लगभग 15,100 से अधिक थी। इसमें 89 आईपीएस अधिकारी, 169 राज्य पुलिस सेवा अधिकारी, 2051 एनजीओ ग्रेड-I और 14794 एनजीओ ग्रेड-II शामिल हैं।

पुलिस तंत्र में व्यापक एवं त्वरित सुधारों की मांग आज भी समय की मांग बनी हुई है। आज के दौर में अपराधियों की बदलती कार्यशैली के दृष्टिगत पुलिस की भूमिका भी बदल रही है और उसे भी शातिर अपराधियों और आतंकवादियों की चुनौती से निपटने हेतु नवीनतम हथियारों और कंप्यूटर विज्ञान की तकनीकों से प्रशिक्षित किया जा रहा है लेकिन सार्वजनिक स्थानों पर लोगों/पर्यटकों की हुल्लड़बाज़ी/ नशेड़ी लोगों पर लगाम, साइबर ठगी, नशीले एवं मादक पदार्थों का बढ़ता कारोबार और घरों में चोरियों की घटनाओं के अपराधियों तक पुलिस की पहुंच को आबंटन बढ़ाने की जरूरत है। दूसरे युवा पुलिस अधिकारियों एवं जवानों को बैरकों में ही बिठाए रखने की बजाय उन्हें जनता के बीच में उतारने की सख्त आवश्यकता है ताकि आम लोग के बीच में उनकी सक्रिय मौजूदगी से विश्वास बहाली हो और अपराधियों पर अंकुश लगाने में भी मदद मिले।

हिमाचल प्रदेश की ही बात करें तो भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए

पश्चिमी देशों की तर्ज़ पर भारत में भी स्मार्ट पुलिसिंग व्यवस्था को लागू किए जाने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों को व्यापक सुधार करने के साथ-साथ पुलिस बलों के लिए बजटीय आबंटन बढ़ाने की जरूरत है।

आसान बनाने के लिए उन्हें बेहतरीन उपकरण, प्रशिक्षित डॉग स्क्वाड, वाहन और विशेष कार्यबल की उपलब्धता पर ध्यान देने की जरूरत है। यदि देश में कानून व्यवस्था एवं अमन, शांति को बरकरार रखना है तो केंद्र एवं राज्य सरकारों को न केवल पुलिस सुधारों को अमलीजामा पहनाना होगा अपितु पुलिस कर्मचारियों की संख्या में बढ़ोतरी करके उन्हें अत्याधुनिक सुविधाओं द्वारा देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को यकीनी बनाने वाले बल के रूप में भी तैयार करना होगा।

अनुज कुमार आचार्य

पश्चिमी देशों की तर्ज़ पर भारत में भी स्मार्ट पुलिसिंग व्यवस्था को लागू किए जाने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों को व्यापक सुधार करने के साथ साथ पुलिस बलों के लिए बजटीय मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने बदलती तकनीक के साथ अपराध के तौर-तरीकों में भी बदलाव के मद्देनज़र पुलिस विभाग को अपनी कार्य प्रणाली में बदलाव लाने के निर्देश देते हुए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ अन्य आधुनिक सॉफ्टवेयर को उपयोग करने की आवश्यकता जताई है। हिमाचल प्रदेश के पुलिस थानों में वर्तमान जनसंख्या के अनुपात में कई कमियां हैं जिन्हें प्राथमिकता के आधार पर सुधारने की आवश्यकता है। पुलिस विभाग में फील्ड गतिविधियों के लिए मोटरसाईकिल, पेट्रोल, डीजल वाहनों और स्टाफ के लिए ई-वाहन उपलब्ध करवाए जाने के अतिरिक्त आबादी, क्षेत्रफल, अपराध दर, पर्यटकों की संख्या सहित अन्य कारकों को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के पुलिस थानों की पुनःसंरचना पर जल्दी निर्णय लिए जाने चाहिए ताकि वहां स्थानीय जरूरतों और इन कारकों के आधार पर पर्याप्त पुलिस कर्मचारियों और अन्य आवश्यक सुविधाएं प्रदान की जा सकें।

इतना ही नहीं पुलिस विभाग में कार्यरत कर्मचारियों के काम के घंटों, उनके पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की जरूरतों के अनुरुप तर्कसंगत वेतन एवं भत्तों के अलावा रिहायशी आवास इत्यादि उपलब्ध करवाए जाने चाहिए। थानों के रख-रखाव, नियमित रंग रोगन, मैंटेनेंस एवं स्टेशनरी आदि जरूरतों के लिए पर्याप्त धनराशि दी जानी चाहिए।

पुलिस की वर्दी जनता के प्रति प्रतिबद्धता, समर्पण और जवाबदेही का प्रतीक है, लिहाज़ा यह पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों का फ़र्ज़ बनता है कि वह कानूनों को लागू करने, सार्वजनिक शांति व्यवस्था और सुरक्षा बनाए रखने, यातायात को नियंत्रित करने, नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करने और संविधान के अनुसार व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करने के अपने दायित्वों का अनुशासन के दायरे में रहकर निर्वहन करें।

सबसे बड़ी जरूरत पुलिस अफसरों और कर्मचारियों के कामकाज में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए और उन्हें जनता जनार्दन की सेवा के लिए फ्री हैंड दिया जाना चाहिए ताकि वह निर्भय, निष्पक्ष और सत्यनिष्ठ रहकर अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन कर सकें। हिमाचल प्रदेश सरकार को भी स्मार्ट पुलिसिंग की अवधारणा को सिरे चढ़ाने के लिए आवश्यक उपचारात्मक कदम उठाने की पहल करनी चाहिए।

चिनाब ब्रिज : इंजीनियरिंग के आकाश पर भारत का परचम

हाल ही में जम्मू-कश्मीर ऐतिहासिक चिनाब ब्रिज का उद्घाटन किया गया, जिससे भारत के सबसे कठिन रेलवे प्रोजेक्ट 'उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक' (यूएसबीआरएल) का सबसे जटिल और निर्णायक भाग पूरा हो गया। यूएसबीआरएल की कुल लंबाई 272 किलोमीटर है, जो चार खंडों में विभाजित है, उधमपुर-कटरा, कटरा-बनिहाल, बनिहाल-काजीगुंड और काजीगुंड-बारामूला। चिनाब ब्रिज इस परियोजना के कटरा-बनिहाल खंड में आता है और इसके पूरा होते ही कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर घाटी तक एक सीधा रेलवे संपर्क संभव हो गया है।

चिनाब नदी पर बना चिनाब रेलवे ब्रिज न केवल एक तकनीकी चमत्कार है बल्कि यह भारत की इंजीनियरिंग शक्ति, वैज्ञानिक कौशल, राष्ट्रीय संकल्प और कूटनीतिक दूरदृष्टि का भी प्रतीक बन गया है। यह पुल विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज है, चिनाब ब्रिज चिनाब नदी के ऊपर 359 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, जो एफिल टॉवर (324 मीटर) से 35 मीटर अधिक ऊंचा है। इसकी कुल लंबाई 1315 मीटर है और मुख्य आर्क का फैलाव 467 मीटर है।

इस ब्रिज की संरचना में 63 मिलीमीटर मोटी स्टील प्लेट्स का इस्तेमाल किया गया है, जो ब्लास्ट-प्रूफ हैं और सामरिक दृष्टि से अत्याधिक मजबूत हैं। इस ब्रिज का डिजाइन इस तरह से किया गया है कि यह 8 रिक्टर स्केल तक के भूकंप और 260 किलोमीटर प्रतिघंटा की अत्याधिक तेज रफ्तार वाली हवाओं को भी सहन कर सकता है।

इस परियोजना की कुल लागत अब तक 35 हजार करोड़ रुपये से अधिक हो चुकी है, जिसमें केवल

चिनाब ब्रिज चिनाब नदी के ऊपर 359 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, जो एफिल टॉवर (324 मीटर) से 35 मीटर अधिक ऊंचा है। इसकी कुल लंबाई 1315 मीटर है और मुख्य आर्क का फैलाव 467 मीटर है।

चिनाब ब्रिज पर ही लगभग 1,486 करोड़ रुपये का खर्च आया है। इसके अलावा जियोटेक्निकल रडार सिस्टम

योगेश कुमार गोयल

और स्ट्रेस मॉनिटरिंग तकनीक इस्तेमाल की गई, जो पुल की संरचनात्मक स्थिरता की निगरानी के लिए स्थापित की गईं। पूरे पुल पर ऐसी सेंसर प्रणाली लगाई गई है जो मौसम, कंपन और बाह्य आघातों की निगरानी करती है। पुल की संरचनात्मक मजबूती की पुष्टि के लिए 700 से अधिक 'ब्लास्ट लोड टेस्टिंग और वाइब्रेशन एनालिसिस' किए गए। इस परियोजना में भारत की एफकॉन इंफ्रास्ट्रक्चर, कोंकण रेलवे, डीआरडीओ और स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञता का भी सहयोग लिया गया। जर्मनी की लियोनहार्ट एंड्रा, कनाडा की डब्ल्यूएसपी तथा डेनमार्क और दक्षिण कोरिया की इंजीनियरिंग कंपनियों ने भी इस चुनौतीपूर्ण कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतिहास की दृष्टि से देखें तो जम्मू-कश्मीर में रेलवे नेटवर्क स्थापित करने के प्रयास 19वीं सदी में शुरू हुए थे। वर्ष 1897 में जम्मू से सियालकोट (अब पाकिस्तान) तक पहली रेललाइन बनी, जो 1947 के विभाजन के बाद समाप्त हो गई। 1975 में पठानकोट-जम्मू लाइन शुरू हुई और 1983 में जम्मू-उधमपुर परियोजना शुरू की गई, जिसे पूरा करने में दो दशक लगे। 1994 में यूएसबीआरएल परियोजना की घोषणा हुई और वर्ष 1995 में इसे राष्ट्रीय परियोजना घोषित किया गया। तब से लेकर अब तक 20 से अधिक सुरंगें और 158 पुल इस परियोजना के अंतर्गत बनाए जा चुके हैं। इनमें बनिहाल सुरंग (पीर पंजाल) की लंबाई 11.2 किमी है, जो देश की सबसे लंबी रेलवे सुरंग है। एलओसी के निकट होने के कारण यह पुल सेना को सीमांत क्षेत्रों में त्वरित और निर्बाध आपूर्ति, लॉजिस्टिक्स और सैनिकों की तैनाती में सहायता प्रदान करेगा और आतंकवाद प्रभावित क्षेत्रों में सैन्य कार्रवाइयों के लिए यह पुल एक गेम-चेंजर साबित हो सकता है।

आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह पुल कश्मीर घाटी को भारत के बाकी हिस्सों से जोड़ने का माध्यम बनता है। इससे सेब, अखरोट, हस्तशिल्प, कागज और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में व्यापार में वृद्धि होगी। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और भारत के मुख्य महानगरों दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता से कश्मीर की दूरी रेल मार्ग से कम हो जाएगी। सुरंगों के निर्माण में 'एनएटीएम' (न्यू ऑस्ट्रियन टनलिंग मैथड) जैसी पर्यावरण के प्रति संवेदनशील तकनीकों का उपयोग किया गया। वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की रक्षा हेतु कई कदम उठाए गए। कुल मिलाकर देखा जाए तो यह केवल एक पुल नहीं बल्कि कश्मीर को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का एक जीवंत प्रयास है। इससे वहां की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक समरसता को मजबूती मिलेगी और एक नया युग आरंभ होगा। आने वाले वर्षों में यह न केवल देश की रेल संरचना में एक ऐतिहासिक अध्याय जोड़ेगा बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की तकनीकी उत्कृष्टता और नवाचार को भी दर्शाएगा। यह पुल आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और भारत की विकास गाथा में स्वर्णिम अध्याय के रूप में याद किया जाएगा।

विभिन्न ऋतुओं में सब्जियों की बुआई का सही समय

भारत एक प्रमुख सब्जी उत्पादक देश है। आज हमारे देश में लगभग 10.24 मिलियन हेक्टेयर भूमि पर सब्जियों की खेती की जाती है। जिसका कुल उत्पादन 178.17 मिलियन टन है। हमारे देश का सब्जी उत्पादन में विश्व में दूसरा स्थान है। प्राचीन समय से प्रत्येक व्यक्ति अपने उपभोग या खाने के लिए सभी भोज्य पदार्थ स्वयं उगाता था। यह खेती घर के पास स्थित भूमि में की जाती है। किसान सब्जियों की खेती करते हैं। आजकल हर मौसम में हर सब्जी मिलने लगी है। इसलिए हम सब भी भूले बैठे हैं कि किस ऋतु में कौन सब्जियों को बोने और उगाने के लिए सही समय है। सब्ज़ियों की अच्छी उपज, गुण और स्वाद के लिए, सही समय पर बुआई होना जरूरी है। कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली द्वारा तैयार की गई है, जिसमें प्रत्येक माह में उगाई जाने वाली सब्जियों की जानकारी दी गई है। इसमें अलग-अलग महीनों के अनुसार विभिन्न सब्जियों को बोने और उगाने के सुझाव दिए गए हैं। इस चक्र से किसान यह जान सकते हैं कि किस महीने में कौन-सी फसल उपयुक्त है। यह जानकारी मौसम के अनुसार खेती की योजना बनाने में मदद करती है। कृषि वैज्ञानिक डॉ. दीपक मेहंदी रत्ता ने बताया कि समयानुसार किसान बहुत सारी ऐसी सब्जियों की खेती कर सकते हैं, जो अच्छा मुनाफा देती हैं। इन सब्जियों में प्रमुख रूप से अगर हम पत्तेदार सब्जियों की बात करें तो पालक, मेथी और सरसों है। इसको हम समय पर लगा सकते हैं। इसके साथ ही फूल गोभी, बंदगोभी व ब्रोकली सहित आदि चीजों की सब्जियां तैयार कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि इस समय किसान प्याज की पौध भी तैयार करके तगड़ी कमाई कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि किसान आलू की भी फसल लगा सकते हैं, जिसमें पुखराज वगैरा आलू लगा सकते हैं, जो 60 दिन में तैयार हो जाता है। किसानों को सब्जी के बीज के चयन में भी ध्यान देने की आवश्यकता है। उपयुक्त समय पर फसल लगाने से उत्पादन बेहतर होता है। सब्जियों की खेती करने वाले किसान को कम लागत में काफी लाभ मिलता है।

जनवरी : बैंगन, मिर्च, गाजर, मूली, पालक, टमाटर, शलजम जैसी फसलें उगाने के लिए उपयुक्त समय है।

फरवरी : मूली, गाजर, पालक, धनिया, टमाटर, बीन्स और लौकी जैसी सब्जियों के लिए अच्छा महीना है।

मार्च : गर्मियों की सब्जियां जैसे लौकी, तोरई, तरबूज, ककड़ी और करेला उगाने के लिए सही समय है।

अप्रैल : लौकी, ककड़ी, करेला, तोरई, तरबूज, टिंडा आदि की बुआई उपयुक्त है।

मई : ग्रीष्मकालीन सब्जियों जैसे लौकी, ककड़ी, करेला, तोरई और टिंडा का उत्पादन हो सकता है।

जून : भिंडी, लौकी, करेला, तोरई, तरबूज जैसी सब्जियों के लिए सही समय है। **जुलाई :** भिंडी, तोरई, लौकी, तरबूज, खीरा, करेला, पालक आदि की बुआई के लिए उपयुक्त है।

अगस्त : पालक, मूली, गाजर, मेथी, धनिया और चौलाई जैसी फसलें लगाई जा सकती हैं।

सितंबर : आलू, टमाटर, गोभी, मटर, मूली, गाजर, धनिया जैसी फसलें इस माह लगाई जा सकती हैं।

अक्टूबर : गोभी, मूली, गाजर, पालक, धनिया और ब्रोकली उगाने के लिए सही समय है।

नवंबर : मटर, गोभी, गाजर, धनिया, ब्रोकली और पालक जैसी फसलें लगाई जा सकती हैं।

दिसंबर : टमाटर, बैंगन, गोभी, गाजर, पालक, मटर जैसी फसलें इस महीने उगाई जा सकती हैं।

✍ विदर्भ अग्निहोत्री

पराली का समुचित प्रबंधन

पराली (फसल अवशेष) एक प्रकार का प्राकृतिक अवशिष्ट होता है, जब खेतों में फसलों की कटाई की जाती है, तो उसके बाद फसल का कुछ हिस्सा खेतों में ही शेष रह जाता है। इसे किसान काटना जरुरी नहीं समझते हैं। फसल के ऐसे अधकटे हिस्से को ही पराली कहा जाता है। इसे किसान अपने लिए अनुपयोगी मानते हैं और नयी फसल की तैयारी के लिए खेत में शेष पराली (फसल अवशेष) को जला देते हैं। पराली जलाने से कृषि, पर्यावरण, स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। वहीं पराली (फसल अवशेष) के समुचित प्रबंधन से मृदा एवं पर्यावर्णीय स्वास्थ्य संरक्षण संभव है। पराली कई प्रकार की फसलों जैसे धान, गेहूं, चना, दलहनी फसलों की कटाई के बाद पैदा होती है। यह पौधों का निचला भाग होता है। इसे किसान अनुपयोगी मान कर जला देते हैं। इस तरह उनका खेत अगली फसल बोने के लायक हो जाता है, लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में इतना प्रदूषण होता है कि पूरे उत्तर भारत के राज्यों (पंजाब और हरियाणा) में आजकल इसकी समस्या देखने को मिल रही है।

पराली जलाने के कारण

आजकल देश में धान की फसल की कटाई जल्दी और आसान करने के लिए हार्वेस्टर मशीन का उपयोग किया जा रहा है। विशेषकर पंजाब और हरियाणा में मशीनें धान का सिर्फ उपरी हिस्सा ही काटती हैं और नीचे का हिस्सा पहले से ज्यादा शेष बच जाता है। रबी की फसल जैसे गेहूं और अन्य फसल बुआई हेतु खेत खाली करने के लिए अक्तूबर और नवम्बर में पराली (फसल अवशेष) को जड़ से काटने की बजाय किसान अपना समय बचाने के लिए उस सूखी पराली को खेत में ही जला देते हैं।

पराली जलाने के प्रभाव

पराली अथवा फसल अवशेषों को जलाने से होने वाले नुक्सान को निम्न बिंदुओं के तहत देखा जा सकता है :-

वायुमंडलीय प्रदूषण

पराली को जलाने से वायुमंडलीय प्रदूषण बढ़ता है, जो औद्योगिक और वाहनों से होने वाले उत्सर्जन के बाद तीसरे स्थान पर आता है। चीन जैसे एशियाई देशों में कुल बायोमास उत्सर्जन का लगभग 60 प्रतिशत पराली जलाने से उत्पन्न होता है। इसके साथ ही, यह विश्व स्तर पर कुल बायोमास दहन (जंगल की आग सहित) के लगभग एक चौथाई भाग का निर्माण करता है। पराली (फसल अवशेष) को जलाने से कार्बन मोनोऑक्साइड, मीथेन, पोलीसाइक्लिक एरोमेटिक हाइड्रोकार्बन और वाष्पशील कार्बोनिक यौगिक जैसी विषैली गैसों का उत्सर्जन होता है। इन प्रदूषकों के आसपास के क्षेत्र में प्रचार से स्मॉग या धूम्र कोहरे की एक मोटी परत का निर्माण होता है, जो अंततः वायु की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। यह दिल्ली जैसे शहरों में वायु प्रदूषण के प्राथमिक कारणों में से एक है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव

पराली जलाने से उत्पन्न वायु प्रदूषण से त्वचा और आंखों में जलन से लेकर गंभीर हृदय एवं श्वसन सम्बन्धी रोगों जैसी विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएं देखने को मिलती हैं। प्रदूषण के उच्च स्तर से लम्बे समय तक संपर्क में मृत्यु दर में वृद्धि का कारण बनता है। अध्ययन के अनुसार, प्रदूषण के उच्च स्तर के संपर्क में आने के कारण दिल्ली शहर के निवासियों की जीवन प्रत्याशा में लगभग 6.4 वर्ष की कमी आई है।

मृदा स्वास्थ्य पर प्रभाव

यह मृदा में नाइट्रोजन, फोस्फोरस और पोटाशियम जैसे आवश्यक पोषक तत्त्वों को नष्ट कर देता है। यह मृदा के तापमान को लगभग 42 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा देता है। इस प्रकार लगभग 2.5 सें.मी. की गहराई तक महत्त्वपूर्ण सूक्ष्म जीवों को विस्थापित कर देता है या उन्हें मार देता है। यह कृषि उत्पादकता को हानि पहुंचाता है। वायुमंडल में मौजूद प्रदूषक अम्लीय वर्षा का कारण बनते हैं और लम्बे समय तक कणीय या पार्टिकुलेट प्रदूषण से संपर्क के कारण रोगाणुओं या रोगों की वृद्धि को अवसर मिलता है। पराली जलाने से उत्पन्न ग्राउंड लेवल ओजोन पौधों के चयापचय को प्रभावित करता है और पत्तियों में प्रवेश कर उन्हें नष्ट करता है, जो भारत के उत्तरी भागों में फसलों की गंभीर हानि का कारण बनता है।

✍ डॉ. सौरभ सोनी
✍ सृष्टि शेखर

प्रबंधन के विभिन्न विकल्प

पराली से बनाएं आर्गेनिक खाद

अगर आपके सामने भी पराली के निपटान की समस्या है, तो आप इससे आर्गेनिक खाद तैयार कर सकते हैं। पराली से खाद बनाने के लिए सबसे पहले इसे एक गड्ढे में गलाना पड़ता है। इस खाद बनाने की यूनिट में केंचुए डालकर ढक सकते हैं। कुछ दिनों में इससे खाद तैयार हो जाएगी। इस खाद को अपने खेत में इस्तेमाल कर सकते हैं या जरूरत नहीं होने पर किसी और को बेचकर पैसे भी कमा सकते हैं।

पराली से भूसा बनाएं

अगर खेत में धान की कटाई के बाद पराली बची हुई है, तो इसका सबसे बेहतर और आसान उपाय है कि पराली का भूसा बना लें। इसके लिए थ्रेशिंग मशीन की मदद लेकर भूसा तैयार कर सकते हैं। इसे पशुओं को खिलाने के लिए चारे के साथ प्रयोग कर सकते हैं या इसे बेच भी सकते हैं। इससे पराली जलानी नहीं पड़ेगी और भूसा बेचने से अच्छी खासी कमाई भी हो जाएगी।

जैव अन्जायिम पूसा

पूसा नामक जैव अन्जायिम को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा पराली दहन के एक समाधान के रूप में विकसित किया गया है। छिड़काव करते ही यह अन्जायिम 20-25 दिनों में पराली को विघटित कर खाद में बदलना शुरू कर देता है। इससे मृदा और भी बेहतर हो जाती है। यह अगले फसलचक्र के लिए जैविक कार्बन एवं मृदा स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है।

हैप्पी सीडर- पराली को जलाने की बजाय हैप्पी सीडर नामक एक ट्रैक्टर माउंटेड मशीन का उपयोग किया जा सकता है। यह धान के डंठल को काटकर ऊपर उठाती है, खाली भूमि पर गेहूं के बीज रोपती है और फिर उसके ऊपर इन डंठलों को मल्च या पलवार की तरह बिछा देता है।

अन्य वैकल्पिक प्रयोग

पराली का अन्य कई तरीकों से भी उपयोग किया जा सकता है, जैसे पशु चारा, कम्पोस्ट खाद, ग्रामीण क्षेत्रों में छप्पर निर्माण, पैकिंग सामग्री के लिए, कागज तैयार करने के लिए या बायोइथनोल तैयार करने के लिए।

पराली जलाने से उत्पन्न वायु प्रदूषण से त्वचा और आंखों में जलन से लेकर गंभीर हृदय एवं श्वसन संबंधी रोगों जैसी विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएं देखने को मिलती हैं। प्रदूषण के उच्च स्तर से लम्बे समय तक संपर्क में मृत्यु दर में वृद्धि का कारण बनता है।

फलदार पौधों में तापमान स्ट्रेस : असर, बचाव और समाधान

तापमान एक ऐसा पर्यावरणीय विषय है जो सीधे-सीधे पौधों की बढ़वार, उत्पादन और जीवन को प्रभावित करता है। बहुत ज्यादा गर्मी या ज्यादा ठंडक दोनों ही स्थिति में फल पौधों पर बुरा असर पड़ता है, जिससे पैदावार और फल की गुणवत्ता कम हो जाती है। बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण अब यह समस्या और भी गंभीर हो गई है।

तापमान स्ट्रेस के प्रकार

गर्मी से होने वाला स्ट्रेस (हीट स्ट्रेस)

जब तापमान 30-35°C से ऊपर चला जाता है, तो पौधों को हीट स्ट्रेस झेलना पड़ता है।

- 30-35°C: पत्तियों में फोटोसिंथेसिस कम हो जाता है, जिससे पौधे कमजोर पड़ जाते हैं।
- 35°C से ज्यादा : कोशिकाएं डैमेज होती हैं, परागण कम होता है और फल बनने में दिक्कत आती है।
- 40°C से ज्यादा : पौधों की कोशिकाएं मर सकती हैं, जिससे पौधा सूख भी सकता है।

ठंड से होने वाला स्ट्रेस

- ठंडी हवा (0-10°C): कोशिकाएं जमने लगती हैं, और फल पकने में दिक्कत आती है।
- बर्फ जैसी ठंडक (<0°C) : पौधे में बर्फ के क्रिस्टल बनने से कोशिकाएं फट जाती हैं।

तापमान स्ट्रेस का असर

गर्मी का असर

गर्मी से पत्तियों में मौजूद रंग (क्लोरोफिल) कम हो जाता है, जिससे पौधा खाना नहीं बना पाता और फल कम आते हैं। पराग की ताकत भी कम हो जाती है।

✍ आकृति बन्याल

ठंड का असर

ठंड से पौधे की कोशिकाओं में पानी की कमी हो जाती है, जिससे पत्तियों और फलों में डैमेज दिखता है- जैसे कि नींबू और केले में काले दाग, पकने में रुकावट और खराब स्वाद।

पौधों की सुरक्षात्मक प्रतिक्रिया

बाहरी बदलाव

- **छोटी पत्तियां, मोटी सतह :** कम पानी की जरूरत और कम नुकसान।
- पत्तियों पर रोएं : तेज़ धूप से बचाव।
- गहरी जड़ें : ठंडी नमी वाली मिट्टी से पानी लेना।
- अंदरूनी (जैविक) बदलाव
- एंटीऑक्सीडेंट्स का उत्पादन : जो पौधों की कोशिकाओं को बचाते हैं।
- हार्मोन कंट्रोल : जैसे ABA हार्मोन स्ट्रेस में stomata को बंद करता है और पानी की बचत करता है।
- हीट शॉक प्रोटीन और कोल्ड रेस्पॉन्स प्रोटीनरू गर्मी और ठंड दोनों में कोशिकाओं की रक्षा करते हैं।
- समाधान और प्रबंधन
- तापमान झेलने वाली किस्में
- नई किस्में तैयार की गई हैं जो ज्यादा गर्मी या ज्यादा ठंड को सहन कर सकती हैं, जैसे गर्मी सहन करने वाला टमाटर।
- खेती के तरीके
- शेड नेट्स और मल्चिंग : मिट्टी का तापमान संतुलित रखना।
- फोलियर स्प्रे : जैसे काओलिन और सैलिसिलिक एसिड से स्ट्रेस कम होता है।
- स्मार्ट सिंचाई : सही मात्रा में पानी देना।
- जैव तकनीकी उपाय
- जेनेटिक इंजीनियरिंग : स्ट्रेस सहनशील जीन डालकर पौधों को मजबूत बनाना।
- CRISPR तकनीक : ठंड सहनशीलता बढ़ाने वाले जीन डालना। तापमान स्ट्रेस फलदार फसलों के लिए एक बड़ी चुनौती है, लेकिन इसके पीछे के कारणों को समझकर और सही तकनीक अपनाकर इससे काफी हद तक निपटा जा सकता है।

खेती में नई किस्में, स्मार्ट फार्मिंग तकनीक और जैव तकनीकी उपाय अपनाकर किसान अपने बागानों को स्ट्रेस से बचा सकते हैं और पैदावार बढ़ा सकते हैं।

तापमान एक ऐसा पर्यावरणीय विषय है जो सीधे-सीधे पौधों की बढ़वार, उत्पादन और जीवन को प्रभावित करता है। बहुत ज्यादा गर्मी या ज्यादा ठंडक दोनों ही स्थिति में फल पौधों पर बुरा असर पड़ता है, जिससे पैदावार और फल की गुणवत्ता कम हो जाती है। बदलते मौसम और जलवायु परिवर्तन के कारण अब यह समस्या और भी गंभीर हो गई है।

संस्कृति

सतलुज घाटी के तीज-त्योहारों का अभिन्न अंग : जति गीत

सतलुज घाटी के क्षेत्रों में वर्षभर के व्रत पर्वो, तीज-त्योहारों, सोलह संस्कारों तथा विभिन्न समारोहों में विष्णु पद, जति गीतों का खूब प्रचलन रहा है। इन नृत्य गीतों में यहां की नर-नारी भरपूर आनंद लेकर समारोह में खूब रास डालते हैं। प्राचीन काल से हमारे समाज में लोक साहित्य की परंपराएं स्वच्छंद रूप से प्रचलित है। लोक साहित्य में विष्णु पद व जति गीतों की व्यापकता है तथा इसकी भरमार कदम-कदम पर दिखाई पड़ती है। सतलुज घाटी में लोक गीतों का प्रचलन अक्सर बड़े पैमाने पर देखा गया है, जिसमें समाज के आदर्शवाद का यथार्थ रूप से उल्लेख किया गया है। भले ही इसका लिखित इतिहास नहीं है परन्तु तीज त्योहारों में इस संस्कृति के दर्शन तिरोहित होते हैं। लोक साहित्य की यह अक्षुण व जीवन्त संस्कृति मानव जीवन को बड़ा सुकून पहुँचाती है।

यह मानव की दिशा तथा जीवन शैली को उल्लासित व आनंदित करती है। यहां का लोक साहित्य हमारे व्रत, पर्वों व तीज-त्योहारों का विशेष आधार है। प्रत्युत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक तथा एक समुदाय से दूसरे समुदाय तक पहुंचने वाली लोक साहित्य की गूढ़ परंपराएं वर्तमान समाज तक पहुंची है।

इस संस्कृति ने अपने पग इतने प्रसारित किए हैं कि हमारे समाज का समूचा वातावरण न केवल हर्षित व रोमांचित हुआ बल्कि मानव जाति को भी भक्ति की ओर अग्रसर करवाया। विष्णुपद व जति गीतों ने हमारे समाज में परस्पर मेल-जोल, आपसी भाईचारा तथा सुख-दुख का समन्वय स्थापित किया है।

सतलुज घाटी में विष्णु पद व जति गीतों की खासियत यह है कि यहां प्रत्येक तीज-त्योहारों, व्रत-पर्व तथा सोलह संस्कारों में विष्णुपद, जति गीतों का सम्पुट लगाकर लोग मस्ती में झूमते हैं।

ये गीत सालभर के मुख्य त्योहारों शिवरात्रि, होली, रामनवमी व जन्माष्टमी इत्यादि पर्व तथा विशेष समारोह में गाए जाते हैं। इनमें

वस्तुत: जति गीत जो विष्णु पद की तर्ज पर गाए जाने वाले गीत हैं अर्थात जति विष्णु पद की ही अनुकृति है। अंतत: कह सकते हैं कि विष्णु पद व जति गीतों का सृजन भक्तिकाल के रचयिताओं द्वारा किया गया है। यह प्राचीन संस्कृति हमें विरासत में मिली है जिसको कायम रखना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व बनता है।

बारहमाही के गीत भी स्थानीय जति की तर्ज पर गाये जाते हैं। इन गीतों को विष्णुपद इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें भगवान की लीलाओं का वर्णन, उनके आदर्श चरित्र तथा मर्यादाओं का कवियों ने गीतिकाव्य शैली में गुणगान किया है।

स्थानीय भाषा में गाए जाने वाले गीतों को जति गीत कहा गया है। जति शब्द यति का तद्भव रूप है जिसका शाब्दिक अर्थ सन्यासी, योगी है। स्थानीय गीतों के माध्यम से इसका लक्ष्य मनुष्य मात्र को एक संत की सनातनी शिक्षा से सज्जन व्यक्ति बनवाना है, यही भाव जति गीतों से स्पष्ट झलकता है।

प्रस्तुत है जति गीत.....

नौदीये किनारे कान्हा खेल रचा.
बाडू एजा कोट बनाया रे,
ढाई मुठी चुंगी ए बाडू ए,
बाडू एजा कोट बनाया रे,
उझू गै बहुए चंद्रावली ए,
देंही आं बकाओ दे जाणा रे,
कैणा कै उझू शाशौ नाँगी डूंगी,
पैरे गयी पोलडू ऐ नाँगी रे,
पैरा लै पोलाडू मैं देऊंगी,
देही आ बिकाऊँदी जाणा रे,
किधी पाया मेरौ बाजु बँधा,
किधी पाया गला मोती हारा रे,
खिलिए झूला तेरा बाजू बँधा,
डाबी डाया गला मोती हारा रे,
खोल पटारुआ बाजू बँधा,
दही आंदे बेचदे जाना रे,
खोटी दही शाशौ कोई ना लेंदे,
दही माँझे रालदे पानी रे,
जेठे शाढ़े पौडो ए धूपू आ,
दही आं दे रौही जांदो पानी रे,
आगू बैशो कन्हीआ जगाती,
दाणा देंदी तुम हे गुजरी,
सूनौ दाणा देना रूपौ दाणा,
दहिया रा दाणा ना देना रे,
कौण खेले इस पिंघडू आ,
कौण जै देंदा झलारा रे,
कान्हा खेले इस पिंघडू आ,
पोण जै देंदा झलारा रे।

तात्कालिक समाज में आदर्शवाद तथा साधुवाद को स्थापित करने में इन गीतों की सत्यता सिद्ध होती है

विष्णुपद व जति गीतों को चार चरणों में बिस्ताऊक, नटाऊक, छैड़ी तथा नाटी गीतों में बांटा गया है। इनमें बिस्ताऊक गीत में ताल एवं लयात्मकता धीमी गति से चलती है जिसमें नर्तक भक्ति भाव में उद्वेलित होता है। नटाऊक गीत की लय में नर्तक मध्यम गति में नाचने का आनंद लेता है जबकि छैड़ी गीतों में तीव्रता आती है जिसमें नाचने वाला तेज गति से नाचता हुआ थक जाता है फिर विश्राम करता है। अंत में चौथे चरण में नाटी गीत चलता है जो प्रायरू प्रचलित नाटी की तर्ज पर गाया जाने वाला गीत है। यह नाटी जति गीत का हिस्सा माना जाता है।

साहित्य समाज का दर्पण है। यह उक्ति इस बात को चरितार्थ करती है कि हमारा लोक साहित्य किसी भी समाज की संस्कृति और पहचान का विशेष हिस्सा है जो समाज के जीवन और विचारों को दर्शाता है। लोक साहित्य के अध्ययन से समाज के बारे में बहुत सी बातें पता चलती हैं. इसके महत्त्व को इस प्रकार समझा जा सकता है कि लोक साहित्य में समाज की मान्यताएं, रीति-रिवाज,त्योहार, कथाएं,गीत, कहावतें, मुहावरे आदि का जिक्र होता है। लोक साहित्य से समाज के नैतिक स्तर का पता चलता है। चाहे इसमें स्त्रियों के मंगलचरण गीत हो जो पौराणिक काल की परम्परा की सत्यता को सिद्ध करते हो।

लोक साहित्य में समाज के जीवन के विभिन्न पक्षों की झलक मिलती है।

इसमें तात्कालिक समाज के परंपरागत मूल्यों और विचारों की

उमाशंकर दीक्षित

अभिव्यक्ति होती है तथा इससे समाज के आदर्श रूप और आध्यात्मिक चेतना को बनाए रखने में सहायता मिलती है।

आमूमन लोक साहित्य में समाज के विश्वास और आस्था जैसे मूल्यों का प्रसार होता है साथ में समाज के जीवन संघर्ष को भी इसमें उकेरा जाता है जो नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बनता है।

लोक साहित्य ने समाज के मनोबल को सदा ऊंचा उठाने का काम किया गया है। अतः इसे संस्कृति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग माना जा सकता है क्योंकि इसमें लोक संस्कृति के सभी अंगों की झलक मिलती है। किसी भी समाज की मान्यताएँ, अंधविश्वास, त्योहार, रीति-रिवाज, गीत, गाथा, कि्स्से-कहानियाँ, कहावतें, मुहावरे आदि का परिचय हमें लोक साहित्य में मिलता है।

प्रस्तुत है विष्णु पद जो प्राचीन कवि सूरदास द्वारा रचित है...

ष्जो जन ऊधो मोहि ना विसारो!
मैं ना विसारूछिन्न एक घड़ी रे!!
जो मोहि भजूँ भजूँ मैं बांकू!
सुख राखूँआनंद घड़ी रे!!
जन्म जन्म के फंदे काटूं!
दे डारू बैकुंठ पूरी रे!!
भारी सभा में द्रपद सुता को!
चीर दिए जगदीश हरि रे!!
भारत में भंवरी के अंडे!
राख दिए गजघण्ट धरी रे!!
दूर्वासा अंबरीश घर आये!
चक्र सुदर्शन रक्षा करी रे!!
खम्ब फोड़ हिरणाकुश मारो!
भक्त प्रहलाद की रक्षा करी रे!!
सूरदास प्रभु भक्त तुम्हारे!
जगरनाथ जगदीश हरि रे!!ष

वस्तुतः जति गीत जो विष्णु पद की तर्ज पर गाये जाने वाले गीत हैं अर्थात जति विष्णु पद की ही अनुकृति है। अंततः कह सकते हैं कि विष्णु पद व जति गीतों का सृजन भक्तिकाल के रचयिताओं द्वारा किया गया है। यह प्राचीन संस्कृति हमें विरासत में मिली है जिसको कायम रखना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व बनता है।

सहज व स्पष्टवादी कवि : कबीरदास

रामानंद शिष्य कबीर के काव्य में शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रतिपादन मिलता है। यह प्रतिपादन दार्शनिक नहीं व्यवहारिक है और है अनुभूति जनक। कबीर के मत में ब्रह्म ही सत्य है और सब कुछ मिथ्या है। उसका वर्णन असंभव है, निर्गुण व सगुण दोनों से परे है। ज्ञान, भक्ति और कर्म से उसे प्राप्त नहीं कर सकते। तीनों का समन्वय करके भक्त उसे प्राप्त कर सकता है। आपा मेट्त जीवत मरे तो पावत करतार उस करतार को मन ही माही. विसूरणा पड़ता है। उसको प्राप्त करना हंसी खेल नहीं है :-

काम क्रोध तृष्णा तजै ताहि मिले भगवान।

भक्त उसके दर्शन हृदय में कर लेता है और उसके दर्शन कर लेने पर उसे सब कुछ ब्रह्म मय दृष्टिगत होता है :-

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई,मैं भी हो गई लाल।।

भक्त का वह लाल ब्रह्म भारी और हल्के से परे है इंद्रियातीत है, उसे भक्तः-

सैना बैना कहि समझाऊं, गूंगे का गुरु भाई।

कबीर ने उसे पिता माता पति आदि विभिन्न रूपों में देखा है :-

हरि जननी मैं बालक तोरा।

पूत पियारा पिता को गौहनि लागो धाई।

हमारे घर आए हो, राजाराम भरतार।

कबीर के मत में जीव ब्रह्म का ही अंश है, अंश ही नहीं स्वयं ब्रह्म ही है,जो माया के कारण पश्थक प्रतीत हो रहा है :-

जल में कुंभ,कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।

फूटा कुंभ जल जल ही समाना, यह तथ कथै गयानी।। ब्रह्म के किसी अंश पर माया (अज्ञान)का पर्दा छा जाता है तब,अंश जीव कहलाता है वह जीव स्वरूप को भूल जाता है और संसार में लिप्त होकर दुख का अनुभव करता है। ज्ञान के प्रकाश के द्वारा जीव को अपने रूप का भास होने लगता है और वह ब्रह्म की ओर उन्मुख होने लगता है तथा पूर्ण ज्ञान प्राप्त होने पर वह ब्रह्मलीन हो जाता।

कबीर काव्य में रहस्यवाद अद्वैतवाद के अनुसार जब आत्मा परमात्मा के संबंध को, प्रेमी-प्रेयसी के प्रेम को, रती के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है तब उस भावनात्मक संबंध की भावनात्मक अभिव्यक्ति रहस्यवाद कहलाती है। संसार के नियम सूर्य का उदय अस्त मेघमाला में चंचल दामिनी,आत्मा में इनके नियामक और रचयिता के प्रति जिज्ञासा की भावना उत्पन्न कर देते हैं। यह कौतूहल रहस्यवाद का प्रथम सोपान है। जब आत्मा परमात्मा की झलक पा लेती है तब उसमें विरह की तीव्र वेदना उत्पन्न होती है और वह अपने प्रियतम से मिलने से का प्रयत्न करती है। कबीर के सुतल नारी में यही भावना निहित है।

आँखड़ियाँ झांई पड़ी पंथ निहारि निहारि।

पपिहा ज्यों पिव पिव करे, कब हो मिलेगो राम।।

यही रहस्यवाद का द्वितीय सोपान है।

जब आत्मा परमात्मा को प्राप्त कर लेती है:-

'रामदेव मोरे पाहुनै आए, मैं जोबन बदमाती।

कहे कबीर हमें ब्याही चले हैं पुरुष एक अविनाशी।। तब आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है। दोनों की पृथक सत्ता समाप्त हो जाती है यही रहस्यवाद की अंतिम स्थिति है।

कबीर आवागमन के सिद्धांत को मानते थे अहिंसा जीव दया करुणा और प्रेम उनके आदर्श थे। संतोष उनके लिए सबसे बड़ा धन था, बाहरी आडम्बर से उन्हें चिढ़ थी। हृदय की पवित्रता पर उन्हें विश्वास था। नाम स्मरण में भी हृदय की पवित्रता मुख्य थी, गुरु उनके गोविंद से बड़े थे क्योंकि गुरु रूठे नहीं ठौर। छुआछूत उन्हें अमान्य थी परम ब्रह्म के सम्मुख सर्वस्व समर्पण उनका अंतिम लक्ष्य आदर्श था। कबीर काव्य का भाव पक्ष :-यदि कविता हृदय की वस्तु है तो कबीर महाकवि हैं। वे शिक्षित नहीं थे, मसि कागद उन्होंने छुए भी नहीं, केवल अनुभूति एवं बहुश्रुत ज्ञान का ही अवलंब था उसी के सहारे कबीर का

महान व्यक्तित्व चमक गया।

कबीर भक्त थे अतः भगवान के प्रेम में मग्न उनके हृदय की भावना की अभिव्यक्ति किसी भी काव्य के गौरव की अभिव्यक्ति हो सकती है। उनके काव्य में जीवन की निष्कपटता, स्पष्ट्वादिता और अनुभूति का समावेश है। कबीर की कविता हृदय की कविता है। हृदय की कविता को साहित्य की सीमित शब्दावली बाँध नहीं सकती, यदि उनकी कविता मर्यादा के बंधन में बँध जाती तो उसमें प्रेषणीयता, समाप्त हो जाती। छंद तो केवल माध्यम रहा है भाषा अभिव्यक्ति का।

वास्तविकता यह है कि वह भाषा तथा रीति से मुक्त होकर चले हैं मर्यादा भावों की हत्या कर देती है,इसलिए कबीर के भाव रीति के पिंजरे में नहीं रहे। कला कबीर के भावों का साथ नहीं दे सकी। कबीर की जैसी सशक्त अभिव्यक्ति को काव्य की कोमल कृतिम नागरिक भाषा सवार ही नहीं सकी। उसे संवारने के लिए सहज सुंदर ग्रामीण भाषा की आवश्यकता थी। हुआ भी यही, न तो कबीर की भाषा को नाम दिया जा सकता न उनके शब्दों में मात्रा और वर्णों की गणना की जा सकती है और ना अलंकारों की भरमार ही मिलती है। इसी कारण कबीर की भाषा सधुक्ड़ी भाषा है पंचवेली भाषा है, उन्हें जिस भाषा का शब्द मिला ले लिया। छंद पुरा है या नहीं इसकी उन्हें चिंता नहीं हुई। अलंकार उनके कविता में है किंतु सहज है सच बात तो यह है उनके भाव ने भाषा की अभिव्यक्ति की है भाषा के भाव की नहीं, भाषा अधूरी है, क्योंकि उच्चारण मांगती है, भावपूर्ण हैं क्योंकि अनुभूति चाहते हैं।

हिंदी साहित्य में कबीर का स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण है। उनकी कविता कविता के लिए नहीं थी। कबीर का स्थान हिन्दी साहित्य में बहुत ऊँचा है। उनकी भक्ति की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति है। कबीर वीरगाथा काल के तूफान के पश्चात की शैली के कवि थे। तूफान से भटके हुए लोगों को रास्ता दिखाने के लिए वह रहबर थे, हिन्दी साहित्य में कबीर जैसा सशक्त और क्रांतिकारी अन्य कवि नहीं हुआ। इसका कारण उस समय की धार्मिक

राम गोपाल राही

सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियां थी। मुसलमानों ने भारत के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया था, उनके सीधे हाथ में तलवार थी और बाएं में कुरान। हिंदुओं में इतना साहस रह नहीं रह गया था कि आक्रमणकारी शासक का सामना कर सके। प्रत्यक क्षण उनकी रोटी, बेटी और चोटी संकट में रहती थी। न जाने कब किस सरदार की दृष्टि पड़ जाए और वह उनका धन छीन ले, सुंदर स्त्री को उठा ले जाए अथवा किसी मुल्ला के कहने से कलमा पढ़ने के लिए विवश कर दे। धार्मिक-सामाजिक दशा और भी बुरी थी धर्म और समाज में आडंम्ब थे तथा मूल सार तत्व का नितांत अभाव था। साधु बन जाना बहुत सरल था। अधिकांश लोग इसलिए साधु बनते थे कि समाज में आदर और वैभव को प्राप्त कर सके। तत्वज्ञान की जिज्ञासा उनमें नहीं थी। छुआछूत और ऊंच-नीच का भेद चरम सीमा पर था। इस्लाम की अपनी अलग संस्कृति थी, जो भारतीय संस्कृति से तनिक मेल नहीं खाती थी।

कबीर ने राग, द्वेष, छल व प्रपंच आदि का विरोध करके समाज में क्रांतिकारी मान्यताएं स्थापित की। ऐसी परिस्थितियों में कबीर जैसे सशक्त, स्पष्टवादी, निर्भय, सहज व क्रांतिकारी की ही आवश्यकता थी जो हिंदी साहित्य को प्राप्त हुआ। कबीर का जन्म स्थान लहरतारा है और जीवन का मुख्य भाग काशी में व्यतीत हुआ उन्होंने लिखा भी 'काशी में हम प्रकट भए है रामानंद चेताए अस्तु'। उपयुक्त विवरण से सिद्ध हो जाता है कि कबीर काशी से थे, उन पर हिंदू रीति व नीति संस्कृति का प्रभाव भी गहरा था।

कबीर के जन्म के संबंध में कहा जाता है, चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार एक ठाट ठए।

जेठ सुदी बरसाय को, पूर्णमासी प्रगट भए।

श्री माता कामना देवी मंदिर

श्री माता कामना देवी का प्राचीन नाम क्रीझा देवी (देवी का खेल स्थान) था। 'श्री कामना माता' नाम तब लोकप्रिय हुआ जब भक्तों की मनोकामनाएँ यहाँ पूरी होने लगीं। यह मंदिर प्रॉस्पेक्ट हिल (2150 मीटर), जो शिमला की दूसरी सबसे ऊँची पर्वत चोटी है, पर स्थित है। यहाँ देवी शक्ति की पूजा महा दुर्गा, महा काली और महा सरस्वती के रूप में की जाती है। इन तीन देवियों के साथ भगवान श्री गणेश, भगवान शिव और देवी की रक्षक शक्तियाँ भगवान हनुमान और भगवान भैरव भी मंदिर में विराजमान हैं। यह मंदिर मूल रूप से गोरखा शासन काल (19 वीं शताब्दी) में ऑब्जर्वेटरी हिल पर निर्मित हुआ था (वह पहाड़ी जहाँ अब इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज स्थित है)। 1880 के दशक में ब्रिटिश सरकार ने वायसराय की ग्रीष्मकालीन निवासस्थली को ऑब्जर्वेटरी हिल पर बनाने का निर्णय लिया और मूर्तियों को प्रॉस्पेक्ट हिल पर स्थानांतरित करने का आदेश दिया। श्री धज्जू राम जी, जो वर्षो से इस पर्वत पर तपस्या कर रहे थे, ने मूर्तियों की सेवा और स्थापना की जिम्मेदारी ली। वे एक महात्मा थे और इस एकांत पर्वत पर तपस्या कर रहे थे। उन्हों ने मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा की और इस मंदिर की स्थापना की। श्री धज्जू राम जी की समाधि इस मंदिर से सटे जंगल में स्थित है। इसके बाद उनके पोते, प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री सीता राम जी ने 1932 में मंदिर का पुर्ननिर्माण कार्य करवाया। वर्तमान में श्री धज्जू राम जी की छठी पीढ़ी इस मंदिर की सेवा कर रही है।

साक्षी ठाकुर

स्मृतियां

नगमा निगार - प्रेम धवन

हरफनमौला जी हां यही नाम देते हैं हम जनाब प्रेम धवन साहेब को। इस जहान में ऐसे बहुत से लोग मिल जाएंगे जो हरफनमौला होते हैं। मतलब एक नहीं कई तरह के काम करने में सक्षम, माहिर और कुशल। बस उनमें से ही एक थे गीत, संगीत और नृत्य के महारथी जनाब प्रेम धवन जी। इन्होंने गीत तो लिखे ही बेमिसाल बल्कि उनको संगीत के सुरों में भी बखूबी पिरोया।

वैसे तो फिल्मोद्योग में ऐसे अनेक महारथी गीतकार अपनी पैरवी सदियों से करते चले आ रहे हैं। लेकिन कुछ महारथियों में से एक नाम शीर्ष पर है। और वह नाम है जनाब 'प्रेम धवन' साहेब का। जी हां प्रेम धवन ऐसा ही एक नाम है जिनकी कलम की नोक से ओजस्वी और भावुक शब्दों की सरिता बही है। प्रेम उन गीतकारों में थे जिन्होंने जितना लिखा, सार्थक लिखा, सकारात्मक लिखा और संवेदनशील होकर लिखा। साहित्य में गहरी अभिरुचि के बाद भी उनके गीतों में सरल काव्यात्मकता नजर आती है, जटिल शब्दों की भरमार नहीं। 13 जून 1923 को अंबाला में जन्मे प्रेम धवन ने लाहौर के एफ सी कॉलेज से ग्रेजुएशन किया। मशहूर गीतकार साहिर लुधियानवी उनके सहपाठी थे और भारत के पूर्व प्रधानमंत्री इंद्रकुमार गुजराल इनसे सीनियर रहे। साहिर और प्रेम यूनियन के सक्रिय कार्यकर्ता भी रहे। जबकि कॉलेज की पत्रिका में दोनों ने जमकर लिखा। साहिर गजल रचते थे और प्रेम धवन गीत। प्रेम धवन आगे चलकर कांग्रेस पार्टी से भी जुड़े। शिक्षा के बाद 'पीपुल्स थियेटर ग्रुप में शामिल हुए। जिसके द्वारा चार वर्षों तक नृत्य और संगीत का प्रशिक्षण लिया। कम लोग जानते हैं कि प्रेम धवन ने लगभग 50 फिल्मों में नृत्य निर्देशन भी किया है। फिल्म 'नया दौर' के गीत 'उड़े जब-जब जुल्फें तेरी कि गोरियों का दिल मचले जिंद मेरिए' में प्रेम धवन के ही नृत्य निर्देशन का कमाल था। फिल्म 'दो बीघा जमीन' के गीत 'हरियाला सावन ढोल बजाता आया' में तो प्रेम खूब थिरके भी हैं। जब थियेटर ग्रुप वक्त से पहले ही बिखरा, तो लेखिका इस्मत चुगताई बांबे टॉकीज ले गईं। जहां फिल्म 'जिद्दी' के लिए पहला ब्रेक मिला। गायिका लता मंगेशकर का 'चंदा जा रे जा रे' (संगीत- खेमचंद प्रकाश) पहला हिट गीत इसी फिल्म में था। यहां से बांबे टॉकीज ने गीत लेखन और नृत्य निर्देशन के लिए उन्हें अनुबंधित कर लिया। अनुबंध के बाद जब स्वतंत्र लेखन किया, तब संगीतकार अनिल बिस्वास, सलिल चौधरी, मदनमोहन और चित्रगुप्त के साथ अच्छा तालमेल रहा। आखिरी बार प्रेम ने फिल्म ' अप्पूराजा' के लिए लिखा। भावुक इतने थे कि अपनी लोरी 'तुझे सूरज कहूं या चंदा, तुझे दीप कहूं या तारा, मेरा नाम करेगा रोशन' को रचते हुए कई बार रो पड़े थे। याद दिलाता चलूं निर्माता-निर्देशक देवेंद्र गोयल की 1969 में आई फिल्म 'एक फूल दो माली' का यह गीत मनाली हिमाचल प्रदेश के अलेऊ स्थित उस समय के मशहूर आई टी डी सी के होटल द अशोका में अदाकार बलराज साहनी और एक बाल कलाकार पर फिल्माया गया था, जिसका मैं स्वयं साक्षी हूं। जैसा कि कहा जाता रहा है कि जनाब प्रेम धवन फिल्म के किरदार को शिद्दत से महसूस करने के बाद ही लिखते थे। फिल्म 'एक साल' में नायिका, नायक अशोक कुमार को चाहती है। जब नायक महसूस करता है और लौटकर आता है तब वह कैंसर की मरीज होकर मृत्युशैया पर है। इसे अपने दिल की गहराई में उतारकर उन्होंने यह गीत रचा था कि, 'सब कुछ लुटा के होश में आए तो क्या किया, दिन में अगर चिराग जलाए तो क्या किया ले-ले के हार फूलों का आई तो थी बहार, नजरें उठा के हमने ही देखा न एक बार .... देखा न एक बार आंखों से अब ये पर्दे हटाए तो क्या किया' (तलत महमूद)

जरा याद करें कहां गए हैं ऐसे गीतकार? मगर अफसोस, सन 2001 की 7 मई को मुंबई के जसलोक अस्पताल में प्रेम धवन हृदय घात से चल बसे। दिल को छू लेने वाले गीतों में जनाब प्रेम धवन की यादें हमेशा रची-बसी रहेंगी।

उनकी जादुई कलम से निकले नगमों की फहरिस्त कुछ यूं है ;

- बोल पपीहे बोल रे (आरजू)
- सीने में सुलगते हैं अरमां (तराना / तलत महमूद)
- चंदा मामा दूर के (वचन संगीतकार रवि)
- दिन हो या रात हम रहें तेरे साथ यह हमारी मरजी (मिस बांबे)
- जिंदगी भर गम जुदाई का हमें तड़पाएगा (मिस बांबे)
- छोड़ो कल की बातें कल की बात पुरानी, नए दौर में लिखेंगे हम मिलकर नई कहानी, हम हिंदुस्तानी, हम हिंदुस्तानी (हम हिन्दुस्तानी / सुनील दत्त)
- अखियन संग अखियां लागी (बड़ा आदमी)
- ऐ मेरे प्यारे वतन ऐ मेरे बिछड़े चमन तुझ पर दिल कुर्बान (काबुलीवाला / मन्ना डे/ बलराज साहनी)
- तेरी दुनिया से दूर चले हो के मजबूर (ज़बाक / महिपाल)
- महलों ने छीन लिया बचपन का (ज़बाक)
- ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम (शहीद / मनोज कुमार)
- मेरा रंग दे बसंती चोला (शहीद / मनोज कुमार)
- तेरी दुनिया से हो के मजबूर चला (पवित्र पापी / परीक्षित साहनी)

जबकि और भी बहुत सारे गीत प्रेम धवन साहेब की अमानत हैं हमारे दिलों में।

नगमा निगार जनाब प्रेम धवन के बारे में अनेक जानकारियां उनके करीबी दोस्तों, उनके साथ काम करते उनके सहयोगी संगीतकारों और निर्माता निर्देशकों ने जो कभी साझा की आईए उनपर भी नजर डालें।

उनके करीबी दोस्त निर्माता-निर्देशक, गीतकार, पटकथा एवं संवाद लेखक मनोज कुमार ने प्रेम धवन साहेब को याद करते हुए कहा

- 'बहुत बड़ी हस्ती थे वे पर नाम नहीं हुआ उतना जितना उन्हें मिलना चाहिए था।'

प्रेम धवन ने मनोज कुमार के शब्दों से प्रेरित होकर देशभक्ति गीतों की रचना की, जैसे 'ऐ वतन ऐ वतन' और 'मेरा रंग दे बसंती चोला'

'ए वतन, ए वतन' और 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में हैं' (राम प्रसाद बिस्मिल) जैसे बेहतरीन गानें देने वाले प्रेम धवन का नाम हमेशा से हिंदी फिल्म जगत के मशहूर गीतकारों में लिया जाता है। लेकिन गीतकार होने के साथ-साथ ही वे एक परिपक्व और मंझे हुए संगीतकार भी थे, ऐसा उनकी बनाई गई फिल्मी नगमों की धुनें हमें बताती हैं।

गीतकार प्रेम धवन का नाम सुनते ही मनोज कुमार ने कहा था - वाह प्रेम धवन मैं जब नया-नया आया था, तब धवन साहेब मेरे भाई की फिल्मों में गाने लिखते थे और डांस डायरेक्ट करते थे। वे एक्टर भी थे। उन्होंने विमल दा राय की फिल्म 'दो बीघा जमीन' में खुद नृत्य किया है। मैं जब शहीद फिल्म के लिए प्रेम धवन के पास गया। मैंने कहा कि प्रेम धवन जी शहीद फिल्म में म्यूजिक देना है। उन्होंने कहा कि क्या बात कर रहे हो। मैं म्यूजिक कैसे दूंगा। मेरी दाल-रोटी चल रही है गाने लिखकर उसे चलने दो। मैंने कहा कि मैं फिल्म बना रहा हूं। अगर आपने म्यूजिक नहीं दिया तो मैं यह फिल्म ही नहीं बनाऊंगा। फिर तो मेरी जिद के आगे वह मान गए। उन्होंने फिल्म शहीद के लिए क्या लिरिक्स दिए कि 'शहीद' के गीत अमर हैं और रहेंगे।

कुछ रुककर मनोज कुमार फिर कहने लगे - 'उस समय वे मुंबई स्थित जुहू एरिया में रहते थे लेकिन बाद में टाऊन में रहने चले गए। उन्होंने शुरू में साहिर साहब और ओ. पी. नय्यर को भी अपने पास रखा। उन्होंने क्या गीत लिखे हैं- 'सीने में सुलगते हैं अरमान', 'आंखों में उदासी छाई है..' 'ए मेरे प्यारे वतन', सरफरोशी की तमन्ना, जो भी है हम तो लुट गए तेरे प्यार में, ऐ वतन ऐ वतन मुझ को तेरी कसम..., मेरा रंग दे बसंती चोला....।

कम लोग जानते हैं कि प्रेम धवन ने लगभग 50 फिल्मों में नृत्य निर्देशन भी किया है। फिल्म 'नया दौर' का 'उड़े जब-जब जुल्फें तेरी कि गोरियों का दिल मचले जिंद मेरिए' प्रेम धवन के ही नृत्य निर्देशन का कमाल था।

वे जितने गुणी थे उतना उनका नाम नहीं हुआ। वे गीतकार, संगीतकार, डांस डायरेक्टर आदि सभी कुछ थे। अपनी हिंदी भाषा यानि अपने देश की भाषा द्वारा विचार-विमर्श पर वह बोले थे ''देश का भला तभी होगा जब सब एक भाषा में बात करेंगे'' - प्रेम धवन पर मनोज कुमार ने बताया था कि वह तो आदर्शवादी थे। उन्होंने बाद में पंजाब गवर्नमेंट व सेंट्रल गवर्नमेंट के लिए डॉक्यूमेंट्री फिल्में भी बनाई। उनके घर में गैट टू गेदर था तब कृष्णा मेनन डिफेंस मिनिस्टर थे। वह प्रेम धवन जी के घर आए थे तब मैं, मोहम्मद रफी साहब सहित और भी कई लोग थे। कृष्णा मेनन से रफी साहब उर्दू में बात कर रहे थे तब मैं अंग्रेजी में ट्रांसलेट कर रहा था। यह देखकर प्रेम धवन ने कहा कि इस देश का दुर्भाग्य है कि कृष्णा मेनन, मोहम्मद रफी और मनोज कुमार तीनों देश के टॉप के आदमी हैं लेकिन एक दूसरे की भाषा नहीं समझते हैं। कोई हिंदी और कोई इंग्लिश नहीं समझ रहे हैं। देश का भला तभी हो पाएगा जब सभी एक भाषा में बात करें।' इसके बाद सन 1983 में आई फिल्म 'पेंटर बाबू' और फिर सन 1989 में बनी फिल्म 'क्लर्क' के संगीतकार उत्तम सिंह - जगदीश खन्ना में से उत्तम सिंह बताते हैं; 'मैंने प्रेम धवन जी के साथ काम तो नहीं किया था। मेरी बेटी प्रीति उत्तम का सुर एल्बम रिलीज हुआ था जो काफी हिट रहा। इसके बाद उन्होंने प्रीति को छः पंजाबी गाने लिखकर गाने के लिए दे दिए। उन्होंने कहा कि इसे आप कंपोज कीजिए और प्रीति से गाने को कहिए। बहरहाल यह गाने रिकॉर्ड नहीं हो पाए और इसी दौरान उनका देहांत हो गया। वह प्रोड्यूसर और डांस डायरेक्टर भी थे। मुझे जहां तक याद है उनके डांस डायरेक्शन की नया दौर सबसे हिट फिल्म रही। इसके सारे गाने उन्होंने डायरेक्ट किए हैं।

'निष्ठा और ईमानदारी के लिए हमेशा याद किए जाएंगे, प्रेम धवन जी'- कल्याण जी आनंद जी ने 'प्रेम धवन के साथ 'उपकार', ' गीत' और ' पूर्व पश्चिम' फिल्म में काम किया। वे बड़े मिलनसार और सरल व्यक्ति थे। उनके गानों में खास बात यह थी कि मिट्टी की खुशबू आती थी।

उनके शब्दों की रचना से लगता था कि देश और वतन की बात हो रही है। इतने उम्दा गीतकार होने के बावजूद कभी हो-हल्ला नहीं करते थे। प्रेम धवन जैसे गीतकार सिर्फ और सिर्फ काम के लिए जीते थे। उनकी एक खास बात यह भी थी कि गीत लिखकर घर चले जाते थे, लेकिन दूसरे दिन कुछ खास याद आने पर सुबह उठकर वह लाइन लिखने के लिए चले आते थे। कहते थे कि यह बहुत बढ़िया लाइन है।' आगे आनंद जी ने कहा, ईगो तो उनमें बिल्कुल नहीं था उनके साथ म्यूजिक बनाने का अलग ही मजा आता था। किसी के साथ काम करने पर सबसे यादगार बात यही रहती है कि वो व्यक्ति कितनी ईमानदारी से काम करता है। प्रेम धवन इस बात के लिए याद किए जाएंगे कि जब उन्हें कोई अच्छी लाइन मिल जाती थी तब तुरंत फोन करके बताते थे।'

ऐसे गीतकारों को भला कौन भूल पाएगा जिनके दिलों में वतन परस्ती का जज्बा था, हूक थी। अपने देश अपने वतन की मिट्टी से जिन्हें लगाव था प्यार था और बेपनाह मुहब्बत थी।

राजेन्द्र पालमपुरी

बांग्ला साहित्य के पुरोधा बंकिम चंद्र चटर्जी

बर्बर ब्रिटिश हुकूमत से स्वाधीनता प्राप्ति हेतु संपूर्ण राष्ट्र में जन-जागरण करने वाले बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय 19वीं शताब्दी के बंगाल के प्रकाण्ड विद्वान तथा महान कवि और उपन्यासकार थे। उन्होंने 1874 में प्रसिद्ध देश भक्ति गीत 'वन्दे मातरम' की रचना की जिसे बाद में आनंद मठ नामक उपन्यास में शामिल किया गया। प्रसंगतः ध्यातव्य है कि वन्दे मातरम गीत को सबसे पहले 1896 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गाया गया था।

बांग्ला भाषा के प्रसिद्ध लेखक बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय का जन्म 26 जून, 1838 ई. को बंगाल के 24 परगना जिले के कांठल पाड़ा नामक गाँव में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय बांग्ला के शीर्षस्थ उपन्यासकार हैं। उनकी लेखनी से बांग्ला साहित्य तो समृद्ध हुआ ही है, हिन्दी भी अपकृत हुई है। वे ऐतिहासिक उपन्यास लिखने में सिद्धहस्त थे।

वे भारत के एलेक्जेंडर ड्यूमा माने जाते हैं। उन्होंने 1865 में अपना पहला उपन्यास दुर्गेश नन्दिनी लिखा। बंकिम चंद्र का जन्म उस काल में हुआ जब बांग्ला साहित्य का न कोई आदर्श था और न ही रूप या सीमा का कोई विचार। 'वन्दे मातरम' राष्ट्रगीत के रचयिता होने के नाते वे बड़े सम्मान के साथ सदा याद किए जायेंगे। उनकी शिक्षा बांग्ला के साथ-साथ अंग्रेज़ी व संस्कृत में भी हुई थी। कृष्णकांतेर विल में चटर्जी ने अंग्रेजी शासकों पर तीखा व्यंग्य किया है। आजीविका के लिए उन्होंने सरकारी सेवा की, परन्तु राष्ट्रीयता और स्वभाषा प्रेम उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था।

युवावस्था में उन्होंने अपने एक मित्र का अंग्रेज़ी में लिखा हुआ पत्र बिना पढ़े ही इस टिप्पणी के साथ लौटा दिया था कि अंग्रेज़ी न तो तुम्हारी मातृभाषा है और न ही मेरी। सरकारी सेवा में रहते हुए भी वे कभी अंग्रेज़ों से दबे नहीं।

सुरेन्द्र अग्निहोत्री

आनन्द मठ (1882) राजनीतिक उपन्यास है। इस उपन्यास में उत्तर बंगाल में 1773 के संन्यासी विद्रोह का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में देशभक्ति की भावना है। चटर्जी का अंतिम उपन्यास सीताराम (1886) है। इसमें मुस्लिम सत्ता के प्रति एक हिंदू शासक का विरोध दर्शाया गया है।

उनके अन्य उपन्यासों में दुर्गेश नंदिनी, मृणालिनी, इंदिरा, राधारानी, कृष्णकांतेर दफ्तर, देवी चौधरानी और मोचीराम गौरेर जीवन चरित शामिल है। उनकी कविताएं ललिता ओ मानस नामक संग्रह में प्रकाशित हुई। उन्होंने धर्म, सामाजिक और समसामयिक मुद्दों पर आधारित कई निबंध भी लिखे।

बंकिम ने साहित्य के क्षेत्र में कुछ कविताएं लिखकर प्रवेश किया। उस समय बांग्ला में गद्य या उपन्यास कहानी की रचनाएँ कम लिखी जाती थीं। बंकिम ने इस दिशा में पथ-प्रदर्शक का काम किया। 27 वर्ष की उम्र में उन्होंने दुर्गेश नंदिनी नाम का उपन्यास लिखा। इस ऐतिहासिक उपन्यास से ही साहित्य में उनकी धाक जम गई। फिर उन्होंने बंग दर्शन नामक साहित्यिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। रबीन्द्रनाथ ठाकुर बंग दर्शन में लिखकर ही साहित्य के क्षेत्र में आए। वे बंकिम को अपना गुरु मानते थे। उनका कहना था कि बंकिम बांग्ला लेखकों के गुरु और बांग्ला पाठकों के मित्र हैं।

बंकिम चंद्र चटर्जी की पहचान बांग्ला कवि, उपन्यासकार, लेखक और पत्रकार के रूप में है। उनकी प्रथम प्रकाशित रचना राजमोहन्स वाइफ थी। इसकी रचना अंग्रेजी में की गई थी। उनकी रचना कपालकुंडला 1866 में छपी।

इसे उनकी सबसे अधिक रूमानी रचनाओं में से एक माना जाता है। उन्होंने 1872 में मासिक पत्रिका बंगदर्शन का भी प्रकाशन किया। अपनी इस पत्रिका में उन्होंने विषवृक्ष (1873) उपन्यास का क्रमिक रूप से प्रकाशन किया। आधुनिक बांग्ला साहित्य में राष्ट्रीयता के जनक इस नायक का 8 अप्रैल, 1894 ई. को देहान्त हो गया।

प्रसिद्ध सरयोलसर झील

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले की बाहरी सिराज घाटी में 10,496 फीट की ऊंचाई पर स्थित सेरोलसर झील (जिसे सरयोलसर झील के नाम से भी जाना जाता है) अल्पाइन जंगलों से घिरी हुई है और जलोड़ी दर्रे से पांच किलोमीटर पैदल रास्ते से यहां पहुंचा जा सकता है। यह आनी से लगभग 31 किलोमीटर व बंजार से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां माता बूढ़ी नागिन का एक प्रतिष्ठित मंदिर है जो अपनी दिव्य ऊर्जा और रहस्यमय जल के लिए जाना जाता है। मंदिर की वास्तुकला पारम्परिक शैली को दर्शाती है। जिसमें लकड़ी पर नक्काशी व पत्थर का काम हुआ है। कथा के अनुसार बूढ़ी नागिन यहां आई और एक बड़े पत्थर पर बैठ गई, जहां 60 जोगनियां थीं। देवी को झील के अन्दर रहने वाली माता माना जाता है और लोग उन्हें रक्षक व उपचारक के रूप में पूजते हैं। एक बार पास के गांव से एक ब्राह्मण सेरोलसर झील घूमने आया था। वह झील में डूब गया। बूढ़ी नागिन को हिमाचल के सभी नाग-देवताओं की माता माना जाता है और वह झील के तल पर अपने सुनहरे महल में रहती है। देवी ने ब्राह्मण की जान बचाई और उसे तीन साल तक अपने सुनहरे महल में रहने दिया और यह वादा लिया कि वह अपने प्रवास और देवी के बारे में किसी को कुछ नहीं बताएगा। घर वापिस आने के बाद हर कोई उससे उसके ठिकाने के बारे में पूछता रहा लेकिन वह उस सवाल को टालता रहा। लेकिन एक दिन उसे सब बताना पड़ा और उसकी मौत हो गई। अभी भी कोई झील की गहराई की सही गणना नहीं कर पाया है। शायद इसलिए क्योंकि बूढ़ी नागिन अपने स्वर्ण महल में शांति से रहना चाहती है और अगर आप बूढ़ी नागिन की पूजा करना चाहते हैं, तो झील के बगल में स्थित मंदिर में करें और झील में न जाएँ - उसे यह पसंद नहीं है कि लोग इसमें डुबकी लगाएँ, या जब यह जमी हो तो इस पर खड़े हों। सेरयोलसर मंदिर बूढ़ी नागिन को समर्पित है। जो शेष-नाग, कामरू-नाग, माहू-नाग, घुंडा नाग और राज्य के 60 नाग-देवताओं की माँ हैं। सरकार यदि इस धार्मिक स्थल को पर्यटन की दृष्टि से मूलभूत सुविधाए उपलब्ध करा दें, तो न केवल लोगों को रोजगर उपलब्ध होगा, बल्कि सरकार को राजस्व भी मिलेगा।

पन्नालाल शर्मा

कहानी

ड्राईवर साहब जी

उस समय किताबों का प्रचलन बहुत कम हुआ करता था। पाठ्यक्रम की किताबें सहेजने तक ही इति श्रीमान ली जाती थी। वह अनुभवी शिक्षकों का स्वर्ण युग भी था। स्कूल में शैक्षणिक ढांचे को सुदृढ़ करवाने में किताबों की दुनिया के अतिरिक्त इन गुरुजनों की भूमिका आज भी यथावत बनी हुई है। आकाश में सप्तऋषि मंडल ध्रुव तारे के समीप रहा करता है। ऐसे ही स्कूल में इन गुरुजनों का सप्तऋषि मंडल शिष्यों के लिए जबरदस्त प्रेरणादायक बना हुआ था। स्कूली पाठ्यक्रम के अतिरिक्त यह गुरुजन शिष्यों में भावी भविष्य की नैतिक मूल्यों, राष्ट्रवाद, रोजगारपरक की बहु-आयामी सिद्धियों का संचरण करने में जुटे हुए थे। इन गुरुजनों में सर्वप्रथम बुनियादी शिक्षा का सूत्रपात करवाने वाले महामना श्री चंद्रमणी जी (चंड-महात्मा जी) , उर्दू के मास्टर क्रमश : गंगासागर जी, नागर देव जी सेहली(तुंगल), टेक चंद जी, हरिकृष्ण जी, हीरालाल शर्मा जी, धनदेव भारद्वाज जी, मुकुंद राम जी, मास्टर खेमचंद जी ,प्रकाश चंद दीक्षित जी, ओ.डी. गुप्ता जी, परमदेव सैणी जी (सैण मोहल्ला), परमदेव सैणी जी, (सिंहां-बल्ह घाटी) अग्रणी श्रेणी के समकालीन थे। रमेश जी (मैथ टीचर) विनोद बहल, दिनेश कपूर जी, पुष्पा शर्मा जी (हिंदी अध्यापिका, विद्या मल्होत्रा जी, आशा हांडा जी, शकुंतला जी, मनसा टंडन जी, पुष्पा शर्मा जी, (टारना माता हिल्स), भीष्मा भैणजी (पुराणीं मंडी), दमयन्ती भैणजी, पुस्तकालय प्रभारी एवं एल.आर.टी. कुसम लता जी (स्नेह लता जी) लतिका गोयल जी, धर्मपाल गुप्ता जी, पीताम्बर लाल जी, शारीरिक शिक्षा अध्यापक क्रमश : जगत सिंह जी,चिंतामणी जी,गोपाल दास गोपाली जी, राजेन्द्र राजू जी, अम्बी जी, सैणीं जी, परमदेव सैणीं जी, विद्यासागर जी,गरीबदास जी, ड्राईंग मास्टर राजेन्द्र राजू जी पड्डल, ड्राईंग मास्टर शांति स्वरुप जी, समेत अनेक गुरुजनों का यह अविस्मरणीय दौर था। यही नहीं हेडमास्टरों में राजेन्द्र अरोड़ा जी, भूपेंद्र पाल जी, तेजतर्रार डी.एन. कौल जी (टिपरु हेडमास्टर जी) भी सभी के लिए अविस्मरणीय है। यह सभी गुरुजन इतने जबरदस्त मनोवैज्ञानिक थे कि शिष्यों का चेहरा पढ़कर उसकी सारी गतिविधियों का खाका प्रस्तुत कर देते थे। पचास साल से ज्यादा समय व्यतीत होने के उपरांत आज भी उनके द्वारा शिष्यों के बारे किया गया आकलन अथवा भविष्यपुराण शत-प्रतिशत सटीक बैठता है। बहुत सारे शिष्यों को आज भी महसूस होता है कि यह सचमुच अलौकिक शैक्षणिक दौर था। बहुत सारे गुरुजनों ने तो दीर्घायु बनकर सरकारी स्कूली सेवाकाल से ज्यादा सेवानिवृत्त होने उपरांत दीर्घकालिक पेंशनभोगी बनकर एक जबरदस्त रिकॉर्ड भी सफलतापूर्वक स्थापित किया है। आचार्य रूपचंद शास्त्री जी का कथन था कि जितना दीर्घकालीन उन्होंने पैशन ली है। शायद शिष्यजन उतनी सरकारी नौकरी भी नहीं कर पाओगे ? इन गुरुजनों ने जीवनलाल को लेकर आंकलन किया था कि वह एक ड्राईवर से ज्यादा कुछ नहीं बनेगा ? जीवनकाल में आने वाली घटनाएं पहले ही परछाइयां छोड़ना शुरु कर देती है। जीवनलाल के जीवन का घटनाक्रम बहुत ही विचित्रता लिए हुए था। मिट्टी के गारे की चिनाई का बना सौ साल पुराना मकान जिसकी छतों से बरसात में अत्याधिक पानी टपकने लगता था। घर की रसोई के रखे सारे बर्तन व खाली डिब्बे हर कमरे की छत से टपकते पानी को कदापि रोक नहीं पाते थे। पानी के अनवरत टपकने से पहली मंजिल का कच्चा मिट्टी बरामदा जल-थल हो जाता था। नतीजतन मिट्टी के नीचे इमारती लकड़ी देवदार के शहतीर, कड़ियां, निचले बरामदे के लकड़ी स्तंभ दीमक लगने से संक्रमित होकर कच्चे पड़कर गिरने के कगार पर आ गए थे। लकड़ी की चारदीवारी पर लगे मोटे तख्ते भी कमजोर पड़कर बाहर की तरफ निकलते साफ दिखाई देते थे। जीवनलाल घर के हालात बदलना चाहता था। उसने निश्चय कर लिया था कि गुरु जी ने ड्राईवर बनने का ही रोजगारपरक रास्ता सुझाया था।

जीवनलाल घर के हालात बदलना चाहता था। उसने निश्चय कर लिया था कि गुरु जी ने ड्राईवर बनने का ही रोजगारपरक रास्ता सुझाया था। अत: जीवनलाल ने बिना वक्त गवाए ड्राईवरी सीखना चालू कर दिया था। हेमचंद उस्ताद ड्राईवरी सिखाते थे। जीवनलाल पक्का घड़ा था किंतु उस्ताद जीवनलाल ने चपत मार-मार कर घड़ दिया था। जरा सी सड़क कटाई पर चूक होती तो जीवनलाल के सिर पर हेमचंद उस्ताद का धौल पड़ जाता था। जीवनलाल ट्रेंड ड्राईवर बन गया था।

अतः जीवनलाल ने बिना वक्त गवाए ड्राईवरी सीखना चालू कर दिया था। हेमचंद उस्ताद ड्राईवरी सिखाते थे। जीवनलाल पक्का घड़ा था किंतु उस्ताद जीवनलाल ने चपत मार-मार कर घड़ दिया था। जरा सी सड़क कटाई पर चूक होती तो जीवन लाल के सिर पर हेमचंद उस्ताद का धौल पड़ जाता था। जीवनलाल ट्रेंड ड्राईवर बन गया था। कालांतर में वह अच्छी आजीविका अर्जित कर गुजर बसर करने लगा था। कुछ महीने पहले लम्बी दूरी की बस दिल्ली-हमीरपुर रुट पर थी।

इस कृति के रचनाकार को हमीरपुर जाना था। बस में बैठा तो सभी जीवनलाल को ड्राईवर साहब कहकर संबोधित कर रहे थे। बंगाणा में इंस्पैक्टर बस चैकिंग करने चढ़े तो वह भी ड्राईवर साहब ही कहकर पुकार रहे थे। भोटा में बस अल्पकालिक चाय-पान के ठहराव के लिए रुकी थी। हम भी चाय-पकौड़े का लुत्फ उठा रहे थे। जब दुकानदार को चाय-पकौड़े के पैसे देने लगा तो ड्राईवर साहब जीवनलाल ने हाथ पकड़कर रोक दिया था। उसका कहना था कि वह मिडल स्टैंडर्ड में मास्टर खेमचंद जी के पास पढ़ने वाला सहपाठी है। श्री खेमचंद जी, गुरुजी ने कहा था कि वह ड्राईवर ही बनेगा ? इसलिए नीति ने अपना खेल रचाया है किंतु यह नैतिक आचरण की शिक्षा गुरुजन खेमचंद का ही कमाल है कि हिमाचल परिवहन निगम में उसकी ड्राईवर साहब के बतौर अच्छी खासी पहचान बनी हुई है। हम बस में बैठकर गंभीर चिंतन में खो चुके थे।

राजीव शर्मन

कविता

क्या खोया-क्या पाया?

चलते-चलते जीवन की उस दहलीज़ पर
जहां न उम्र की कोई सीमा रही,
न सपनों का कोई किनारा...
मैं थमा, रुका और भीतर झांका -
जैसे कोई अनदेखा दीपक
धीरे-धीरे भीतर जल उठा।

स्मृतियों की राख पलकों पर जमी थी,
सांसों में थके हुए संकल्प सो रहे थे,
मन ने धीरे से पूछा -
क्या खोया, क्या पाया?

खोया...
वो निश्छल प्रश्न जो मन में उठते थे,
वो दृष्टि जो भीड़ में भी अर्थ देख लेती थी,
वो आत्मा -
जो हार में भी गौरव खोज लेती थी।

खोया...
अपनी सच्चाई पर विश्वास करने का साहस,
हर चोट को अनुभव में ढालने की क्षमता।

पाया...
वो चुप्पी,
जो समाज 'संयम' कहता है,
वो मुस्कुराहट,
जो सिर्फ होंठों तक सीमित है,
और वो बोझिल समझदारी-
जिसमें आत्मा की पुकार दब जाती है।

फिर भीड़...
पाया एक चिंगारी -
जो राख के नीचे सांस ले रही है,
पाया एक चेतना-
जो अब छल से नहीं डरेगी।

अब समझ में आया-
जीवन कोई दौड़ नहीं,
जिसमें सबसे आगे निकलना हो,
यह तो एक गहन यात्रा है-
भीतर उतरने की,
असत्य को उतार फेंकने की।

अब प्रश्न नहीं पूछता मन,
अब उत्तर खुद आकार लेता है -
हर अनुभव की रेखा में,
हर टूटे विश्वास की ध्वनि में।

अब जीवन को जीना है
ना किसी दिखावे में,
ना किसी तमगे की प्रतीक्षा में -
बल्कि उस ध्वनि में,
जिसे आत्मा सत्य कहती है।

क्योंकि अंत में-
जो सच में पा गया,
वो शब्द नहीं-
स्वर बन जाता है।
वो चेहरा नहीं-
चेतना बन जाता है।
जिसे न समय मिटा सकता है,
न विस्मृति के अंधेरे छू सकते हैं।

अब जीवन को जीना है-
जैसे पहली बार किसी ने
भीतर से सांस ली हो,
जैसे कोई शून्य में उतरकर
सत्य का स्पर्श कर आया हो।
क्या खोया-क्या पाया?
अब यह प्रश्न नहीं रहा...
अब यह पथ बन गया है...
और मैं-उस पथ का यात्री...

हितेन्द्र शर्मा

सामान्य ज्ञान

आई.आई.आई.सी.

इंडियन इंस्टिट्यूट फॉर इमर्सिव क्रिएटर्स (आई.आई.आई.सी.) : शिक्षा में एक नया मानक है। प्रारंभिक रूप से आई.आई.आई.सी. नामित यह केंद्र, भारत के प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे आई.आई.टी. और आई.आई.एम. की उत्कृष्टता की तर्ज पर कार्य करेगा। यह संस्थान एक बहुविषयक पाठ्यक्रम प्रदान करेगा, जिसमें डिजाइन, कहानी लेखन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.), ए.आर. वी.आर. और उद्यमिता को एकीकृत किया जाएगा। केवल अकादमिक शिक्षा ही नहीं, आई.आई.आई.सी. एवीजीसी स्टार्टअप्स के लिए एक इनक्यूबेटर के रूप में भी कार्य करेगा और मनोरंजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा और वर्चुअल टूरिज्म जैसे क्षेत्रों में नवाचार का एक केंद्र बनेगा। यह पारिस्थितिकी तंत्र आधारित दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा कि भारत केवल प्रतिभा विकसित ही न करे, बल्कि वैश्विक आई.पी. और सामग्री उत्पादन क्षमताओं का भी विस्तार करें।

1. मंडी में स्थित दमदमा महल का निर्माण किसने करवाया था ?
2. हिमाचल प्रदेश के किस जिले में सबसे अधिक वर्षा दर्ज की जाती है ?
3. शिमला जिले में कितने उप-मंडल हैं ?
4. 'तारागिरी' हिमनद हिमाचल के किस भाग में स्थित है ?
5. घग्गर नदी का उद्गम हिमाचल के किस जिले से होता है ?
6. आनासार झील किस राज्य में स्थित है ?
7. प्रसिद्ध भ्रमण पुस्तक 'रिहला' का लेखक कौन था ?
8. संसद की लोक लेखा समिति के सदस्यों की पदावधि कितनी होती है ?
9. अमेरिका में गदर पार्टी का गठन किसने किया था ?
10. बिहार स्थित 'गया' शहर का नया नाम क्या है ?
11. 'टाइफाइड' फीवर किस बैक्टीरिया के कारण होता है ?
12. विश्व का सबसे लंबा चिनाब रेलवे आर्च ब्रिज कहां स्थित है ?
13. दोहा और दुबई किस खाड़ी के किनारे अवस्थित है ?
14. नौजवान सभा की स्थापना भगत सिंह व उनके साथियों ने कब की थी ?
15. भारत का डिप्टी चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ किसे नियुक्ति किया गया है ?

प्रस्तुति : विवेक शर्मा

उत्तर- 1. सूरजसेन, 2. कांगड़ा 3. नौ, 4. लाहौल-स्पिति, 5. सिरमौर, 6. राजस्थान, 7. इब्नबतूता, 8. एक वर्ष, 9. लाला हरदयाल, 10. गया जी, 11. साल्मोनेला टाइफी, 12. जम्मू-कश्मीर, 13. फारस की खाड़ी, 14. वर्ष 1926, 15. लैफ्टिनेंट जनरल राजीव घई

आईसक्रीम

मई महीने की एक शाम को रमेश की छह साल की बिटिया लक्ष्मी दौड़ती दौड़ती घर आई और अपनी मां आशा से बोली ''मां पैसे दो मुझे भी आईसक्रीम खानी है''। रमेश एक दिहाड़ी दार मज़दूर था, उसे कभी काम मिलता तो कभी कई दिनों तक बिना काम के ही रहना पड़ता अतः घर का गुज़र बड़ी ही मुश्किल से हो पाता था। आशा ने बच्ची को टालते हुए कहा ''बेटा अच्छे बच्चे आईस्क्रीम नहीं खाते, इससे बीमार हो जाते हैं'' लक्ष्मी ने ज़िद करते हुए कहा ''मां मेरी सारी सहेलियां रीता, पिंकी, कमला, रिद्धि तो हर रोज़ आईसक्रीम खाती हैं वह तो कभी बीमार नहीं होती तो मैं कैसे बीमार हो जाऊंगी'' सच्ची बात तो यह थी कि रमेश को पिछले दो दिन से कोई भी काम नहीं मिला था और घर में ले दे के मात्र बीस रुपये ही बचे थे जिन्हें आशा घर के ख़र्चे के लिए बचा कर रखना चाहती थी तो वह फ़िर से लक्ष्मी को टालते हुए बोली ''बेटा वो तो गंदे बच्चे हैं, तू तो अच्छी बच्ची है तू ज़रूर मेरा कहना मानेगी'' लक्ष्मी की सहेलियां रोज़ शाम को खेलते समय रामेश्वर की दुकान से आईसक्रीम ले कर उसके सामने मज़े से चाट चाट कर खाती थीं, उसका दिल भी करता कि वह भी आईसक्रीम खाए, उसके मुंह में उन्हें आईसक्रीम खाते देख पानी भर आता किंतु वह मन मार कर रह जाती। इतनी छोटी उम्र में भी उसे घर की आर्थिक स्थिति का पता था क्यों कि कभी घर में आटे के लिए झगड़ा होता तो कभी मां की फटी कमीज़ की जगह नई कमीज़ लाने को लेकर। किंतु उस रोज़ लक्ष्मी ख़ुद पर काबू नहीं कर पा रही थी अतः उसने मां के पैसे देने से इनकार करने पर रोना शुरू कर दिया। आख़िर बाल हठ की जीत हुई और आशा ने घर में बचे आख़री बीस रुपये भी लाकर उसे देते हुए कहा '' ले जा खा ले आईसक्रीम।'' लक्ष्मी के हाथ में जैसे ही बीस रुपये आए उसका रोना ख़ुशी में बदल गया और पैरों में जैसे पंख लग गए और वो जैसे उड़ती हुई सी रामेश्वर की दुकान पर जा पहुंची और उसे बीस रुपये देते हुए एक आईसक्रीम देने को कहा। रामेश्वर ने लक्ष्मी से कहा कि बेटा पांच रुपये और दे आईसक्रीम पच्चीस रुपये की है और उसने बीस रुपये लक्ष्मी को वापस कर दिए और लक्ष्मी रुआंसी सी वापिस घर आई और मां से पांच रुपये और देने को कहा किंतु इस बार उसने जिद्द नहीं की क्योंकि उसे पता था कि मां के पास और रुपये नहीं हैं।

अधूरी दवा और ठीक से फल आदि न मिलने के कारण लक्ष्मी की तबीयत दिन व दिन बिगड़ती ही जा रही थी। बुखार से उसका सारा जिस्म आग से गर्म हुई भट्टी की तरह तप रहा था, मुंह सूख रहा था किंतु बीमारी से मुंह का स्वाद बिगड़ गया था जिससे वह ठीक से पानी भी नहीं पी पा रही थी।

वक्त गुज़रता गया किन्तु लक्ष्मी की आईसक्रीम खाने की इच्छा पूरी न हो पाई। एक दिन लक्ष्मी को तेज़ बुखार ने आ घेरा, रमेश उसे हस्पताल ले गया तो पता चला कि उसे डेंगू हुआ है। डॉक्टर ने उसे फल खाने और जूस पीने की सलाह दी और साथ में दवाइयां लिख दी। रमेश ने जब कैमिस्ट की दुकान से दवाइयों की कीमत पता की तो जैसे उसके पांव के नीचे से ज़मीन ही खिसक गई। कैमिस्ट ने दवाइयों की कीमत पन्द्रह सौ रुपये बतलाई। रमेश के पास ले दे के दो सौ रुपये ही थे अतः उसने मात्र डेढ़ सौ रुपये की दवा ली और घर आ गया। फ्रूट के नाम पर वह लक्ष्मी के लिए दर्जन भर केले ले आया था। अधूरी दवा और ठीक से फल आदि न मिलने के कारण लक्ष्मी की तबीयत दिन व दिन

(शेष पृष्ठ नौ पर)

सतीश अंजुम

वनों की आग का जीव जंतुओं पर प्रभाव और उपाय

वन हमारे पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल जीव जंतुओं को आश्रय प्रदान करते हैं, वल्कि जलवायु को संतुलित रखने और प्रदूषण कम करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षो में वनों में आग लगने की घटनाएं बढ़ी हैं, जिससे वन्य जीवों और पारिस्थितिकी तंत्र को भारी हानि हो रही है। वनों में अनियंत्रित रुप से फैलने वाली आग को जंगल की आग कहा जाता है। इसमें पौधे, जानवर, घास के मैदान, जो भी उसके रास्ते में आते हैंए सब जलकर राख हो जाते है। जंगलों में चलने वाली तेज हवा के कारण यह आग अनियंत्रित होकर बड़े भूभाग में फैल जाती है, जिससे वायु प्रदूषण का खतरा भी बढ़ जाता है। आग लगने की घटनाओं को लेकर वन विभाग का यह मत है कि इनमें से कई घटनाएं मानव निर्मित भी होती हैं क्योंकि यह कभी कभी जानबूझकर भी जंगलों में आग लगाई जाती है।

वनों में लगने वाली आग आमतौर पर लंबे समय तक जलती रहती है। यह आग जंगल में स्थित सूखी लकडियां या अन्य ज्वलनशील पदार्थ के कारण फैल जाती है। कई बार वनों में लगने वाली आग का कारण बिजली गिरना या अत्यधिक सूखी लकड़ियां या पेड़ पौधों के सूखे पत्ते भी होते हैं। वनों में आग लगने से वन्यजीवों पर कई तरह से असर पड़ता है। आग से कुछ जानवर सीधे जल जाते हैं, तो कुछ आवास खो देते हैं और भोजन की कमी से मर जाते हैं। इसके अलावा, धुएं के कारण कुछ जानवरों को सांस लेने में दिक्कत हो सकती है। वन्य आग के कारण वन्य जीवों के आवास को नुकसान पहुंचता है, जिससे वे अवैध शिकार, प्रतिकूल मौसम की स्थिति या शिकारी प्रजातियों द्वारा मारे जाने के कारण मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। कई वन्यजीव प्रजातियां घने जंगलों के नीचे संरक्षित हैं, लेकिन जंगल की आग के कारण वे असुरक्षित होती हैं।

वनाग्नि के जीव जंतुओं पर प्रभाव

मृत्यु और चोटें

कुछ जानवर आग की लपटों में ही मर जाते हैं, खासकर वृद्ध और छोटे जानवर जो जल्दी भाग नहीं सकते। वन्य जीवों में आग के खतरे को भांपने की क्षमता विकसित होती है। कई मामलों में वे जानते हैं कि खुद को और अपने परिवार को सुरक्षित रखने के लिए क्या करना है। भाल, खुर वाले जैसे कुछ जानवर भाग जाते हैं और लंबी दूरी तय करते हैं। अन्य छोटे जानवर आग से बचने के लिए पेड़ों पर चढ़ते हैं, लकड़ियों और चट्टानों के नीचे छिपते हैं या खुद को मिट्टी में दफनाते हैं। लेकिन अपने सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, कई वन्य पशु सीधे जंगल की आग के लपटों, धुएं या गर्मी से मारे जाते हैं। यह विशेष रुप से धीमी गति से चलने वाली प्रजातियों के लिए सच है, जिसमें वृद्ध पशु, नवजात, घायल जानवर, सांप, छिपकली, मेंढक, घोंसले बनाने वाले पक्षी, खरगोश, और चूहे जैसे छोटे पशु शामिल हैं। पक्षियों के

अंडे और चूजे आग में नष्ट हो जाते हैं जिससे उनकी आबादी घटती रहती है। जो जानवर सीधे वन की आग से नहीं मारे जाते हैं, वे निरंतर जोखिम और स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित हो सकते हैं। जंगल की आग जानवरों की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर करती है, जिससे वे बीमारी और संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

डॉ. कृष्णेन्द्र दिनेश
डॉ. देवेश ठाकुर

आवास और भोजन का नुकसान

आग लगने से पेडों की छाल घास और झाडियां जल जाती हैं जिससे जानवरों को छिपने और रहने को जगह नहीं मिलती। जंगल की आग कई वन्यजीव प्रजातियों के आवास को पूर्णतया नष्ट या गंभीर रुप से नुकसान पहुंचा सकती है।

आहार के लिए वनस्पतियों पर निर्भर रहने वाले शाकाहारी जानवरों के लिए भोजन के स्रोत नष्ट हो जाते हैं। इससे आहार की कमी और कुपोषण हो सकता है, और अन्य वन्यजीवों के साथ नए क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा पैदा हो सकती है।

धुएं से स्वास्थ्य समस्याएं

जंगल की आग से निकलने वाला धुआं जानवरों को सांस लेने में दिक्कत और आंखों में जलन पैदा कर सकता है।

विस्थापन : कई जानवर आग से बचने के लिए अपने प्राकृतिक आवास को छोड़ देते हैं और नए आवास की तलाश करते हैं, जिससे उनके प्राकृतिक जीवन चक्र में व्यवधान होता है। आग से मिट्टी की गुणवत्ता खराब होती है, जिससे कीडे मकोडे कम हो जाते हैं और उन पर निर्भर पक्षियों व छोटे जानवरों को भोजन नहीं मिलता।

प्रजनन में कमी : कई जानवर आश्रय और घोंसलों के लिए विशिष्ट विशेषताओं जैसे सूखे पेड़, गिरी हुई मोटी टहनियां, पेड़ों के तने और घनी वनस्पति पर निर्भर करते हैं। जंगल की आग इन विशेषताओं को नष्ट कर सकती है, जिससे प्रजनन की सफलता और उनकी समग्र आबादी प्रभावित होती है। आग के कारण वन्यजीवों के अंडे और बच्चे जल जाते हैं, जिससे प्रजनन दर कम हो जाती है।

शिकारियों से खतरा

आग से कई वन्यजीवों को शिकारी जानवरों से खतरा होता है क्योंकि वे आग से बचने के लिए खुले में भाग जाते हैं। शिकारी आग के कारण होने वाले भ्रम और भटकाव का लाभ उठाकर शिकार को आसानी से पकड़ सकते हैं।

मिट्टी और पानी की गुणवत्ता

आग लगने के बाद बढ़ा हुआ प्रवाह और कटाव आस-पास की नदियों और धाराओं में पानी की गुणवत्ता को नकारात्मक रुप से प्रभावित कर सकता है, जिससे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और उन पर निर्भर रहने वाले जानवर प्रभावित हो सकते हैं।

विलुप्त होने का खतरा

कई वन्यजीव प्रजातियां आग से इतना प्रभावित होती हैं कि वे विलुप्त होने के खतरे में आ जाती हैं। इनमें दुर्लभ प्रजातियां अधिक संकट्यस्त हो जाती हैं।

दीर्घकालिक प्रभाव : आग लगने के बाद पूनार्वास प्रक्रिया में सालों, यहाँ तक कि दशकों भी लग जाते हैं। इस दौरान वन्यजीव आबादी और पारिस्थितिकी तंत्र खुद को बहाल करने की प्रतीक्षा करते हुए फिर से उभरने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। जंगल के जलने से खाद्य शृंखला टूट जाती है जिसका असर पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ता है।

वनाग्नि को रोकने के लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं

लोगों को वनों की सुरक्षा के लिए जागरुक करना चाहिए। स्कूल स्तर पर ऐसे कार्यक्रम चलाकर बचपन से ही जागरुकता आवश्यक है। अपने परिवार व आसपास के लोगों को आग से होने वाले नुकसानों की जानकारी देनी चाहिए। गर्मी के मौसम में जंगलों में सूखे कूड़े को इकट्ठा होने से रोकें। प्रारंभिक तौर पर आग लगने वाली जगह के आस पास छोटी-छोटी खाईयां बना दें ताकि आग आगे न फैल सके।

समय पर निगरानी : उपग्रह और ड्रोन की मदद से वनों की निगरानी कर आग का पता लगाया जा सकता है।

कडे कानून : जानबूझकर आग लगाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए।

सूखे कूड़े का प्रबंधन : गर्मी के मौसम में जंगलों में सूखे कूड़े को इकट्ठा होने से रोकें। प्रारंभिक तौर पर आग लगने वाली जगह के आस पास छोटी-छोटी खाईयां बना दें ताकि आग आगे न फैल सके।

जीव जंतुओं की सुरक्षा के उपाय

आपातकालीन बचाव

वन विभाग को आग बुझाने के साथ साथ घायल जानवरों को बचाने और इलाज की व्यवस्था करनी चाहिए।

वैकल्पिक आवास : आग से प्रभावित क्षेत्रों के पास जल स्रोत और अस्थायी शरण स्थल बनाए जाने चाहिए।

वैज्ञानिक शोध : आग के बाद जीव जंतुओं की आबादी पर नजर रख कर उनके संरक्षण के उपाये किए जाने चाहिए।

वनों की आग न केवल पेडों को जलाती है बल्कि बहुत सारे जीवों की जान लेती है। प्रकृति और जीव जंतु हमारी धरा की धरोहर हैं। इनकी रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है।

'वन बचेंगे तो जानवर बचेंगे जानवर बचेंगे तो जीवन बचेगा'

कविता

कैसे बीता तुम बिन वो ऋतुराज

आया था उस साल जब वो 'बसंत',
मधुमास वो मानों सीधे स्वर्ग से था उतरा,

क्यों, कब, कैसे, पता नहीं
सम्मोहित कर गया वो 'ऋतुराज',
दूर-दूर बहुत दूर तक फैले-पसरे
मदमस्त पीत -पुष्प सरसों के,
हरा कर गये तन, मन, प्राणों को,

वो सोंधी-सोंधी खुशबू माटी की,
पुष्प-सरसों की वो मदमस्त सुगंध,
तन-मन सिहर गये जब शीतल वायु के स्पर्श से,
मंद-मंद मस्त पवन जब तन को छू गई,

खिलते सुमन भांति-भांति के,
पेड़-पौधों पर आए वो मनभावन अंकुर,
संकेत थे क्या किसी नवागंतुक के,

आहट-सी कोई आती
तो लगता कि तुम थे,
साया-सा कोई लहराया
तो लगा कि तुम्हीं तो थे,

कुदरत ने लुटाए थे जब सौरभ-सुधा
ज्यों रजनीगंधा की छांव में,
लेकिन आए नहीं तुम साथ निभाने,
मिले नहीं, न कभी दिखे ही,

मत आना पर अब कभी, कहीं से,
हो चुके हैं 'मुमुक्षु' अब हम!

मुमुक्षु के. ठाकुर

बाल कहानी

अच्छे व्यवहार का पुरस्कार

शेखू, अन्नू, चारू, मुदित व टिंगू खेल रहे थे। कल ही उनकी परीक्षा खत्म हुई थी तभी फुर्सत में थे। किसी ने भी जल्दी घर नहीं जाना था। सभी पहले एक खेल खेलते लेकिन जल्दी ही बोर हो जाते फिर दूसरा शुरू करते। उन्हें सूझा कि छुपम-छुपाई खेला जाए। सबने छिपना था और टिंगू ने उन्हें ढूंढना था। उसने सीटी मारी और सब फटाक से भागे और टिंगू आंखे बंद कर खड़ा रहा। उसे लगा सभी छुप गए होंगे वह ज़ोर से बोला, 'मैं आऊं'।

सब की मिलीजुली आवाज़ आई, 'रुक जा टिंगू, रुक जा', मगर उसने बोला, 'मैं आ रहा हूं'।

इस बीच सभी जहां-तहां छिप गए थे। टिंगू उन्हें ढूंढने लगा, वह जैसे ही आगे जाकर एकदम पीछे मुड़ा, एक अजनबी व्यक्ति से टकरा गया और गिरते गिरते बचा। अजनबी ने कहा, 'सॉरी बेटा', मगर टिंगू ने सॉरी कहना तो दूर उलटा मुंह बिचका दिया।

अजनबी ने कहा, 'बेटा, एक बात सुनो', मगर टिंगू ने नहीं सुना और सामने वाली गली में चला गया। सभी अच्छी तरह छिप गए थे तभी मिल नहीं रहे थे। वह आदमी फिर उसे मिल गया पूछने लगा, 'बेटे, आपको पता है मि. त्रिवेदी का घर कौन सा है'।

'अपने आप ढूंढिए, मुझे नहीं पता, मैं खेल रहा हूं', कहकर दोस्तों को ढूंढने लगा। अजनबी चला गया। खेल की दो पारियां समाप्त हो चुकी थी। अब शेखू ने सबको ढूंढना था। इत्तेफाक से वह आदमी फिर आ गया और शेखू को देखकर बोला, 'बेटे, क्या आपको त्रिवेदीजी का घर मालूम है'। 'अंकल, क्या आपके पास उनका पता है' शेखू ने पूछा।

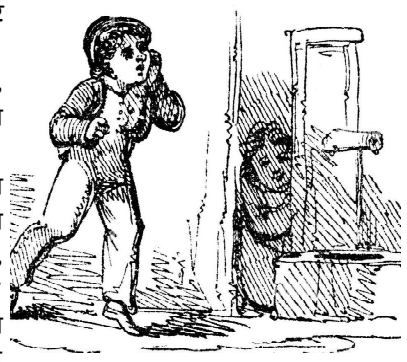

'हां, है लेकिन घर नहीं मिल रहा'।

'अंकल, क्या वे यहां नए आए हैं'।

'हां बेटे, उन्होंने कुछ दिन पहले ही शिफ्ट किया है', अजनबी ने बताया।

'कल मेरी मम्मी को संतोष आंटी बता रही थी कि नए किराएदार आए हैं, शायद वही हों। आइए मैं आपको छोड़ आता हूं', शेखू बोला। 'आप तो खेल रहे हो, मुझे रास्ता समझा दो, मैं ढूंढ लूंगा'।

'कोई बात नहीं अंकल, बाद में खेल लूंगा, मेरी तो छुट्टियां हैं। आपका टाइम बचेगा, आइए प्लीज़ '।

शेखू ने अन्नू को बताया कि वो अंकल के साथ जा रहा है, आकर खेलेगा। शेखू उस व्यक्ति को आंटी के नए किराएदार के यहां ले गया जो वास्तव में त्रिवेदीजी ही थे। वह वापिस आकर पुन खोलने लगा। उसने उन्हें बताया कि वही अंकल अभी आएंगे और सबके सामने उसे कुछ देंगे।

खेल कर सब थक गए थे, अब सभी अजनबी अंकल की प्रतीक्षा करने लगे। कुछ देर बाद वह अंकल सचमुच आए और अपने बैग से एक छोटा सा सुन्दर पैक निकालकर शेखू को देते हुए बोले, 'बेटे, यह लो आपका पुरस्कार '। 'किस बात के लिए अंकल', शेखू ने पूछा 'अच्छे से बात करने के लिए और त्रिवेदीजी के घर तक पहुंचाने के लिए'।

'इसकी क्या जरूरत है अंकल' शेखू ने कहा। 'अरे खोलकर तो देखो'।

शेखू ने पैकेट खोला तो उसमें छोटी सी पीले रंग की सुन्दर कार थी। उसने फिर कहा, 'अंकल मैंने ऐसा कुछ नहीं किया जो मुझे आप यह दे रहे हैं'। 'बेटा, आपने अच्छा व्यवहार किया, ढंग से बात की, उनके घर तक छोड़कर आए। मैं एक कार कम्पनी का सेल्समैन हूं। यह कार का गिफ्ट मॉडल है। त्रिवेदीजी ने कार देख रखी थी, आज फ़ाइनल कर दी है। मेरा आपके साथ जाना लक्की रहा, इसलिए आपको यह गिफ्ट दिया जा रहा है। थैंकयू बेटा। गिफ्ट आपको कैसा लगा'। 'थैंकयू अंकल, यह गिफ्ट कार मुझे बहुत अच्छी लगी। मुझे कारें बहुत पसंद हैं, मेरे पास पहले भी काफी हैं' शेखू ने खुश होकर कहा।

मुदित, अन्नू, चारू और टिंगू ने शेखू को बधाई दी। टिंगू को अपनी भूल का एहसास हो रहा था। वह समझ रहा था कि शेखू को सबके सामने अच्छे व्यवहार का पुरस्कार क्यूं दिया जा रहा है। अनजान अंकल ने टिंगू को कहा, 'बेटे, ऐसा पुरस्कार आपको भी मिल सकता है, अगली बार के लिए कोशिश करते रहो'।

प्रभात कुमार

आईसक्रीम.....

(पृष्ठ आठ का शेष)

बिगड़ती ही जा रही थी। बुखार से उसका सारा जिस्म आग से गर्म हुई भट्टी की तरह तप रहा था, मुंह सूख रहा था किंतु बीमारी से मुंह का स्वाद बिगड़ गया था जिससे वह ठीक से पानी भी नहीं पी पा रही थी। आशा ने बेटी का सूखता मुंह देख कर रमेश से कहा कि वह जा कर लक्ष्मी के लिए आईसक्रीम ले आए क्योंकि एक तो इससे उसका सूखता मुंह ठीक हो जाएगा और दूसरा लक्ष्मी का कई दिनों से आईसक्रीम खाने का बड़ा दिल भी था उसकी यह इच्छा भी पूरी हो जाएगी। रमेश, लक्ष्मी के लिए आईसक्रीम लेने बाज़ार चला गया। पीछे से लक्ष्मी की तबीयत अचानक से और भी ख़राब हो गई और उस पर बेहोशी सी छाने लगी। रमेश ने बाज़ार से पच्चीस रुपये वाली आईसक्रीम ली और तेज़ चाल से घर की और चल पड़ा ताकि गर्मी से कहीं आईसक्रीम घर पहुंचते-पहुंचते पिघल न जाए।

रमेश तेज़ चाल से घर में आया और लक्ष्मी को आईसक्रीम देते हुए बोला 'ले बेटा इसे अभी खा ले इससे तुझे थोड़ा आराम मिलेगा' किंतु लक्ष्मी ने जब आईसक्रीम नहीं पकड़ी तो रमेश ने ध्यान से देखा तो स्तब्ध सा वहीं का वहीं खड़ा रह गया क्योंकि लक्ष्मी के इस बीमारी से प्राण पखेरू उड़ चुके थे। रमेश हैरान परेशान बिना कुछ बोले लक्ष्मी के बिस्तर के करीब खड़ा था। घर में एक अजीब सी मुर्दा ख़ामोशी छाई हुई थी और रमेश के हाथ में पकड़ी हुई आईसक्रीम पिघल-पिघल के लक्ष्मी के मुंह के पास तकिए पर टपक रही थी।

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक, शिमला, 18 - 24 जून, 2025

पहाड़ी कहाणी

अपणा रोजगार अपनाओ

असां दा परदेस इक पहाड़ी परदेस है जिसजो कि हिमाचल दे नांयें ते जांणया जांदा है। हिमाचल मतलब हिम दा आंचल यानि कि बर्फे दी गोदा च बसया। 25 जनवरी 1971 जो असां दे परदेसे दा गठन होया। 55,673 वर्ग किलोमीटर फैलेयो इस परदेसे दी आबादी साल 2011 दी गणना दे मताबक 68,64,602 जिस विच मर्द 34,81,783 कन्नै 33,82,729 जणांसा हन। ऐत्थू दे लोकां दा कम्मकार खेतीवाड़ी है। दणया देवतयां दे नांये ते मसहूर असां दे परदेसेच भोले भाले कन्नै सिधे साधे लोक बसदे हन। थलिआं -पटिटआं च दिन भर मेहनत मशकत कम्मकार करी के अपणा कन्नै अपणे टबबरे दा पेट पालदे हन। रूतां दे मताबक ऐत्थू दे लोक फसलां बाहन्दे हन जईआं कि सयाले दी रूता च कणक, संरू, लसण, प्याज, आलू बाहन्दे हन। तौंदिआं-बरसाती दे बिच धान, छलिआं कन्नै रूता दे मताबक होंर सब्जियां बाहन्दे हन।

पहलैं लोक बालदां, गांयीं डंगरया पालदे थे। गांयी ता कुत्थी कुत्थी हल्ली, बी पालदे हन। पर बालद पलना छडी दितियो हन। जिमिदार कणक, छलियां कन्नै चौल बेची करी साल भर दी कमाई करी के अपणा कन्नै अपणे टबबरे दा पेट पाली सकदे हन। बेरोजगार युवा गांयी पाली करी दुधे जो बेची करी, दुधे दा पनीर, छाआ कन्ने घयो बेची करी खरी मोटी रकम कमाई सकदे हन। इन्हां चीजां दी जरूरत सारेयां जो हुन्दी है।

ग्रां-ग्रां च घराट हुन्दे थे। कुल्लां दे पाणिए नै घराट चलदे थे। घराटे च पितया आटा गुणकारी कन्नै पोस्टक हुन्दा है। समें दे मताबक सब बदलोया। कुल्ला सुक्की गईआं। घराट चलणा बन्द होई गै। कुत्थी-कुत्थी हल्ली बी हन पर गिणती बड़ी घट है। डेयरी फार्म बेरोजगारां तांई इक खरी कमाई करने दा जरिया है। अईआं ही अपणा फलां दे बुटे लगाई करी पैसा कमान्दे हन। जिला शिमला, जिला मण्डी, जिला सिरमौर दे उपरी इलाके च सेउ, बदाम, पलम, खुमानी, चैरी, किवी, शक्करपारा, जपानी फल, आडू कन्नै हेठलयां इलाकयां च जिला सोलन कांगड़ा, हमीरपुर,च काफल, आडू, लीची, अम्ब, पलम, सन्तरे, किन्नू, खटटे, दुणज, अमरूद बी हुन्दे हन। जिन्हा ते लोक खरी खासी रकम कमाई करी अपणा रोजगार सुरू करदे हन। असां दे परदेसे च कमाईआ दे इतणे सारे कम्म धन्धे हन कि कमाणा लगन ता कुसी जो बाअर जांणे दी जरूरत नी पैंणी। हिमाचले च आलु दी खेती बड़ी मात्रा च हुन्दी है। आलु इक ऐसी चीज है जेड़ी कुसी बी सबिजया च फिट होई जांदी है। आलुआ दे चिप्स बणांदे हन। चिप्सा दी मंग सबना थाआं च हुन्दी है। न्याणया ते लेई करी सयाणेंया तक इसजो बड़ी खुबी नै पसंद करदे हन। युवा इसजो रोजगार दे रूप च अपनाई सकदे हन। अईआं ही ऐत्थू होर कई संसाधन हन जिन्हा ते बेरोजगार नौजवान, जणांसा कन्नै होर जेड़ा कम्म सुरू करी सकदे हन उन्हां च सारेयां ते पहलै है अचार, चटनी, मुरब्बा। असां देयां वणां च कई कुदरती चीजां हन जिन्हां जो कुदरत नै असां जो दितया है। उन्हां जा प्रजोग सही कन्नै खरे तरीके नै करी सकदे हन। वणां च आवला, अम्ब, ढेउ, कटहल, हरड़, भेड़ा, खटटे, जदेये कुदरती चीजां बेशुमार हुन्दिया हन जिन्हा दा प्रजोग करी के अचार बणाई सकदे हन कन्नै अपणा रोजगार अप्पू ही सुरू करी सकदे हन। आंबले दी चटनी, मुरब्बा, कैंडी कन्नै अचार बणाई सकदे हन। इस विच न मती मेहनत लगदी है न मतया पैसेया दी न ही मतया लौका दी जरूरत हुन्दी है। अगले अपणा रोजगार सुरू करने दी गल्ल करिए ता सह है कुक्कड़ फार्म खोली करी अपणा कम्म धन्धा सुरू करी सकदे हन।

कुक्कड़ फार्म खोलने ते अण्डे, मांस, कुकड़ा दी बीठ कठेरी करी बेचदे हन। इन्हां सबना ते पैसा कमाणा कोई मुस्कल नी है। बस जरूरतरत हुन्दी है ता मेहनत कन्नै लगन सोगी कम्म करने दी। खरिया किस्मा/नस्लां दे कुक्कड़ पाळने दा इस विच ध्यान रखना चाहिदा। इस बारे समें समें पर प्रशिक्षण लैंणा चाहिदा। हिमाचल सरकार नै हिम कुक्कट पालन योजना बी चलाईओ है। इस स्कीमा दा बेरोजगारां जो फायदा चुकणा चहिदा। कुसी बी व्यवसाय जो सुरू करने तांई बैंक लोन बी दिन्दा है। आपणा रोजगार सुरू करने पर सरकार सबसिडी बी दिन्दी है। सहदे आलिया माक्खियां पालने आला बी इक खरा रोजगार देणें आळा है।

जिसजो मधुमक्खी पालन गलांदे हन। ऐ बी घट समें, घट लागत कन्नै घट थांआ घेरने आला अप्पू ही करने आला रोजगार हुन्दा हैं सहदे आलिआं माक्खियां फुल्लां ते सहद कठेरदीआ हन। इस व्यवसाय जो इक माणु अप्पू किल्ले बी करी सकदा है। एपिस मेलिफेरा कन्नै ऐपिस सेराणा खरी किस्मां दिआं माक्खिआं सहदे तांई पालदे हन। सहदे आलिआं माक्खिआं पालने तांई सही थांआं जो चुणना चाहिदा। औत्थु अक्खे बक्खे फुल्ल होणा चाहिदे, रुख बूट छाउआं तांई, पांणी दी व्यवस्था होणा चाहिदी। छते यानि की जेड़े बक्से माक्खियां जो रखणें ताई बणांणे सह जमिनां ते उपर रखायो होणा चाहिदे। उन्हां जो पालने दा ज्ञान होणा चाहिदा। सही समें पर प्रशिक्षण लैणा चाहिदा। खरे तरीके नैं जेकर इसदा कम्म धन्धा किता जाये ताअजकल सहदे दी बजारे च बड़ी भारी मंग हैं। ऐ इक मनाफा देणे आला कम्म धन्धा है। रेसम कीट पालना इक खेतिआ पर आधारत इक खरी कमाई देणे आळा धन्धा है जिसजो कोई बी बेरोजगार ग्रायें दे इलाकया च घट कीमत च इस व्यसाय जो सुरू करी सकदे हन। इसदी बी ऐ खास गल है कि ऐ घट थांआ घेरदा है।

इस कम्मे दी इक होर खास गल ऐ है कि इस जो खेतिआ दे कम्मे कन्नै घरे दे कम्मे सोगी-सोगी बी करी सकदे हन। ऐ कम्म धन्धा रेसम दे कीटा जो पाली करी तूतां दे पतरां कन्नै सुरु हुन्दा है। रेंसमी कपड़ा, धागा भारत इक अपणी खास पच्छाण रखदा है। मच्छियां जो पालने दा व्यवसाय इक सोखा कन्नै सस्ता कम्म धन्धा है जिस जो कोई बी करी सकदा है। घरे इक खुली जगहा होंणा चाहिदी। खुलिआ थांआ पर इक बडडा गडडा खोदणा पौन्दा है। खरिआं किस्मा दिआं मच्छियां तलाये च पाई करी पालनिआं चाहिदिआं।

मच्छियां पालने ताई सरकार कर्ज भी दिन्दी है। पोली हाउस लगाई करी उस विच पपीता, स्ट्राबेरी, करेला गोभी, सिमला मिर्च, धनिया, घन्डोलियां, मूलिआं, टमाटर लगाई करी अईआं ही पोली हाउस च कार्नेशन, गुलदाउदी, जरबेरा, गलेडियालस, गैंदा, आर्किड, गुलाब लगाई करी अपणा कम्म धन्धा सुरु करी सकदे हन। घरे बैठी करी फुल्लां दी पैदावार करी के अपणा कम्म धन्धा सुरु करी के खरी कमाई करी सकदे हन। फुल्लां दी मंग परदेस च ही नी बलकी देस कन्नै विदेसां च बी रहन्दी है।

ऐ खेती साल भर मनाफा देणें आली फसल है। समें दे मताबक होंणें आळे फुल्ल गलाब, गैंदा कमल ग्लैडियालस, रजनीगंधा, कारनेसन जदेये बददी पैदावार दे कारण गुलदस्ते, सैंट कन्नै उपहारी रूप देणें च इन्हां दा प्रजोग किता जांदा है। फुल्ल सजावट करने सोगी सोगी दोआई दे प्रजोग च औन्दे हन। फुल्लां जो घरे, दफतरे कन्नै ब्याहां कारजां च सजांणे दे कम्म च औन्दे हन। औंणें आले समें च फुल्लां दी खेतिआ दा कम्म धन्धा बददा ही जा करदा है। फुल्लां दी पैदावार मार्केटिंग, कास्मेटिक कन्नै परफयूम उद्योग दे अलावा फार्मस्यूटिकल च इन्हां दा प्रजोग हुन्दा है। बेरोजगार नौजवान जेड़े ऐत्थू-औत्थु भटकदे हन सह जेकर इन्हां कम्म धन्धयां जो अपनाई करी सुरू करन ता बेरोजगारी दी कोई दिक्कत नी औंणी। सरकारां बी कई स्कीमां चलाईआ हन, उन्हां स्कीमां दा फायदा चुकणा चाहिदा। बैंक कम्म धन्धा सुरू करने तांई घट ब्याज पर कर्ज दिन्दे हन।

अश्वनी कौंडल

ग़ज़ल

इयां तां कुण कुतांह् -कुतांह् नी मिलदा
मत्थया पर कुसी -कुसी जो मिलदा
कुण मिलया गुआचया कुण काह्लू
खिंडया कुण कदूं मिलै कुजो फिरदा

बड़ी गुंजली उलझियो बत्त जीणे री
सिरा इसरा कुथू है कुसी जो मिलदा

भरमा दी भीड़ भरमांदी भटकांदी फिरै
कुसजो कदूं बही बसां इत है मिलदा

सीरदा-घरोंदा साहमणे हर रोज सुझै
भी वी भेत जीणे रा है कुसजो मिलदा

आई -चलाई जीणे री इयां चला है करदी
पुरखी पैड़ लगियो दिक्खी ने तिसजो चलदा

बह्ल , बरखा, पाणी झख, बात, न्हेरी
बकते ने साझ पाई माहणू रिहा है चलदा

ब्रह्म -आत्मा रा संरबंध बिरला जाणै
करमा रे कोह्लुए च पड़ोंदा माह्णू मिलदा

व्यथित क्या सोच धरूंजदी नित रैंह्दी
जाह्लू मिलया तू सोचदा मिलदा

डॉ. गौतम शर्मा व्यथित

निक्की कथा

रमाल

हरि ठाकरा दी मठिया रा ब्याह था। लाड़े आवले हाली पुज्जी रे नी थे। राम चंदरा जो पूरी मेद थी जे सीता ठाकरा ब्याह जो जरुर आवणा। जेस्स ध्याड़े सीता रे बापुए सुबेदार हरीए कने तिस्सरे साथी परमारे राम चंदरा जो डराया धमकाया था, ठीक तेस्स हे ध्याड़े ले सीता रा घरा ते बाहर निखलना बी बंद करी दित्तेया था। भांत भांति री तरकीबा लाणे ले परंत बी सीता ठाकर कने राम चंदरा रा मिलना नी होई पाया था। दिला रे पासे दिला रा पैंडा हुआं ।वाणचक राम चंदरा री नजर सीता रे माई बाब कने भाटिया साउगी आईरी सीता गास पी ।तेस्सरे दिला री धड़कणा बधीगी, पूरे जिस्मा ग्लास मीठी-मीठी कांबणी लोही चढ़ी गेई। तेस्सरी खुशी री कोई सीयूं नी थी। पर तिन्हा दूंह री नजरा इक बेर बी मिली नी थी। मुख बोटिए सभणी जो भात खाणे बास्ते बैठणे जो गलाया ता घेड़ी मिंझ बिन्ने - पंदा ग्लास सीता ठाकर बी बैठी गी ।तेस्सा रे भाई कने ताऊ रे मठे तिस्सा पर नजर रखदे साम्हणे घेड़ी बैठेयो थे। तिन्हें सबणी बोटी कने काम करदे राम चंदरा जो देखी लैया था ।राम चंदर बी तिन्हा रे माथे री त्रियुड़िया पढ़ी चुकी रा था। सेह् भात दाल बांडणे आवले बोटी पंडता रा संगी बणी करी तिन्हा री घेड़ी बखा आई गया था। सबणी री नजरा बचाई करी सीते राम चंदरा जो देखी लित्तेया था ।जिहाई राम चंदर तेस्सा रे नेड़े पुज्जेया तेस्से झट काली - चिट्ठी धारिया आवला रमाल आपणी गोदा उपर खलारी तेया। राम चंदरा री धक धक बधी गई। रुमाल ता तिन्हे ही सीता जो नशाणी दित्ती री थी। सीता ठाकरे रुमाल चकी करी आपणे लबड़ा कने लगाया ता राम चंदर इसारा समझी गेया। हुण ता मती खुशी कने तिस्सरे पैर धरती पर नी थे। सीता बी आसमाना ऊपर उड्डी चली थी। कोए बी तेस्सा री छेड़- डौल समझी नी पाए थे ।सीता बाल पुज्जी के राम चंदरा रे पैर जिहां जमी गए। तिन्ने मिठड़े जे गलाया।

'भात'

'नईं जी।'

सीता री नजरा राम चंदरा उपर पी होर राम चंदरा री नजरा तिस्सा पर पई। जिहाद धरत पलेटा हुई गेया। दूंह रो ओठा ग्लास मुस्कान नाची गई। तिन्हा रा रोम रोम नाची गेया। समां जिहाद खड़ी गेया। सीता ठाकरा रा रुमाल सुले सुले तिस्सा रे लबड़ा रे पासे सिकदा लगेया था।

कृष्ण चंद्र महादेविया

.....पिछले अंका ते गांह

नानक दुखिया .....

तेरे बापू जी जदों बी औंदे ग्राएँ च हर घरे च हाजरी जरुर भरदे थे। सारेयां दी डौल पुच्छी जांदे। सयाणे क्या न्याणे सबदा फ़िक्र करदे थे। किन्ने मोःहले थे मास्टर होरीं। कुथू गये जहे खरे सच्चे सुच्चे लोक ? खौरे उपरे आले जो उन्हां दी मती लोइ रेही होग। ताई मिंजो गले कन्ने लाई छड्डदी है। मेरी माता होरां कन्ने ताईया दी मती दाल गलदी थी। ताई आखीं पुंजण लगी पेई थी। -मुन्नू! इन्हां आखीं जलेया सुज्जदा किच्छ नी। इन्हां बुड्डीयां अक्खीं पता नी होर क्या क्या दिक्खणा है। नब्बे ते उपर होई गेईयां मुन्नूआ। नैहरा कंडे दा रुक्ख आं। पता नी काहल लैहर औये। रुक्ख कुत बेला आखीं ते ओज्जल होई जाये। एह बेहड़ा कुथी भरया पूरा था। साड़े अद्धे सरीक तां जाई करी अम्ब बसी गये। दंदा आलेयाँ दी कन्ने लगदी जमीण राजूयें खरीदी लेई है। -चलो खरी गल्ल है ताई जी। राजू तुहाडे नेड़े है। देख भाल करणे जो बी तां कोई चाहिदा है। अपणे तां अपणे हुँदै न ताई जी। मैं गल्ल अग्गें बधाई! -तू रेहण दे बच्चेया। दूरे दे बजदे ढोल ही खरे लगदे न। राजू हाण बड्ढा आदमी बणी गिया है। छोटे मोटे माह्णुये जो सैह क्या समजदा है ? कोई अपणा नी बच्चेया। जेह्डा नी पुछेया सैह ही सुखी। सब्ब झूठी माया है मुन्नूआ। गलाणे जो तिन्न तिन्न मुन्नू न मेरे। सारे जणासा दे पिच्छें चलणे आले। कोई तां खरा निकलदा। मेरे सिरें धूड़ पाई सारेयां। चलो राजू नेड़े है। है तां अपणा खून। मरेयां धरेयां जो तां दिखग। ताई होरां पूरी राम कहाणी सुणाई छड्डी थी। उन्हां दियां आखीं च मोटे मोटे अथरु थे। -बच्चेया! ठेहर मैं चाह बणानियां आं। मते दिना परंत तू साड़े अंगणे आया हैं। धन भाग साड़े। ताई मंजे ते उठने जो हुंदी है। -ताई जी! तुसें लम्मे पैः रहो। चाह तां दिले दी हुंदी है। फिर कदी पी लैगे। तुसें राजुये कन्ने नी रैहंदे अजकल ? मैं सहज सुभा पुच्छी लिया। -मेंरे भोले माह्णुआ। बड्डे आदमियां दियां बड्डीयां गल्लां हुंदियां न। छोटे मोटेयां जो एह प्राणी कीड़ा मकोड़ा समजदा है। तू चुप ही रह बच्चेया। कसूर उसदा नी उसदिया लाड़ीया दा है। जिस दिने ते उस घरे च उसदा पैर पिया है, राजू अपनी अम्मा जो भुल्ली गिया है। हुण तां उसदी जणास ही उसदी सब्ब किच्छ है। समजी लैः माई बाप ही है। मती लम्मी कहाणी है बच्चेया। पूरी उमर दुःख दरदां च कड्ढी। तेरे ताऊ जी जिंदड़ी दी चाद्दर ही सुआरदे रहे। कदी पैर नंगे रहे तां कदी सिर उघड़ेया रिहा। ओ मेरिये कमाईये। हुण थोड़े सौखे होये थे कि राजुयें अपणा असली रूप दस्सी छड्डेया। इन्हां बच्चेयां जो कदी तत्ती हौआ नी लगणा दित्ती। हाण एह छोटे मोटे दुःख दर्द मेरे मामा मासी जहे लग्गदे न मुन्नूआ। मेरी कथा मती लम्मी है। जियां दुखां दी मती लम्मी रात हुंदी है। दिले च मता तूफान भरेया है। कुस जो अपणी दुखां दी गठड़ी कुस जो फरोली करी दस्सां, मुन्नूआ। मिंजो खरी तरां पता है ताई होरां दी जिंदड़ी संघरशां च बीती है। उन्हां जिन्नी गरीबी कुसी नी दिक्खी है। ताऊ कन्ने ताईया अपनेयां बच्चेयां खातर मते पापड़ बेले न। मिंजो सब पता है। मैं घड़ी दिक्खी। ताई होरां जो मत्था टेकी मैं अंगणे च आई गिया था। पर मिंजो महसूस होया अजे ताईं ताई जी मता किच्छ सुनाणे दे मूड च थे। उणा दियां आखीं मता किच्छ थियां बोलादियां।

डॉ. रजनीकांत

प्रदेश के दस जिलों में एफएचटीसी .....

(पृष्ठ एक का शेष) मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के निर्देशानुसार प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में भी पेयजल परियोजनाओं को मजबूत किया जा रहा है। प्रदेश में 298 करोड़ 87 लाख रुपये की अनुमानित लागत से मंडी, ठियोग, चंबा, हमीरपुर, डलहौजी और पालमपुर जैसे 17 नगरों में पेयजल आपूर्ति परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। इनमें से 11 नगरों में पेयजल योजनाओं के कार्य प्रगति पर है और शेष शहरों में वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान कार्य शुरू किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त भुंतर, नाहन, ज्वाली, अर्की, निरमंड, जोगिन्द्रनगर, शाहपुर, भटियात और करसोग में 167 करोड़ रुपये की पेयजल योजनाओं का निर्माण कार्य शुरू किया जाएगा।

प्रदेश सरकार ने राज्य के प्रत्येक जिले के एक क्षेत्र को सप्ताह भर पेयजल आपूर्ति प्रणाली के तहत चिन्हित किया है। इनमें से विभिन्न परियोजनाओं के अन्तर्गत रामपुर और चंबा में भूमिगत जलापूर्ति योजना तथा नालागढ़, घुमारवीं और नादौन में उठाऊ पेयजल आपूर्ति योजना के कार्य प्रगति पर हैं। 23 शहरों में जलापूर्ति योजनाओं के उन्नयन कार्य प्रगति पर हैं। इस वित्त वर्ष नौ परियोजनाओं के कार्य शुरू किए जाएंगे। नेरवा चिड़गांव, कंडाघाट और टाहलीवाल की पेयजल परियोजनाओं के उन्नयन प्रस्ताव तैयार किए जा रहे हैं।

राज्य सरकार ने प्रथम चरण में 80 करोड़ रुपये के व्यय के साथ 200 करोड़ रुपये की मुख्यमंत्री स्वच्छ जल शोधन योजना शुरू करने का निर्णय लिया है। योजना के तहत ओजोनेशन, यूवी फिल्टरेशन, आरओ और नैनो फिल्टरेशन जैसी उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल कर जल शोधन कर लोगों को स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। इससे जल

मुख्यमंत्री स्वच्छ जल शोधन योजना पर खर्च होंगे 200 करोड़

जनित बीमारियों में कमी आएगी और जीवन गुणवत्ता में सुधार होगा।

इसके अतिरिक्त, इस वित्त वर्ष के दौरान कांगड़ा जिला के ज्वालामुखी, जसवां, प्रागपुर और देहरा में 43 करोड़ रुपये की लागत से पेयजल उपचार संयंत्र स्थापित किए जाएंगे। प्रदेश के 10 जिलों में 291 योजनाओं में सेंसर आधारित सिस्टम लगाए जा रहे हैं। पेयजल की शुद्धता की जांच के लिए एक राज्य स्तरीय और 14 जिला स्तरीय एनएबीएल-मान्यता प्राप्त जल परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित की जाएंगी। अब तक प्रदेश में कुल 71 जल परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं।

इसके अलावा हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए हिमऊर्जा के माध्यम से जल आपूर्ति, सीवरेज और सिंचाई योजनाओं में सौर पैनल लगाए जाएंगे।

वर्तमान में प्रदेश के छः नगरों में सीवरेज परियोजनाओं का कार्य प्रगति पर है तथा 2025-26 में पांच और शहरों में नई योजनाएं शुरू की जाएंगी। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 41 सीवरेज योजनाओं को मंजूरी दी गई है और कांगड़ा, मंडी, चंबा और किन्नौर के 14 कस्बों में सीवरेज योजनाओं का कार्य शुरू किया जाएगा।

प्रदेश सरकार के यह प्रयास हर नागरिक को स्वच्छ पानी और बेहतर स्वच्छता उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित कर रहे हैं। सरकार के यह कदम हिमाचल प्रदेश को सतत विकास और जन कल्याण का मॉडल राज्य बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि लोगों की सेहत के साथ किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं होने दी जा सकती और प्रदेश सरकार राज्यभर में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार के अढ़ाई वर्षों में प्रत्येक घर को सीवरेज सुविधा प्रदान करने व प्रदेश को स्वच्छ बनाए रखने के लिए नवोन्मेषी कदम उठाए हैं ताकि स्वच्छ एवं हरित हिमाचल के सपने को साकार किया जा सके।

मुख्यमंत्री से विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों ने की भेंट

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू से गत दिनों शिमला में कंडाघाट क्षेत्र के प्रतिनिधिमंडल, बीएड छात्रों के प्रतिनिधिमंडल, नगर निगम शिमला आजीविका भवन के प्रतिनिधिमंडल और एमबीबीएस व बीडीएस के एसपाइरेन्ट छात्रों के प्रतिनिधिमंडल ने भेंट कर, उन्हें अपनी मांगों से अवगत करवाया। मुख्यमंत्री ने उनकी मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

राज्य सरकार सभी वर्गों के समावेशी विकास व सशक्तीकरण के लिए समर्पित

हिमाचल प्रदेश अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम (एचपीएमएफडीसी) की 53वीं बैठक गत दिनों शिमला में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक के दौरान निगम द्वारा राज्य में अल्पसंख्यक समुदायों के कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं गतिविधियों की समीक्षा की गई। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि विभिन्न जिलों में अल्पसंख्यक समुदायों को निगम की योजनाओं के बारे में जागरूक करने के लिए आयोजित किए गए जागरूकता शिविरों को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है।

एचपीएमएफडीसी अल्पसंख्यक समुदायों को पर्यटन एवं कृषि अथवा कृषि संबंधित गतिविधियों, पारंपरिक व्यवसायों, कारीगरी, तकनीकी या लघु उद्योगों, परिवहन एवं सेवा क्षेत्र हेतु अधिकतम 30 लाख रुपये तक के टर्म लोन की सुविधा प्रदान करता है। निगम द्वारा अधिकतम 20 लाख तक की शिक्षा ऋण सुविधा भी प्रदान की जाती है। साथ ही स्वयं सहायता समूहों को ऋण और मशीनरी एवं उपकरण खरीदने हेतु भी ऋण उपलब्ध कराए जाते हैं। सरकार सभी वर्गों, विशेष रूप से अल्पसंख्यक समुदायों के समावेशी विकास और सशक्तीकरण के लिए विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का सफल क्रियान्वयन कर रही है।

कल्पा में राजीव गांधी खेल परिसर पर व्यय.....

(पृष्ठ एक का शेष)

केंद्र सरकार ने आज तक एक भी पैसा प्रदेश को जारी नहीं किया है। प्रदेश सरकार ने अपने आर्थिक संसाधनों से 4500 करोड़ का विशेष आर्थिक राहत पैकेज जारी कर प्रभावितों को राहत पहुंचाने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार हिमाचल को 2027 तक आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में ठोस प्रयास कर रही है।

श्री सुक्खू ने कहा कि प्रदेश सरकार इस वित्त वर्ष में 25 हजार भर्तियां करने जा रही है। उन्होंने कहा कि सुख आश्रय योजना के तहत अनाथ बच्चों को चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट का दर्जा प्रदान किया गया है। प्रदेश सरकार ऐसे बच्चों की शिक्षा का खर्च भी वहन कर रही है। साथ ही विधवा महिलाओं के बच्चों की शिक्षा का खर्च भी इंदिरा गांधी सुख शिक्षा योजना के तहत सरकार वहन कर रही है। 70 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बुजुर्गों को घर-द्वार चिकित्सा जांच सुनिश्चित बनाने के लिए सरकार जल्द ही एक योजना लेकर आ रही है। उन्होंने कहा चिकित्सा महाविद्यालयों में बेहतर चिकित्सा उपकरण उपलब्ध करवाने के लिए सरकार 100 करोड़ रुपये व्यय कर रही है।

मुख्यमंत्री ने किन्नौर के चार खंडों में सीबीएसई से संबद्ध स्कूल खोलने की भी घोषणा की। उन्होंने खेल परिसर और इंडोर स्टेडियम के लिए 10-10 करोड़ रुपये, देने की घोषणा की।

उन्होंने युवाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए खेलों क्रिकेट टुक्पा क्वीन टीम के 11 सदस्यों को 10-10 हजार रुपये देने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने राजीव गांधी खेल परिसर की आधारशिला रखने के बाद युवाओं के साथ क्रिकेट भी खेला।

इससे पहले उन्होंने जिला प्रशिक्षण संस्थान में पांच महिला मंडलों को सामान खरीदने के लिए एक लाख रुपये देने की घोषणा की। इस दौरान उन्होंने डाइट की वार्षिक पत्रिका नारकसाड का विमोचन भी किया।

राजस्व, बागबानी एवं जन जातीय विकास मंत्री श्री जगत सिंह नेगी ने किन्नौर विधानसभा क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों के उद्घाटन व शिलान्यास करने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में प्रदेश का समग्र विकास सुनिश्चित हुआ है। उन्होंने कहा कि केंद्र की कांग्रेस सरकारों के कारण जनजातीय क्षेत्रों को यह दर्जा मिला तथा इन क्षेत्रों के विकास कार्यों के लिए धन का भी प्रावधान सुनिश्चित किया गया।

किन्नौर जिला के शिपकी-ला.....

(पृष्ठ एक का शेष) भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिसके तहत भारतीय सेना और अर्ध सैनिक बलों के साथ सहयोग पर बल दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि इन कदमों से पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा और स्थानीय अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होगी।

उन्होंने कहा कि लाहौल-स्पीति जिला से किन्नौर को जोड़ने वाली वांगतू-अटरगू-मुद-भावा दर्रा मार्ग को राष्ट्रीय वन्य जीव बोर्ड से मंजूरी मिली है। जिससे इसके निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इस सड़क के बनने से शिमला और काजा के बीच दूरी लगभग 100 किलोमीटर कम हो जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सीमावर्ती सड़कों का केवल सामरिक महत्त्व नहीं है, बल्कि इनका उद्देश्य सीमावर्ती क्षेत्रों में सम्पर्क सुविधा बढ़ाकर लोगों को लाभ प्रदान करना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सीमांत क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने की कार्य योजना के बारे में उन्होंने भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आई.टी.बी.पी.) से चर्चा की है। आई.टी.बी.पी. के स्वास्थ्य संस्थानों के माध्यम से लोगों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। आई.टी.बी.पी. के विभिन्न हेलीपैड को दूर-दराज क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उपयोग में लाए जाने पर भी चर्चा की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें सेना और अर्ध सैनिक बलों के शौर्य पर नाज है। मुख्यमंत्री ने शिपकी-ला में सरहद वन उद्यान का शुभारम्भ भी किया।

उन्होंने इंदिरा प्वाइंट भी दौरा किया।

राजस्व मंत्री श्री जगत सिंह नेगी ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया और सीमा पर्यटन गतिविधियों का शुभारम्भ करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि शिपकी-ला में पर्यटन संबंधी सुविधाएं बढ़ाई जाएंगी। उन्होंने क्षेत्र में हिमाचल पथ परिवहन निगम का ऑन डिमांड बस रूट आरम्भ करने का आग्रह भी किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में क्षेत्र में विकास की गति प्रदान की गई है।

उन्होंने क्षेत्र से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की। ग्राम पंचायत नमग्या के प्रधान बलदेव नेगी ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

इस अवसर पर स्थानीय महिला मंडलों ने आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

शोंगटोंग कड़छम जल विद्युत .....

(पृष्ठ एक का शेष)

श्री सुक्खू ने कहा कि किन्नौर के टापरी में जियो थर्मल पॉवर प्रोजेक्ट स्थापित करने की दिशा में भी प्रदेश सरकार आगे बढ़ रही है। राज्य में सोलर व ग्रीन हाइड्रोजन ऊर्जा उत्पादन कर प्रदेश को बिजली के क्षेत्र में और उन्नत बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सर्दियों में अक्तूबर से मार्च माह तक प्रदेश सरकार 5 से 6 रुपये प्रति यूनिट बिजली खरीद रही है, यह स्थिति तब है जब प्रदेश सरप्लस ऊर्जा राज्य है। इस दौरान सरकार को बिजली न खरीदनी पड़े इसके लिए प्रदेश में सौर उर्जा उत्पादन को अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि एचपीपीसीएल के माध्यम से प्रदेश में लगभग 626 मैगावॉट क्षमता की सौर परियोजनाएं निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं। राज्य सरकार ने प्रदेश को वर्ष 2026 तक हरित ऊर्जा राज्य, 2027 तक आत्मनिर्भर राज्य तथा 2032 तक देश का सबसे समृद्ध एवं सशक्त राज्य बनाने के संकल्प के साथ कार्य आरंभ कर दिया है।

इससे पहले मुख्यमंत्री का चोलिंग हेलीपैड में पहुंचने पर स्थानीय विधायक तथा राजस्व, बागबानी एवं जनजातीय विकास मंत्री श्री जगत सिंह नेगी की अगुवाई में स्थानीय लोगों ने पारंपरिक वाद्ययंत्रों एवं लोक संस्कृति के साथ गर्मजोशी के साथ स्वागत किया।

इस दौरान हिमाचल प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन के महाप्रबंधक आबिद हुसैन सादिक ने शोंगटोग कड़छम जलविद्युत परियोजना में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

आलू का समर्थन मूल्य शीघ्र घोषित.....

(पृष्ठ एक का शेष)

व्यापक पशुपालन एवं चरवाहों को बढ़ावा, पारंपरिक बीज प्रणाली का अधिक उपयोग, जल सुरक्षा और मृदा संरक्षण पर बल आदि ऐसे कदम हैं जिनके माध्यम से हम इन चुनौतियों का मज़बूती से सामना कर सकते हैं। ऐसे पारंपरिक बीज और फसलें हैं जो कि प्राकृतिक खेती से उगती हैं, पोषण से भरपूर होती हैं तथा पानी की आवश्यकता भी कम रखती है।

हमें ऐसी पारंपरिक फसलों को पुनः इस्तेमाल में लाना होगा। इनमें शोध के माध्यम से और सुधार लाना होगा ताकि हम भावी पीढ़ी को पैष्टिक आहार व स्वच्छ पर्यावरण सुनिश्चित कर सकें।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर प्राकृतिक खेती के अनुभवों पर आधारित पुस्तक का विमोचन भी किया। उन्होंने प्राकृतिक खेती से जुड़े प्रदेश के किसानों की सराहना करते हुए सरकार द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों की विस्तार से जानकारी दी।

पद्म श्री नेक राम शर्मा ने मुख्यमंत्री को कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने जल, जंगल, जमीन को बचाने सहित मोटे अनाज के महत्त्व पर भी चर्चा की।

नाम दुरुस्ती

मैं जोगिन्द्र (39) पुत्र मान दास निवासी हड़ाह डा. कांडा बनाह तह. कुपवी जिला शिमला (हि.प्र.) घोषणा करता हूं कि परिवार नकल के अनुसार मेरा नाम जोगिन्द्र है लेकिन आधार कार्ड में मेरा नाम जगत सिंह दर्ज है जो कि गलत है, अतः इसे जोगिन्द्र दुरुस्त किया जाए।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करना....

(पृष्ठ एक का शेष)

पहल की हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती पद्धति के उत्पादों को विशेष अधिमान दिया जा रहा है। प्रदेश के हिम ईरा व अन्य उत्पाद दूसरे प्रदेशों में बहुत लोकप्रिय हुए हैं।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार दूध, प्राकृतिक खेती से उगाए गेहूं, मक्की और हल्दी के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य दिया गया है। महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की बिक्री के लिए ई-कॉमर्स 'हिम-ईरा' वेबसाइट शुरू की गई है। प्राकृतिक खेती कर रहे प्रदेश के एक लाख 58 हजार से अधिक किसानों को प्रमाणित किया गया है।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक तरीके से उगाई गई मक्की का न्यूनतम समर्थन मूल्य 30 रुपये से बढ़ाकर 40 रुपये और गेहूं का 40 रुपये से बढ़ाकर 60 रुपये प्रतिकिलो किया है, जिससे हमारे लाखों किसानों को आर्थिक लाभ मिल रहा है।

प्रदेश में पहली बार प्राकृतिक हल्दी का उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार कच्ची हल्दी 90 रुपये प्रतिकिलो की दर से खरीदने जा रही है, जिसे हिमाचली हल्दी के नाम से बढ़ावा दिया जाएगा।

डाक पंजीकरण संख्या : एच.पी./42/एस.एम.एल. 2024-2026 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

आत्मनिर्भर हिमाचल के लिए मजबूत ग्रामीण आर्थिकी सर्वोच्च प्राथमिकता: ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू

प्राकृतिक खेती से चरणबद्ध तरीके से 9.61 लाख किसानों को जोड़ने का लक्ष्य

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा है कि राज्य सरकार हिमाचल प्रदेश को आत्मनिर्भर और समृद्ध राज्य बनाने के संकल्प के साथ कार्य कर रही है, जिसके लिए पिछले अढ़ाई वर्षों के दौरान विभिन्न प्रभावी कदम उठाए गए हैं। उन्होंने कहा कि यह सपना केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करके ही साकार किया जा सकता है क्योंकि हिमाचल की 80 प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि और बागवानी पर निर्भर है। इसलिए कृषक समुदाय की आर्थिकी को मजबूत करना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्राकृतिक खेती से उत्पन्न जैविक उत्पादों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान करने वाला देश का पहला राज्य बन गया है। प्रदेश सरकार ने मक्की की खरीद पर एमएसपी दो बार बढ़ाई है। पहली बार एमएसपी 30 रुपये और उसके बाद 40 रुपये प्रति किलोग्राम निर्धारित की गई। इसी प्रकार गेहूं की खरीद पर एमएसपी पहले 40 रुपये और उसके बाद बढ़ाकर 60 रुपये प्रति किलोग्राम की है। इसके अलावा, कच्ची हल्दी के उत्पादन को बढ़ाने के लिए सरकार 90 रुपये प्रति किलोग्राम का एमएसपी प्रदान कर रही है। राज्य सरकार ने हिम-भोग हिम-मक्की ब्रांड नाम से प्राकृतिक खेती से उत्पादित मक्की का आटा उपलब्ध करवाया है। यह उत्पाद सतत कृषि और किसानों को सशक्त बनाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। लाहौल-स्पीति और किन्नौर को छोड़कर राज्य के 10 जिलों में प्राकृतिक खेती करने वाले 1590 किसान परिवारों से 4,000 क्विंटल से अधिक मक्की की खरीद की गई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में आलू का उत्पादन बढ़ाने के लिए ऊना जिले में लगभग 20 करोड़ रुपये की लागत से आलू प्रसंस्करण प्लांट स्थापित करने का निर्णय लिया गया है। इसके अलावा, प्रदेश में उत्पादित मसालों को नई पहचान दिलाने के लिए हमीरपुर जिले में स्पाइस पार्क विकसित करने की योजना भी तैयार की गई है। श्री सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से हिम-भोग हिम-मक्की का आटा उपलब्ध करवाया है। हिम-भोग हिम-मक्की आटा सरकार द्वारा प्राधिकृत पोर्टल हिम-ईरा पर भी बिक्री के लिए उपलब्ध है। इस पहल का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण दोनों आबादी के लिए प्राकृतिक रूप से उगाई गई मक्की का आटा सुलभ उपलब्ध करवाना है। उन्होंने कहा कि लगभग 400 मीट्रिक टन मक्की की खरीद के लिए 1.20 करोड़ रुपये सीधे किसानों के बैंक खातों में स्थानांतरित किए गए हैं। इस वित्त वर्ष से सरकार ने कच्ची हल्दी के लिए एमएसपी प्रदान करने का निर्णय लिया है जिसे 'हिमाचल हल्दी' ब्रांड नाम से प्रसंस्करण और विपणन किया जाएगा। प्रदेश सरकार ने चरणबद्ध तरीके से 9.61 लाख किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य रखा है। सरकार ने किसानों के लिए अतिरिक्त आय सृजन के विकल्प तलाशने, उनकी उपज का उचित मूल्य सुनिश्चित करने, गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध करवाने, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार और सुदृढ़ीकरण, फसल बीमा प्रदान करने, प्रशिक्षण प्रदान करने और कृषि अनुसंधान को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया है।

हिमाचल प्राकृतिक खेती से उत्पन्न जैविक उत्पादों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान करने वाला देश का पहला राज्य

मुख्यमंत्री ने की कांगड़ा ज़िला के निर्माणाधीन व प्रस्तावित परियोजनाओं के कार्यों की समीक्षा

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू धर्मशाला में ज़िला कांगड़ा की विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं की समीक्षा करते हुए

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने गत दिनों ज़िला कांगड़ा के धर्मशाला व विभिन्न उपमंडलों में निर्माणाधीन व प्रस्तावित परियोजनाओं के कार्य की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने धर्मशाला में एकता मॉल (पीएम यूनिटी मॉल) के निर्माण से संबंधित विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी ली।

उन्होंने कहा कि 'एक ज़िला-एक उत्पाद' महत्त्वाकांक्षी पहल है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक ज़िले में एक विशिष्ट उत्पाद को बढ़ावा देना है। योजना क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने, रोज़गार के अवसर सृजित करने, स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि ज़िला कांगड़ा में सभी परियोजनाओं के निर्माण के लिए भूमि हस्तांतरण व वन से संबंधित स्वीकृतियों का कार्य शीघ्र पूर्ण किया जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में आतिथ्य क्षेत्र में निवेश की अपार संभावनाएं हैं। इससे रोज़गार व स्वरोज़गार के अवसर भी सृजित होंगे और क्षेत्र की आर्थिकी भी सुदृढ़ होगी। मुख्यमंत्री ने कांगड़ा ज़िला के विभिन्न उप-मंडलों में निर्माणाधीन व प्रस्तावित परियोजनाओं की समीक्षा भी की।

बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव लोक निर्माण आर.डी. नजीम, निदेशक उद्योग डॉ. युनुस सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे, जबकि उपायुक्त कांगड़ा हेमराज बैरवा वर्चुअल माध्यम से बैठक में शामिल हुए।

हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों को दें बढ़ावा

राज्य हस्तशिल्प और हथकरघा निगम के निदेशक मंडल की 194वीं बैठक

हिमाचल प्रदेश राज्य हस्तशिल्प और हथकरघा निगम लिमिटेड के निदेशक मंडल की 194वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान ने गत दिनों अधिकारियों को राज्य के हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों का एक प्रचार वीडियो तैयार करने के निर्देश दिए। इसका उद्देश्य राज्य के हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों को बड़े स्तर पर बढ़ावा देना है। प्रचार वीडियो को सोशल मीडिया और अन्य नेटवर्क पर अपलोड किया जाएगा। उद्योग मंत्री ने राज्य के कारीगरों और बुनकरों को लाभान्वित करने के लिए निगम द्वारा उठाए गए कदमों की सराहना की और निर्देश दिए कि निगम की योजनाओं और कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाया जाए। उन्होंने कहा कि विलुप्त होने के कगार पर पहुंची इस कला का प्रशिक्षण आयोजित किया जाना चाहिए ताकि राज्य हथकरघा और हस्तशिल्प की विरासत को संरक्षित किया जा सके। उन्होंने प्रदेश के हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों की बिक्री के लिए चंडीगढ़ में शो-विंडो-कम-सेल काउंटर खोलने की संभावना तलाशने के निर्देश दिए। निगम 23.38 करोड़ रुपये की केंद्र प्रायोजित परियोजना, व्यापक हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना (सीएचसीडीएस), को क्रियान्वित कर रहा है, जिसकी अवधि तीन वर्ष है। वर्ष 2023-24 के दौरान निगम ने 420 कारीगरों को लाभान्वित किया और 340 कारीगरों को उन्नत टूल किट वितरित किए। वर्ष 2024-25 के दौरान निगम ने 840 कारीगरों और बुनकरों को लाभान्वित किया और उन्हें उन्नत टूल किट वितरित किए। दिल्ली, धर्मशाला और मनाली में तीन एम्पोरियम का नवीनीकरण कार्य पूरा हो चुका है और तीन अन्य एम्पोरियम, जिसमें चंबा में दो और शिमला में एक एम्पोरियम शामिल है, का नवीनीकरण कार्य प्रगति पर है।

हिपा और जीआईज़ी में समझौता ज्ञापन

संगठनात्मक सहयोग की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण क़दम उठाते हुए गत दिनों शिमला स्थित डॉ. मनमोहन सिंह हिमाचल प्रदेश लोक प्रशासन संस्थान और ड्यूश गेसेलशाफ्ट फर इंटरनेशनल जुसामेनारबीट (जीआईज़ी), भारत ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। सचिवालय में आयोजित एक औपचारिक समारोह में हिपा की निदेशक रूपाली ठाकुर की उपस्थिति में सचिव (प्रशिक्षण और विदेशी असाइनमेंट) सी. पालरासू और जीआईज़ी इंडिया की ओर से राजीव अहल द्वारा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य 'समृद्ध हिमाचल-2045' के लिए सहयोग करना और 20 वर्षीय विजन दस्तावेज़ तैयार करना है।

फिन्ना सिंह सिंचाई परियोजना के लिए 55.51 करोड़ जारी: उप-मुख्यमंत्री

राज्य सरकार ने केंद्र के समक्ष मजबूती से रखा पक्ष

कांगड़ा ज़िला की बहु-प्रतीक्षित फिन्ना सिंह सिंचाई परियोजना के लिए केंद्र सरकार ने 55.51 करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत और जारी कर दी है। यह स्वीकृति प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम (एआईबीपी) के तहत दी गई है।

यह स्वीकृति उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की केंद्रीय मंत्रियों और संबंधित विभागों के साथ निरंतर वार्ता का प्रतिफल है। सरकार के गठन के पश्चात उप-मुख्यमंत्री ने परियोजना के लंबित मामलों को प्राथमिकता दी और केंद्र के समक्ष मजबूत पक्ष रखा। यह परियोजना पिछले एक दशक से अधर में लटकी हुई थी, लेकिन अब यह कांगड़ा जिले के किसानों के लिए आशा की नई किरण बनकर सामने आई है। इस योजना के पूर्ण होने से हजारों हेक्टेयर भूमि को सिंचाई सुविधा मिलेगी, जिससे क्षेत्र की कृषि उत्पादकता में भारी वृद्धि होगी।

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि यह स्वीकृति किसानों के भविष्य को संवारने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हमारी सरकार हर किसान को पर्याप्त सिंचाई सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

आबकारी विभाग ने की 5438.771 बल्क लीटर अवैध शराब बरामद

आबकारी विभाग के अधिकारियों ने इस वित्त वर्ष में अवैध शराब से संबंधित कुल 103 मामले दर्ज किए जिसमें 5438.771 बल्क लीटर अवैध शराब राज्य के विभिन्न जिलों से बरामद की गई तथा 18743 लीटर लाहन भी नष्ट की गई है। आबकारी विभाग द्वारा अवैध शराब पर अंकुश लगाने के लिए मुख्यालय स्तर पर विशेष टीमों का गठन किया गया है। इस दल के अधिकारियों द्वारा सोलन में एक संयत्र (बॉटलिंग प्लांट) में छापा मारा गया तथा निरीक्षण के दौरान ईएनए के स्टॉक में भारी कमी पाई गई। इसके अतिरिक्त संयत्र से अवैध होलोग्राम तथा लेबल भी बरामद हुए। विभाग द्वारा इस मामले में एफआईआर दर्ज करवा दी गई है। संयत्र में पाई गई अनियमितताओं के लिए विभाग द्वारा हिमाचल प्रदेश आबकारी अधिनियम के तहत नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है। इसके अतिरिक्त विभाग ने एक अन्य मामले में भी ऐसी ही कार्रवाई अमल में लाई थी जिसके अन्तर्गत जिला सिरमौर में स्थित एक संयत्र का निरीक्षण किया गया। विभागीय टीम द्वारा पाया गया कि लाइसेंस धारक रात के समय अवैध रूप से शराब का निर्माण कर रहा था। इसके अतिरिक्त उक्त संयत्र से अवैध होलोग्राम और लैबल भी बरामद हुए। संयत्र में मौजूद स्प्रिट व शराब के स्टॉक में भी भारी भिन्नता पाई गई। विभाग द्वारा लाईसैंसी के विरुद्ध एफआईआर दर्ज करवाई गई तथा विभाग द्वारा हिमाचल प्रदेश आबकारी अधिनियम के तहत नियमानुसार कार्रवाई अमल में लाई जा रही है। पिछले कुछ समय से अवैध शराब के विरुद्ध पूरे राज्य में विभागीय टीमों द्वारा सघन अभियान चलाया जा रहा है। जिला चम्बा में चण्डीगढ़ से लाई गई अंग्रजी शराब तथा जिला ऊना और बिलासपुर में अवैध बीयर पकड़ी गई।

अगले वर्ष से सेब पेटियों की संख्या की अनुमानित गणना वैज्ञानिक पद्धति से होगी: बागबानी मंत्री

राजस्व, बागबानी, जनजातीय विकास एवं जनशिकायत निवारण मंत्री जगत सिंह नेगी ने गत दिनों आगामी सेब सीजन की तैयारियों के लिए हितधारकों के साथ बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि इस वर्ष सेब पेटियों की संख्या की अनुमानित गणना प्रस्तुत नहीं की जाएगी। इससे बाज़ार पर दुष्प्रभाव पड़ता है और बागबानों को नुकसान उठाना पड़ता है।

उन्होंने कहा कि अगले वर्ष से सेब पेटियों की संख्या की अनुमानित गणना वैज्ञानिक पद्धति से की जाएगी। बैठक में विभिन्न मामलों पर चर्चा हुई और सेब सीजन के दौरान पेश आने वाली चुनौतियों और समस्याओं के समाधान के लिए विस्तृत मंथन हुआ। इस प्रक्रिया में संभावित समाधानों के बारे में गहराई से विचार किया गया और व्यापक दृष्टिकोण से समस्याओं का विश्लेषण किया गया।

बैठक में दो सब कमेटी बनाने का निर्णय भी लिया गया। इसके तहत एपीएमसी एक्ट-2005 को सख्ती से लागू करने का प्रावधान होगा। वहीं दूसरी सब कमेटी में एसआईटी गठित करने, उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने, नर्सरी के विकास और उच्चस्तरीय अनुसंधान, विभिन्न हितधारकों की समस्याओं के समाधान करने पर ध्यान केंद्रित रहेगा। इसके साथ बड़े सीए स्टोर बनाने की बजाय छोटे सीए स्टोर का निर्माण करने पर सहमति बनी। इसके अंतर्गत ऑटोमैटिक ग्रेडिंग सॉर्टिंग मशीन स्थापित की जाएंगी जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा में प्रदेश के सेब की मांग बढ़ेगी। छोटे आकार के सीए स्टोर का निर्माण करने से स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा और उनकी सेब की फसल को सीए स्टोर में भी रखा जा सकेगा। इससे हर गांव में सीए स्टोर बनाए जा सकेंगे और बागबानों को भी पूरी सुविधा मिलेगी और उन्हें फसल के अच्छे दाम भी मिलेंगे। बागबानी मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मार्केट यार्ड के बाहर सेब कारोबारियों के लाइसेंस का डिजिटल डिस्पले सुनिश्चित किया जाए और इसका उल्लंघन करने वालों के चालान किए जाएं। उन्होंने कहा कि सेब का वजन यूनिवर्सल कार्टन में ही होगा और 22 किलोग्राम से ज्यादा वजन पाए जाने पर माल ज़ब्त कर चालान किया जाए। उन्होंने यूरोप की तर्ज पर बागबानों को को-आपरेटिव सोसायटी के गठन के जरिए अपनी फसल आढ़तियों को बेचने का सुझाव भी दिया। जगत सिंह नेगी ने कहा कि आगामी सेब सीजन के दौरान सभी विभाग मिलकर बेहतर समन्वय से कार्य करें। जिला प्रशासन, पुलिस, लोक निर्माण विभाग और सभी एपीएमसी के अध्यक्ष भी इसमें अपना अहम योगदान दें।

उन्होंने कहा कि सेब सीजन में यातायात सुचारू बनाए रखने के लिए एक बेहतर पुलिस मानक संचालन प्रक्रिया बनाई जाए ताकि बागबानों को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़े।

सेब सीजन की तैयारियों के मद्देनजर हितधारकों के साथ बैठक

प्रकाशक एवं प्रधान सम्पादकः राजीव कुमार, एच.ए.एस., निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः प्रभा राजीव, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830381—PBX.A29., वरिष्ठ सम्पादक : डॉ. राजेश शर्मा, सम्पादकः रीना नेगी
कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोनः 2633145 व फैक्सः 2830374, ई-मेलः girirajhp@gmail.com. प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)